नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 263, नई दिल्ली, शनिवार 29 नवम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

संघर्ष में कभी हार नहीं माननी चाहिए क्योंकि जीवन हमें हमेशा एक और मौका देता है।

03 क्या आप अपने गोत्र की असली शक्ति को जानते हैं?

06 बच्चों के साहित्य विकास पत्रिकाओं की स्थायी आवश्यकता

08 FICCI FLO अमृतसर का "डिकोड योर डेस्टिनी" कार्यक्रम, जीवन संतुलन और सेवा...

दस्तावेज़ में नाम अलग-अलग? मैच्युरिटी के समय असली मुसीबत तभी शुरू होती है!

कही आपके दस्तावेजों में भी तो आपका नाम अलग अलग तो नहीं है, अगर है तो यह लेख आपके लिए विशेष है

संजय बाटला

क्या आपने कभी सोचा हैं कि आपकी एलआईसी पॉलिसी, बैंक पासबुक, आधार कार्ड, पैन कार्ड —इन सभी पर आपका नाम एक जैसा लिखा है या नहीं?

अगर नहीं सोचा, तो यह सवाल अभी से सोचिए क्योंकि पॉलिसी लेते समय तो कोई नहीं पूछता, मुसीबत तो पैसे मिलने के समय आती हैं।

आज लाखों लोगों के साथ यही समस्या है—कहीं नाम में "कुमार" जोड़ा हुआ, कहीं "तिवारी" हट गया, कहीं पिता का नाम पूरा हैं और कहीं आधा; कहीं middle name है, कहीं नहीं।

और लोग पूछते हैं—"अब सालों बाद यह सब ठीक कराने को क्यों बोल रहे हैं?"

जवाब बहुत साफ़ है—

जब पैसा जमा करते हैं, पहचान की जरूरत नहीं होती।

जब पैसा निकालते हैं, असली पहचान तभी चेक होती हैं।

सोचिए—आप बैंक में नकद जमा करने जाते हैं, कोई पहचान नहीं पूछेगा।

लेकिन 50,000 रुपये भी निकालते हैं तो बैंक पूछता है—

"आप ही हैं? आपका केवाईसी अपडेट है? दस्तावेज़ एक समान हैं?"

एलआईसी, बैंक और निवेश सब जगह नियम यही है—

पैसा सही व्यक्ति के हाथ में जाए, इसलिए नाम मैच होना जरूरी है।

अब बड़ा सवाल—

जब आपने एलआईसी पॉलिसी ली थी, तब एजेंट ने नाम की गलती क्यों नहीं बताई?

क्योंकि उस समय कागज़ी फॉर्म चलता था, कंप्यूटर सिस्टम नहीं।

जहाँ गलती पकड़ता कौन? न एजेंट, न आप। सब चलता था!

लेकिन आज—

सारा सिस्टम कम्प्यूटरीकृत है, payment ऑटोमेटिक बैंक खाते में जाता है।

अब नाम mismatch होगा तो सिस्टम पैसा भेजेगा ही नहीं।

अब सोचिए—

अगर एलआईसी का 10 लाख, 20 लाख या 50 लाख का maturity amount

आपके बैंक में जाना है,

और बैंक में आपका नाम अलग है,

तो पैसा कहाँ जाएगा?

कौन लेगा जिम्मेदारी?

लोग कहते हैं—"गलती बैंक वालों की है।"

सवाल है—गलती बैंक वालों की हो या आपकी

दस्तावेज़ तो आपके हैं, सुधार कौन कराएगा?

यही बात ऐसे समझिए:

आप मुलुंड स्टेशन पर टिकट खिड़की पर खड़े हुए और बोले—"सीएसटी का टिकट देना।"

क्लर्क ने गलती से आपको टिटवाला का टिकट थमा दिया।

आपने देखा ही नहीं, जेब में डाल लिया।

घाटकोपर में टिकट चेकर ने पकड़ा—

अब बताइए

गलती आपकी हैं या टिकट देने वाले की?

बिलकुल यही स्थिति पॉलिसी, बैंक, आधार-पैन में नाम mismatch होने पर होती है।

आज जितनी आसानी से आप प्रीमियम भरते हैं, उतनी आसानी से maturity नहीं मिलेगी

अगर दस्तावेज़ एक समान नहीं हुए।

तो क्या करना चाहिए?

*** सभी दस्तावेज़ों पर नाम एक जैसा रखें—आधार जैसा या पैन जैसा।**

* बैंक खाते में तुरंत अपडेट करवाएँ—यह सबसे ज़रूरी है।

* एलआईसी में नाम, नॉमिनी, जन्मतिथि—सभी जानकारी सही करे।

* आज ही जाँचें—कल की दौड़भाग और परेशानी से बचेंगे।

क्योंकि याद रखिए—

बीमा लेना आसान है,

लेकिन पैसा पाना तभी आसान है,

जब दस्तावेज़ एक समान हो।

आज दस्तावेजों को सुधारेंगे, तो कल आपके परिवार को कुछ साबित नहीं करना पड़ेगा और maturity बिना रुकावट घर आएगी।

"ओला उबर रैपीडो भागो, भारत टैक्सी को लो – स्वदेशी अपनाओ!"

परिवहन विशेष न्यूज

आज दिल्ली–एनसीआर के हजारों ड्राइवरों ने जंतर-मंतर पर एकजुट होकर शांतिपूर्ण लेकिन प्रभावशाली विरोध प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन उन बढ़ते शोषण, मनमानी नीतियों और असमान किराया–वितरण के खिलाफ था, जिसका सामना लंबे समय से क्षेत्र के ड्राइवर कर रहे हैं। ड्राइवरों ने स्पष्ट संदेश दिया—

"ओला उबर रैपीडो भागो, भारत टैक्सी को लवो – स्वदेशी अपनाओ!"

प्रदर्शन में शामिल ड्राइवरों का कहना है कि विदेशी कंपनियों द्वारा लागू की गई नीतियाँ चालक समुदाय के हितों के विपरीत हैं। कम कमाई, उच्च कमीशन, सुरक्षा की कमी और मनमाने नियमों के कारण ड्राइवर लगातार आर्थिक और मानसिक दबाव झेल रहे हैं। इसी के विरोध में आज हजारों ड्राइवर सड़कों पर उतरकर अपनी आवाज बुलंद करने पर मजबूर हुए।

मुख्य मांगें:

1. ड्राइवरों को उचित और सम्मानजनक किराए की गारंटी मिले।

2. कमीशन में कटौती कर ड्राइवर का हिस्सा बढ़ाया जाए।

3. चालक सुरक्षा के लिए मजबूत और पारदर्शी व्यवस्था लागू की जाए।

4. स्वदेशी मॉडल भारत टैक्सी को प्रोत्साहन देकर ड्राइवर-हितैषी प्लेटफ़ॉर्म को बढ़ावा दिया जाए।

ड्राइवरों ने कहा कि "भारत टैक्सी लो – स्वदेशी अपनाओ" केवल नारा नहीं, बल्कि ड्राइवरों के स्वाभिमान और अधिकारों की लड़ाई है। यह आंदोलन आगामी दिनों में और व्यापक रूप ले सकता है, जब तक कि सरकार और संबंधित कंपनियाँ ड्राइवरों की समस्याओं का समाधान नहीं करतीं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू महासचिव,

कानपुर के तीन डॉक्टरों को कंबोडिया से जुड़े साइबर अपराधियों ने एक फर्जी शेयर ट्रेडिंग घोटाले में ₹5.7 करोड़ का नुकसान पहुँचाया। धोखेबाज़ों ने एक नकली ऐप के ज़रिए, जो खुद को एक प्रतिष्ठित ट्रेडिंग कंपनी बताता था, पीड़ितों को झूठे मुनाफ़े दिखाकर भरोसा दिलाया और फिर पैसे निकालने के लिए 30% जमा राशि की मांग की। यह मामला दर्शाता है कि शिक्षित पेशेवर भी जटिल वित्तीय धोखाधड़ी का शिकार हो सकते हैं।

केस ओवरव्यू

• पीड़ितः तीन डॉक्टर

• मोडस ऑपरेंडीः

o धोखेबाज़ों ने नकली ट्रेडिंग ऐप का लिंक भेजा।

o ऐप पर झूठे मुनाफ़े दिखाए गए ताकि निवेश जारी रहे।

o पैसे निकालने पर 30% जमा राशि की मांग की गई।

o असली कंपनी ने किसी भी संबंध से इनकार किया, जिससे धोखाधड़ी उजागर हुई।

• **जाँचः** साइबर सेल ने आईपी एड्रेस कंबोडिया से जुड़े पाए; एफआईआर दर्ज; NCRP को शामिल किया गया।

प्रमुख जोखिम

• **ब्रांड पर भरोसाः** डॉक्टरों ने ऐप को वैध माना क्योंकि यह प्रतिष्ठित कंपनी का नाम इस्तेमाल कर रहा था।

• **सत्यापन की कमीः** निवेश से पहले स्वतंत्र जाँच नहीं की गई।

• **मनोवैज्ञानिक चालः** दिखाए गए "मुनाफ़े" ने झूठी सुरक्षा का भाव पैदा किया।

• **सीमा-पार साइबर अपराधः** अपराधी भारत से बाहर संचालित हो रहे थे, जिससे कार्रवाई कठिन हुई।

सुझाए गए उपाय, पेशेवरों और नागरिकों के लिए

• **प्लेटफ़ॉर्म सत्यापित करें:** केवल SEBI-पंजीकृत ब्रोकर और आधिकारिक ऐप (Google Play, Apple App Store) का उपयोग करें।

• **अनचाहे लिंक से बचें:** SMS, WhatsApp या ईमेल से आए ट्रेडिंग/निवेश लिंक पर कभी क्लिक न करें।

• **कंपनी विवरण जाँचें:** SEBI/NSE/BSE वेबसाइट पर कंपनी की जानकारी क्रॉस-चेक करें।

• **निकासी शर्तों से सावधान रहें:** पैसे निकालने के लिए अग्रिम जमा की मांग धोखाधड़ी का संकेत है।

• **विशेषज्ञ सलाह लें:** बड़े निवेश से पहले प्रमाणित वित्तीय सलाहकार से परामर्श करें।

संस्थानों और नियामकों के लिए

• **जागरूकता अभियान:** डॉक्टरों, वकीलों, इंजीनियरों जैसे पेशेवरों को लक्षित करें जिनके पास अतिरिक्त आय है पर वित्तीय साक्षरता सीमित है।

• **अनिवार्य चेतावनी:** बैंक और ब्रोकर आम धोखाधड़ी पर अलर्ट जारी करें।

• **सीमा-पार सहयोग:** अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध इकाइयों के साथ सहयोग मज़बूत करें।

• **त्वरित रिपोर्टिंग:** राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (NCRP) के उपयोग को बढ़ावा दें।

कानून प्रवर्तन के लिए

• **तकनीकी निगरानी:** नकली वित्तीय ऐप की पहचान और रोकथाम को मज़बूत करें।

• **प्रशिक्षण कार्यक्रम:** अधिकारियों को सीमा-पार वित्तीय साइबर धोखाधड़ी की जाँच के लिए प्रशिक्षित करें।

• **पीड़ित सहायता:** धोखाधड़ी के शिकार पेशेवरों को परामर्श और कानूनी मार्गदर्शन दें।

यह मामला दर्शाता है कि शिक्षा या पेशेवर स्थिति साइबर धोखाधड़ी से सुरक्षा की गारंटी नहीं देती। अपराधी भरोसे और तात्कालिकता का लाभ उठाते हैं। इसलिए सत्यापन, जागरूकता और संस्थागत सुरक्षा उपाय अत्यंत आवश्यक हैं। नागरिक सतर्कता, नियामक निगरानी और कानून प्रवर्तन का संयुक्त प्रयास ही ऐसे घोटालों को रोक सकता है।

व्यावहारिक नागरिक सुरक्षा उपाय

• STOP – अज्ञात लिंक पर क्लिक करने से पहले रुकें।

• CHECK – कंपनी का SEBI/RBI पंजीकरण देखें।

• CALL – केवल आधिकारिक ग्राहक सेवा नंबर पर कॉल करें (व्हाट्सएप नहीं)।

• REPORT – संदिग्ध लगे तो तुरंत 1930 पर रिपोर्ट करें।

सरकार चाहे तो क्या नहीं कर सकती!! फिर भी प्रदूषण ?

पिंकी कुंडू महासचिव,

आज दिल्ली में जो हाल है..वैसे ही हालात चाइना के beijing में देखने को मिले 2013 में...वहां का AQI 993 तक पहुंच गया..

Thick smoke के चलते विजिबिलिटी 100 मीटर से भी कम हो गई..100 से ज़्यादा फ्लाइट्स cancel हुई और श्वास की तकलीफ वाले दर्दी से हॉस्पिटल्स भर गए...

पूरी दुनिया में ये क्राइसिस "Airpocalypse" के नाम से जानी गई..पब्लिक का गुस्सा और इंटरनेशनल शर्मिंदगी के बाद फाइनली चाइनीज़ सरकार ने लॉन्च किया.."clean air action plan"

इनका सबसे बड़ा कारण था Coal जिसे dirtiest fuel भी कहा जाता है...अगले कुछ टाइम में बीजिंग ने अपने सारे coal based power plant को Gas fired power plants से रिप्लेस कर दिया...

Even लाखों घरों में coal powered heating systems को electric या natural gas heating system se बदल दिया..

वाहनों के पॉल्यूशन को कम करने के लिए 2022 तक 783 km के subway ट्रैक्स बिछा दिए...जो पूरे वर्ल्ड का one of the longest मेट्रो रेल नेटवर्क बन गया...

पेट्रोलियम बसों को 12,000 इलेक्ट्रिक बसों से रिप्लेस किया गया...और EV cars को प्रमोट करने के लिए heavy सब्सिडी भी दी गई।

2017 तक 2000 से ज़्यादा highly polluting factories को बंद कर दिया गया और बाकी फैक्ट्रीज की चिमनी में advance cleaners और स्क्रबर्स लगा दिए..जो धुएं की toxic gases और सूक्ष्म कण को filter out करके साफ कर देते थे।

इसके अलावा उन्होंने 35 high grade Air Quality Monitoring Stations और 2000 से ज़्यादा PM मॉनिटरिंग सेंसर्स भी लगाए जिससे किसी भी एरिया में कोई पॉल्यूशन का रूल तोड़ता था तो तुरंत पता चल जाता था और सभी सरकारी अफसर की प्रमोशन अब उनके एरिया के air Quality Targets पूरे करने पर तय की जाने लगी। जिसके चलते आज बीजिंग का AQI 77 है और लोग चैन की सांस ले पा रहे हैं।

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ
भाजपा दिल्ली प्रदेश,
सदस्य उज्जवला योजना
भाजपा दिल्ली प्रदेश

अन्न का आदर / अनादर बना देता है घर का भाग्य, जानें कैसे ?

भारतीय संस्कृति में भोजन को देवत्व का स्थान दिया गया है।

शास्त्र अनुसार ₹अन्न ब्रह्मर माना गया है। इसलिए भोजन का सम्मान; घर में समृद्धि, सौभाग्य और सकारात्मक ऊर्जा का आधार है।

परन्तु कई बार दैनिक व्यवहार अनजाने में ही समृद्धि के मार्ग में बाधक बन जाती हैं।

अन्न का अनादर-समृद्धि में बड़ी बाधा सबसे पहली और साधारण त्रुटि है, भोजन का अनादर करना। कई व्यक्ति आवश्यकता से अधिक खाना लेकर उसे अधूरा छोड़ देते हैं। अन्न का अपमान लक्ष्मी जी के क्रोधित होने का कारण माना गया है। इसलिए जितनी भूख हो उतना ही अन्न ग्रहण करना शुभ माना गया है।

भोजन का वातावरण-शांति हो तो ऊर्जा बनेगी शुभ दूसरी महत्वपूर्ण बात है कि भोजन करते समय का वातावरण। गुस्सा, शिकायत, रोना या विवाद भोजन की ऊर्जा को दूषित कर देते हैं। माना जाता है कि नकारात्मक वातावरण में ग्रहण किया गया भोजन मन और शरीर दोनों को असंतुलित करता है. इसलिए भोजन के समय शांति और कृतज्ञता का भाव बनाए रखना आवश्यक है।

रसोई की स्वच्छता-धन और शुभता का मुख्य आधार रसोई की गंदगी घर की समृद्धि को रोकती है। रसोई को माता अन्नपूर्णा का स्थान माना जाता है। गंदा स्टोव, बिखरे बर्तन या अव्यवस्थित रसोई आर्थिक प्रगति में बाधा उत्पन्न कर सकती है। साफ-सुथरी रसोई को शुभता और धन वृद्धि का प्रतीक माना गया है।

बासी भोजन से बढ़ती है नकारात्मक ऊर्जा अधिकतर लोग रात का बचा भोजन दोबारा गर्म कर खाते हैं, परन्तु बासी भोजन घर में आलस्य और नकारात्मक ऊर्जा बढ़ाता है। वहीं चलते-फिरते या खड़े होकर भोजन करना भी अशुभ परिणाम दे सकता है। भोजन सदैव बैठकर, ध्यानपूर्वक और सम्मान के साथ ग्रहण करना चाहिए।

छोटी आदतें, बड़ा बदलाव इन सरल आदतों में बदलाव से न केवल स्वास्थ्य सुधरता है, बल्कि जीवन में सकारात्मकता और समृद्धि भी बढ़ती है।

बढ़ती उम्र में इन्हें छोड़ दीजिए।।

एक दो बार समझाने से यदि कोई नहीं समझ रहा है तो सामने वाले को समझाना,
छोड़ दीजिए
बच्चे बड़े होने पर वो ख़ुद के निर्णय लेने लगे तो उनके पीछे लगना,
छोड़ दीजिए।
गिने चुने लोगों से अपने विचार मिलते हैं, यदि एक दो से नहीं मिलते तो उन्हें,
छोड़ दीजिए।
एक उम्र के बाद कोई आपको न पूछे या कोई पीठ पीछे आपके बारे में गलत कह रहा है तो दिल पर लेना,
छोड़ दीजिए।
अपने हाथ कुछ नहीं, ये अनुभव आने पर भविष्य की चिंता करना,
छोड़ दीजिए।
यदि इच्छा और क्षमता में बहुत फर्क पड़ रहा है तो खुद से अपेक्षा करना,
छोड़ दीजिए।
हर किसी का पद, कद, मद, सब अलग है इसलिए तुलना करना,
छोड़ दीजिए।
बढ़ती उम्र में जीवन का आनंद लीजिए, रोज जमा खर्च की चिंता करना,
छोड़ दीजिए।

उम्मीदें होंगी तो सदमे भी बहुत होंगे, यदि सुकून से रहना है तो उम्मीदें करना,
छोड दीजिए।

एकांत का सुख

मनुष्य की मूल प्रवृत्ति नितांत एकाकी स्वरूप की हैं। वह एक स्वतंत्र शरीर और स्वतंत्र मन के साथ अकेला जन्म लेता है और अंत में अकेला ही परलोक को प्रस्थान करता हैं।

जुड़वां संतानों का स्वभाव, आचरण और अंतकाल भी भिन्न- भिन्न होता है। किसी की आंखों की पुतलियों और अंगुलियों की छाप अन्य व्यक्ति से मेल नहीं खाती ।

मनुष्य प्रकृति की उत्कृष्ट एवं अदभुत रचना है। दूसरों के सान्निध्य में उसे अपनी मूल सहजता और सदाचरण को क्षीण नहीं होने देना चाहिए। निःसंदेह, मेल-जोल के बिना गुजारा नहीं है। अपनी संवेदनाएं, सुख-दुख और पीड़ा मनुष्य कहीं तो साझा करेगा, किंतु उत्कृष्ट मार्ग के कुछ आयाम एकल ही संपन्न करने होंगे।

प्रेम और मित्रता के तानेबाने से निर्मित भ्रमजाल में जीते हुए हम प्रायः मनुष्य की एकाकी प्रवृत्ति की अनदेखी करते हैं।

स्वयं को प्रभु या उच्चतर शक्ति पुंज का अभिन्न अंग मानने वाला अनेक प्रतिरोधी शक्तियों से निपटने में सक्षम हो जाता है। औचित्य और सदाचार की अनुपालना में लोक मान्यता न मिलने पर वह विचलित नहीं होता, अपितु अपनी राह पर अविरल प्रशस्त होता रहता है। वह जानता है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में ब्रह्मांड है, अतः सांसारिक मर्यादा की अपेक्षा अंतरात्मा की सुनना श्रेयस्कर है।

एकांत का अर्थ समाज से विरक्तियां या सांसारिक गतिविधियों से दूरी बनाना नहीं है। यह न तो संभव है न ही वांछनीय। मेल-जोल में रहने वाला एकांतप्रिय व्यक्ति मौन की आवाज भी सुन सकता है।

एकांत प्रिय व्यक्ति सहज, स्वच्छंद और साहसी प्रवृत्ति का होगा । उसका मनोबल भी उच्चस्तरीय होगा। भीड़ के अनुगामी में अकेले टिकने का माद्दा नहीं होता।

दिशाहीन भीड़ के अनुगामी को नहीं पता होता कि लोग किधर जा रहे हैं। एकाकी राही जानता है कि उसे भीड़ के साथ नहीं, अपितु अपनी निर्दिष्ट राह पर चलते रहना है।

स्वयं से साक्षात्कार करने के लिए एकांत से बेहतर साधन नहीं।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ उपहार अमृतफल आंवला

आंवले की एक डाली पर पत्ते एवं
प्रथमेश ई पपर, यह करीब २०

फीट से २५ फुट तक लंबा झारीय पौधा होता है। यह एशिया के अलावा यूरोप और अफ्रीका में भी पाया जाता है। हिमालयी क्षेत्र और प्राद्वीपीय भारत में आंवला के पौधे बहुतायत मिलते हैं। इसके फूल घंटे की तरह होते हैं। इसके फल सामान्यरूप से छोटे होते हैं।, लेकिन प्रसंस्कृत पौधे में थोड़े बड़े फल लगते हैं। इसके फल हरे, चिकने और गुदेदार होते हैं। स्वाद में इनके फल कसाय होते हैं। ज्यादातर खट्टापन कटारे में पाया जाता है।

संस्कृत में इसे अमृता, अमृतफल, आमलकी, पंचरसा इत्यादि, अंग्रेजी में 'एँब्लिक माइरीबालन' या इण्डियन गूजबेरी तथा लैटिन में 'फ़िलैंथस एँबेलिका' (Phyllanthus emblica) कहते हैं।

यह वृक्ष समस्त भारत में जंगलों तथा बाग-बगीचों में होता है। इसकी ऊँचाई 20 से 25 फुट तक, छाल राख के रंग की, पत्ते इमली के पत्तों जैसे, किंतु कुछ बड़े तथा फूल पीले रंग के छोटे-छोटे होते हैं। फूलों के स्थान पर गोल, चमकते हुए, पकने पर लाल रंग के, फल लगते हैं, जो आँवला नाम से ही जाने जाते हैं। वाराणसी का आँवला सब से अच्छा माना जाता है। यह वृक्ष कार्तिक में फलता है।

आयुर्वेद के अनुसार हरीतकी (हड़) और आँवला दो सर्वोत्कृष्ट औषधियाँ हैं। इन दोनों में आँवले का महत्त्व अधिक है। चरक के मत से शारीरिक अवनति को रोकनेवाले अवस्थास्थापक द्रव्यों में आँवला सबसे प्रधान है। प्राचीन ग्रंथकारों ने इसको शिवा (कल्याणकारी), वयस्था

(अवस्था को बनाए रखनेवाला) तथा धात्री (माता के समान रक्षा करनेवाला) कहा है।

इसका प्रयोग किसी भी रूप में किया जाय इसके गुणों में कोई कमी नहीं आती है. प्राचीन काल से ही इसे सर्वगुण सम्पन्न फल माना जाता रहा है. विटामिन्स और भी कई रासायनिक गुणों से समृद्ध ये फल सर्दियों में खासकर उपलब्ध होता है.

अचार, सब्जी, छुन्दा, मुरब्बा व सुपारी के रूप में विभिन्न प्रकार से इसका उपयोग हम किया करते हैं.

हर साल की तरह इस साल भी हमने बना ली ₹आंवला कैंडी₹.बिल्कुल सादा और सरल तरीके से. एक किलो ताजा रसीला आंवला लेकर उन्हें एक दिन के लिए पानी में भिगोकर रखें और दूसरे दिन आंवला को अच्छी तरह से धोकर स्टीमर में 12-15 मिनट तक मध्यम आंच पर भाप से पका लें. बाद में स्टीमर से निकालकर उन्हें हल्का सा ठंडा होने दें और उनकी फांके निकालकर गुठलियों को अलग कर लें.

आंवला की फांको को एक गहरे बर्तन में लेकर उन पर एक इंच ऊपर तक चीनी भर लें और ढक्कन लगाकर रख दें.

एक दिन बाद आप देखेंगे कि चीनी पूरी तरह घुलकर रस बन गई है और आंवले ऊपर तैर रहे हैं, तो आप इस मिश्रण को एक साफ चम्मच से अच्छी तरह हिलाकर वापस ढककर 2-3 दिन के लिए रख दें, ध्यान रखें कि इसे दिन में एक दो बार चम्मच से चलाते रहें, ताकि फफूंद नही लगे.

दो दिन के बाद आप देखेंगे कि आंवले रस से भरकर नीचे डूब गए हैं. इसे एक दिन के लिए और रखकर आंवलों को रस में से निकालकर एक बड़े थाल में फैलाकर धूप में रखें. दिनभर की तेज धूप से इसका रस सूख जाता है.

बाद में इन सूखे हुए आंवलों को एक बर्तन में रखकर उन पर पिसी हुई चीनी, कालीमिर्च पाउडर और पिसा हुआ काला नमक डालकर अच्छी तरह से चलाएं ताकि सभी आंवलों पर कोटिंग हो जाये.

बाद में इस चटपटी ज़ायकेदार स्वास्थ्यवर्धक आंवला कैंडी को एक साफ कांच के मर्तबान में भरकर रख दें और फिर इसे अपनी सुविधानुसार खाने का आनंद लें.।

60+ उम्र वालों के लिए किडनी बचाने की जरूरी सावधानियाँ...

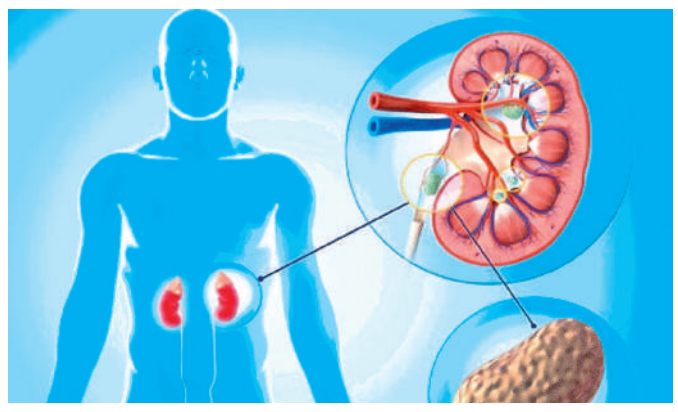

1. पानी पिएँ, लेकिन समझदारी से, दिन भर में थोड़ा-थोड़ा पानी पिएँ। रोज़ाना 1.5–2 लीटर पर्याप्त है (अगर डॉक्टर ने प्रतिबंध न लगाया हो)। शाम 7 बजे के बाद ज्यादा पानी न पिएँ ताकि रात में बार-बार बाथरूम न जाना पड़े। ध्यान रखें सुबह का पेशाब हल्का पीला होना चाहिए — बहुत गहरा रंग dehydration का संकेत है।

ध्यान रखें: बहुत ज्यादा नींबू पानी, जूस या हर्बल टी भी किडनी पर लोड डाल सकते हैं।

2. ब्लड प्रेशर नियंत्रण — 60+ के लिए सबसे ज़रूरी घर पर हफ्ते में 2 बार BP चेक करें। आदर्श BP: 120–129 / 70–80 (डॉक्टर की सलाह अनुसार)। हाई BP चुपचाप किडनी को नष्ट करता है।

क्या करें:

1. नमक कम करें, पापड़/अचार/नमकीन से दूरी।
2. रोज़ 30 मिनट टहलें।
3. 7 घंटे नींद लें।

3. दवाइयों का सावधानी से इस्तेमाल 60+ में लोग अक्सर कई दवाइयाँ लेते हैं — ये किडनी पर ज़्यादा भार डालती हैं।

इन दर्दनाशकों का नियमित उपयोग न करें:

1.Ibuprofen
Diclofenac
Naproxen
दर्द वाले स्प्रे/बाम जिनमें NSAIDs हों
सप्लिमेंट्स भी लिमिट में लें:

1. ज़्यादा Vitamin C:- स्टोन बनाता है
2. ज़्यादा Vitamin D ⟶ कैल्शियम बढ़ाकर किडनी को नुकसान
3. Calcium गोलियाँ बिना कारण न लें
4. अनजाने हर्बल पाउडर न लें

नियम: "दो से ज्यादा दवाएँ ले रहे हों, तो डॉक्टर से पूछें— क्या इनमें किडनी पर असर है?"

4. डायबिटीज कंट्रोल (अगर है) 60+ उम्र में डायबिटीज किडनी को सबसे तेज नुकसान पहुँचाती है।

लक्ष्य:

1. Fasting sugar <100–110 mg/dl
2. HbA1c<6.5–7%

साल में एक बार ज़रूर करवाएँ:

1. Urine microalbumin
2. Creatinine + eGFR
5. नमक और पैक्ड फूड कम करें उम्र बढ़ने पर किडनी की फ़िल्टरिंग क्षमता स्वाभाविक रूप से घटती है।

इनसे बचें:

1. बिस्किट, केक, ब्रेड
2. इंस्टेंट नूडल्स, इंस्टेंट सूप
3. नमकीन, चिप्स, पापड़
4. अचार
5. सोडा, पैक्ड स्नैक्स
6. प्रोसेस्ड चीज़, प्रोसेस्ड मीट

नमक कम, जड़ी-बूटियाँ ज्यादा: हल्दी, काली मिर्च, रोज़मेरी, राई, जीरा।

6. गट हेल्थ सही रखें 60+ में पाचन धीमा हो जाता है, जिससे सूजन बढ़ती है और किडनी पर असर होता है।

रोज़ खाएँ:

1. एक कटोरी दही/योगर्ट
2. दो तरह की सब्ज़ियाँ
3. छिलके वाला फल (सेब/नाशपाती)
4. भिगोए हुए बादाम/अलसी/कद्दू के बीज

इनसे बचें:

1. बार-बार एंटीबायोटिक
2. जंक व प्रोसेस्ड फूड
7. हल्का व्यायाम, लेकिन ओवर-एक्सरसाइज नहीं
1. रोज़ 30 मिनट की वॉक
2. हल्की स्ट्रेचिंग
3. भारी एक्सरसाइज या हाई-प्रोटीन डाइट से बचें (ज्यादा प्रोटीन से क्रिएटिनिन बढ़ सकता है)
8. नियमित जांच — बिल्कुल न छोड़ें 60+ उम्र में हर 6–12 महीने में ये टेस्ट करवाएँ:
1. Creatinine + eGFR
2. Urine routine
3. Urine microalbumin
4. Blood pressure
5. अगर BP/डायबिटीज/हार्ट की समस्या है ⟶ हर 6 महीने में।
9. खास चेतावनी स्टार फ्रूट (कैरेम्बोला) किडनी रोगियों के लिए बहुत खतरनाक है। प्रोटीन पाउडर, ज़्यादा जूस या कंसन्ट्रेटेड हेल्थ ड्रिंक से बचें।
10. शुरुआती लक्षणों को हल्का मत समझें 60+ में नीचे दिए लक्षण मिलें तो तुरंत टेस्ट करवाएँ:
1. पैरों में सूजन
2. पेशाब में झाग
3. रात में बार-बार पेशाब
4. भूख कम होना
5. लगातार थकान
6. BP अचानक बढ़ना

क्या है Trichotillomania

Trichotillomania एक मानसिक स्वास्थ्य स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी ही भौहों, पलकें, सिर के बाल, दाढ़ी या शरीर के अन्य हिस्सों के बाल बार-बार और अनियंत्रित रूप से उखाड़ता है। इससे खाली पैच, दुख, अपराधबोध और चिंता जैसी समस्याएँ हो सकती हैं, लेकिन अच्छी बात यह है कि इसका इलाज संभव है।

क्या होता है Trichotillomania? यह एक Impulse Control Disorder है, यानी व्यक्ति को बाल उखाड़ने की तीव्र इच्छा आती है और वह उसे रोक नहीं पाता। कई बार व्यक्ति बिना जाने, किसी तनाव, चिंता, बोरियत या भावनात्मक परेशानी में भी बाल उखाड़ने लगता है।

मुख्य लक्षण

1. सिर, भौहों या पलकों के बाल बार-बार उखाड़ना
2. बाल उखाड़ने के बाद मन को थोड़ी राहत या संतोष
3. स्काल्प/भौहों में खाली पैच बनना
4. बालों को उंगलियों से घुमाना, खींचना या मुंह में डालना
5. इस आदत को छुपाने की कोशिश करना

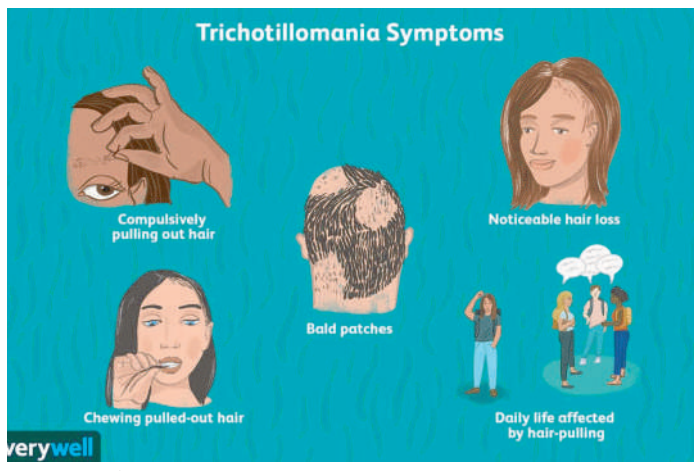

क्यों होता है? (कारण) Trichotillomania का कोई एक कारण नहीं है, बल्कि कई कारकों का मिश्रण हो सकता है:

1. Stress या Anxiety
2. Depression
3. Habit-based behavior जो समय से मजबूत हो जाती है
4. Genetic tendency (परिवार में किसी को हो तो जोखिम अधिक)
5. दिमाग के habit circuit में बदलाव

इलाज के प्रभावी तरीके अच्छी खबर यह है कि यह पूरी तरह काबू में लाया जा सकता है।

1. Habit Reversal Therapy (HRT) – सबसे प्रभावी इलाज इसमें व्यक्ति को
1. ट्रिगर पहचानना
2. बाल उखाड़ने के बदले कोई दूसरी harmless activity (जैसे रबर बैंड खींचना, बॉल दबाना) अपनाना
3. व्यवहार को बदलना सिखाया जाता है।

2. Cognitive Behaviour Therapy (CBT) तनाव और चिंता को कम करने तथा आदत को समझकर उसे बदलने में मदद करता है।

3. चिकित्सा / दवाएँ कभी-कभी डॉक्टर
1. SSRIs (anxiety/depression के लिए)
2. N-Acetylcysteine (NAC) जैसी दवाएँ सुझाते हैं। (दवाएँ हमेशा डॉक्टर की सलाह से ही।)

4. Self-help उपाय
1. हाथों को किसी activity में व्यस्त रखना
2. तनाव कम करने की तकनीकें – योग, ध्यान, गहरी सांस
3. सिर या भौंहों पर ढीली टोपी/कवर
4. ध्यान भटकाने के तरीके

क्या Trichotillomania ठीक हो सकता है? हाँ, बहुत से लोग थेरेपी + self-control techniques से पूरी तरह ठीक हो जाते हैं या काफी सुधार देखते हैं।

शुरुआत जितनी जल्दी होती है, परिणाम उतने बेहतर होते हैं।

मस्तिष्क में यादें कहाँ संग्रहीत होती हैं?

आधुनिक विज्ञान की स्पष्ट और प्रभावशाली व्याख्या

मानव मस्तिष्क में स्मृति एक ही जगह पर संग्रहीत नहीं होती। स्मृति एक वितरित (distributed) प्रणाली है — यानी अलग-अलग प्रकार की यादें मस्तिष्क के अलग-अलग हिस्सों में बनती, सहेजी और पुनः प्राप्त की जाती हैं। सामान्य रूप से, स्मृति दो मुख्य प्रकार की होती है:

1. स्पष्ट स्मृति (Explicit / Conscious Memory) – जिसे हम जान-बूझकर याद करते हैं
2. अस्पष्ट स्मृति (Implicit / Unconscious Memory) – कौशल, आदतें, मोटर-स्किल, जिनके बारे में हमें सोचने की आवश्यकता नहीं होती

स्पष्ट स्मृति के लिए तीन प्रमुख मस्तिष्क भाग हैं:

1. हिप्पोकैम्पस
2. नियो-कोर्टेक्स
3. अमिग्डाला

जबकि कौशल आधारित स्मृति के लिए:

4. बेसल गैंग्लिया और सेरेबेलम

1. हिप्पोकैम्पस – नई यादों का निर्माता और व्यवस्थित करने वाला केंद्र, हिप्पोकैम्पस मस्तिष्क के टेंपोरल लोब में स्थित होता है। यह नई एपिसोडिक यादों (व्यक्तिगत अनुभवों) को बनाता, व्यवस्थित करता और अल्पकालिक स्मृति को दीर्घकालिक स्मृति में बदलने में मदद करता है।

हिप्पोकैम्पस क्या करता है?

1. नई यादें बनाता
2. "कहाँ–क्या–कैसे हुआ" वाली घटनाओं को व्यवस्थित करता
3. अल्पकालिक स्मृति को दीर्घकालिक स्मृति में बदलता
4. रास्ते, स्थान और दिशाएँ याद रखने में मदद करता
5. H.M. का प्रसिद्ध केस:- 1953 में एक मरीज, हेनरी मोलाएसन (H.M.), के हिप्पोकैम्पस को मिर्गी (epilepsy) के इलाज के लिए हटाया गया।

परिणाम:

1. मिर्गी ठीक हो गई
2. बुद्धि सामान्य रही
3. लेकिन वह नई यादें नहीं बना पाए
4. केवल कुछ मिनटों की स्मृति रह पाती थी
5. पुरानी यादें सुरक्षित रहीं
6. आश्चर्यजनक रूप से, वे नए मोटर स्किल सीख सकते थे (जैसे ड्रॉइंग, पजल) लेकिन उन्हें यह याद नहीं रहता कि उन्होंने ये कौशल सीखे हैं

इस घटना से क्या पता चला? हिप्पोकैम्पस नई यादें बनाने के लिए आवश्यक है, लेकिन स्थायी स्मृति का भंडार नहीं है। अलग-अलग प्रकार की यादें मस्तिष्क के अलग-अलग नेटवर्क में संग्रहीत होती हैं

2. नियो-कोर्टेक्स – दीर्घकालिक स्मृति का विशाल भंडार नियो-कोर्टेक्स (cerebral cortex) मस्तिष्क की बाहरी परत है, जिसमें समय के साथ यादें स्थायी रूप से जमा हो जाती हैं।

नियो-कोर्टेक्स की भूमिका

1. दीर्घकालिक स्मृति का संग्रह
2. जानकारी, तथ्य, भाषा, ज्ञान की याद
3. पुरानी एपिसोडिक और अनुभव आधारित यादें
4. ध्वनि, दृश्य, स्पर्श आदि की अलग-अलग स्मृतियों को सहेजना
5. नवीनतम वैज्ञानिक जानकारी
6. एक ही स्मृति मस्तिष्क के कई हिस्सों में "टुकड़ों" में संग्रहीत होती है
7. नींद (विशेषकर गहरी नींद) के दौरान हिप्पोकैम्पस यादों को नियो-कोर्टेक्स में "स्थानांतरित" करता है
8. इसे System Consolidation कहते हैं यही कारण है कि अच्छी नींद याददाश्त को मजबूत करती है।

3. अमिग्डाला – भावनाओं से जुड़ी स्मृति का केंद्र अमिग्डाला छोटी बादाम-आकार की संरचना है जो भावनात्मक यादों को संभालती है।

अमिग्डाला क्या करता है?

1. डर, खुशी, क्रोध, तनाव, सुरक्षा, खतरा — इनसे जुड़ी यादें मजबूत बनाता है
2. यादों को भावनाओं के साथ जोड़कर उन्हें "ज्यादा जीवंत" बनाता है

इसके प्रभाव दुर्घटना, सफलता, अपमान, तनाव — ऐसी घटनाएँ जीवन भर याद रहती हैं। PTSD जैसी बीमारियों में अमिग्डाला का ओवर-एक्टिव होना पाया जाता है

4. बेसल गैंग्लिया और सेरेबेलम – कौशल और आदतों की स्मृति यह भाग अस्पष्ट (implicit) या कौशल आधारित स्मृति को संभालते हैं।

ये कौन-सी यादें हैं?

1। साइकिल चलाना
तैरना
टाइपिंग
संगीत वाद्य बजाना
रोज़मर्रा की आदतें

ये वह स्मृतियाँ हैं जिन्हें हम सोचकर नहीं बल्कि आदत के बल पर करते हैं। H.M. जैसे मरीज मोटर स्किल सीख सकते थे क्योंकि यह स्मृति हिप्पोकैम्पस पर निर्भर नहीं है।

नवीनतम वैज्ञानिक विकास (2022–2025)

1. स्मृति एंग्राम (Memory Engrams) की पहचान अब यह साबित हो चुका है कि हर स्मृति विशिष्ट न्यूरॉन्स के नेटवर्क में बनती है।
1. विज्ञान इन नेटवर्क्स को सक्रिय/निष्क्रिय कर सकता है।
2. भूल चुकी यादें पुनः सक्रिय करना।
3. डरभरी यादों के भाव बदलना (जैसे आतंक ⟶ शांति)
4. शुरुआती अल्ज़ाइमर में यादों की पुनर्स्थापना
2. नींद के दौरान स्मृति-रीप्ले हिप्पोकैम्पस नींद में "मूवी" की तरह दिनभर की घटनाएँ रिप्ले करता है और उन्हें मजबूती से कोर्टेक्स में जमा करता है।
3. डीप ब्रेन स्टिमुलेशन अल्ज़ाइमर और गंभीर स्मृति-हानि वाले मरीजों में याददाश्त सुधारने के लिए नई तकनीकों पर शोध चल रहा है।
4. मस्तिष्क स्मृति को "होलोग्राम" की तरह संग्रहीत करता है

याद एक जगह नहीं, बल्कि पूरे मस्तिष्क के नेटवर्क में बसी होती है। इसलिए कुछ हिस्से क्षतिग्रस्त होने पर भी कई यादें बची रहती हैं।

5. जीवनभर नई न्यूरॉन्स बनना हिप्पोकैम्पस में वयस्कों में भी नए न्यूरॉन्स बनते हैं। इसे Neurogenesis कहते हैं। यह सीखने और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संक्षिप्त सार (Impressive Summary)

1. हिप्पोकैम्पस नई यादें बनाता और व्यवस्थित करता है
2. नियो-कोर्टेक्स पुरानी और दीर्घकालिक यादों को संग्रहीत करता है
3. अमिग्डाला भावनात्मक यादों को मजबूत बनाता है
4. बेसल गैंग्लिया और सेरेबेलम कौशल, आदत और मोटर स्किल को सहेजते हैं

आधुनिक विज्ञान साबित करता है कि स्मृति एक गतिशील, वितरित, और लगातार बदलने वाली प्रक्रिया है।

5 आदतें जो चुपचाप किडनी को नुकसान पहुँचाती हैं

1. पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) प्यास लगना देर से मिलने वाला संकेत है।

A. सुबह बड़ा गिलास पानी ज़रूर पिएँ; चाहें तो नींबू, अदरक, रोज़मेरी मिलाएँ।

B. रोज़ का पानी: वज़न (किलो) × 30 = ml.

C. 75% पानी शाम 5 बजे से पहले। साफ़ पेशाब = अच्छा हाइड्रेशन।

2. छुपा हुआ सोडियम ब्रेड, नमकीन, इंस्टेंट नूडल्स, सूप, सॉसेज, स्नैक्स, सोडा, कुकीज़ आदि में बहुत सोडियम होता है। इससे ब्लड प्रेशर बढ़ता है और किडनी जल्दी खराब होती है।

नियम:

अ. कम पैक्ड फूड्स, ज़्यादा प्राकृतिक।

ब. पोटैशियम/मैग्नीशियम बढ़ाएँ: फल, सब्ज़ियाँ, नट्स, बीज।*

3. दवाइयों और सप्लिमेंट्स का ज़्यादा उपयोग रोज़-रोज़ दर्द की गोलियाँ (ibuprofen, diclofenac, naproxen) किडनी को नुकसान करती हैं। ज़्यादा Vitamin C ⟶ स्टोन; ज़्यादा Vitamin D ⟶ कैल्शियम बढ़कर किडनी को ज़हरीला कर सकता है। दवा/सप्लिमेंट हमेशा डॉक्टर की सलाह से लें।

4. चेक-अप को नज़रअंदाज़ करना ("मैं ठीक हूँ तो मैं स्वस्थ हूँ") किडनी रोग शुरू में बिल्कुल चुप रहता है।

1. साल में 2 बार— यूरिन टेस्ट + क्रिएटिनिन टेस्ट ज़रूर करवाएँ।
2. ब्लड प्रेशर नियमित चेक करें — यह बिना लक्षण के किडनी को खराब करता है।
5. खराब गट हेल्थ बिगड़ा माइक्रोबायोम सूजन पैदा करता है ⟶ डायबिटीज, हार्ट रोग, किडनी डैमेज तक।

रोज़ खाएँ: दही, कंबुचा, केफिर, सब्ज़ियाँ, छिलके वाले फल, दालें, बीज।

इनसे बचे जंक, ज़्यादा नमक, बेवजह एंटीबायोटिक से बचें।

किडनी मरीजों के लिए खतरनाक फल:- स्टार फ्रूट (कैरेम्बोला) इसमें ऑक्सालेट और caramboxin नामक टॉक्सिन होता है। किडनी फेलियर वालों के लिए बहुत खतरनाक— उल्टी, झटके, भ्रम, और इमरजेंसी डायलिसिस तक की नौबत ला सकता है। स्वस्थ लोग भी इसे कभी-कभी ही खाएँ, अधिक मात्रा या जूस के रूप में नहीं।

पुनर्नवा– फिर से नया कर दे तन-मन की धरा

आयुर्वेद की कोमल गोद से निकली यह जड़ी-बूटी नाम ही बताता है—जीवन को पुनः नया बनाना। भीतर छिपी थकान, सूजन, अवसाद, सबको धीरे-धीरे दूर भगाना। किडनी के लिए संजीवनी-सी,

पेशाब की जलन, रुकावट, सूजन में राहत लाए। लीवर को दे स्वच्छ उजाला, पीलिया, संक्रमण, फैटी लिवर को सहज ठीक कर जाए। हार्मोनल संतुलन का कोमल स्पर्श, कमजोरी, एनीमिया, मासिक समस्या में सहारा दे। शुगर हो या बढ़ा रक्तचाप, धीरज से नियंत्रण का प्यारा रास्ता दे। त्वचा पर भी इसका आशीर्वाद, फोड़े, फुंसी, एक्जिमा में मधुर उपचार। वजन घटाने में भी सहायक, शरीर से

विषैले तत्व कर दे पार।

सेवन सरल—

1. चूर्ण 1–3 ग्राम भोजन बाद या पुनर्नवारिष्ट दिन में दो बार।
2. सब्ज़ी रूप में साग भी उत्तम, स्वाद के संग स्वास्थ्य का उपहार।

ध्यान रहे— गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएँ केवल चिकित्सक सलाह के बाद सेवन करें।

पुनर्नवा है प्रकृति की कोमल पुकार - नियमित लो, संयम से लो और जीवन को फिर से नया आकार दो।

क्या आप अपने गोत्र की असली शक्ति को जानते हैं?

पिंकी कुंडू,
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

क्या आप अपने गोत्र की असली शक्ति को जानते हैं? यह कोई परंपरा नहीं है। कोई अंधविश्वास नहीं है। यह आपका प्राचीन कोड है।

यह पूरा लेख पढ़िए — मानो आपका अतीत इसी पर टिका हो।

1. गोत्र आपका उपनाम नहीं है। यह आपकी आध्यात्मिक डीएनए है। पता है सबसे अजीब क्या है? अधिकतर लोग जानते ही नहीं कि वे किस गोत्र से हैं। हमें लगता है कि यह बस एक लाइन है जो पंडित जी पूजा में कहते हैं। लेकिन यह सिर्फ इतना नहीं है।

आपका गोत्र दर्शाता है — आप किस ऋषि की मानसिक ऊर्जा से जुड़े हुए हैं। खून से नहीं, बल्कि विचार, ऊर्जा, तरंग और ज्ञान से।

हर हिंदू आध्यात्मिक रूप से एक ऋषि से जुड़ा होता है। वो ऋषि आपके बौद्धिक पूर्वज हैं। उनकी सोच, ऊर्जा, और चेतना आज भी आपमें बह रही है।

2. गोत्र का अर्थ जाति नहीं होता आज लोग इसे गड़बड़ा देते हैं। गोत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं दर्शाता। यह जातियों से पहले, उपनामों से पहले, राजाओं से भी पहले अस्तित्व में था। यह सबसे प्राचीन पहचान का तरीका था — ज्ञान पर आधारित, शक्ति पर नहीं। हर किसी का गोत्र होता था। ऋषि अपने शिष्यों को गोत्र देते थे जब वे उनकी शिक्षाओं को ईमानदारी से अपनाते थे। इसलिए, गोत्र कोई लेबल नहीं — यह आध्यात्मिक विरासत की मुहर है।

3. हर गोत्र एक ऋषि से जुड़ा होता है — एक "सुपरमाइंड" से मान लीजिए

आप वशिष्ठ गोत्र से हैं — तो आप वशिष्ठ ऋषि से जुड़े हैं, वही जिन्होंने श्रीराम और दशरथ को मार्गदर्शन दिया था।

भृगु गोत्र? आप उस ऋषि से जुड़े हैं जिन्होंने वेदों का हिस्सा लिखा और योद्धाओं को प्रशिक्षण दिया।

कुल 49 मुख्य गोत्र हैं — हर एक ऋषियों से जुड़ा जो ज्योतिषी, वैद्य, योद्धा, मंत्रद्रष्टा या प्रकृति वैज्ञानिक थे।

4. क्यों बुजुर्ग एक ही गोत्र में विवाह मना करते थे? यह बात स्कूल में नहीं सिखाई जाती। प्राचीन भारत में गोत्र एक जेनेटिक ट्रैकर था। यह पितृवंश से चलता है — यानी पुत्र ऋषि की लाइन आगे बढ़ाते हैं। इसलिए अगर एक ही गोत्र के दो लोग विवाह करें, तो वे आनुवंशिक रूप से भाई-बहन जैसे होंगे। इससे संतान में मानसिक और शारीरिक विकार आ सकते हैं।

गोत्र व्यवस्था = प्राचीन भारतीय डीएनए विज्ञान और यह हम हजारों साल पहले जानते थे — जब पश्चिमी विज्ञान को जेनेटिक्स का भी अंदाजा नहीं था।

5. गोत्र = आपका मानसिक प्रोग्रामिंग, चलो इसे व्यक्तिगत बनाते हैं।

1. कुछ लोग गहरे विचारक होते हैं।
2. कुछ में गहरी आध्यात्मिक भूख होती है।
3. कुछ को प्रकृति में शांति मिलती है।
4. कुछ नेता या सत्य के खोजी होते हैं।

5. क्यों? क्योंकि आपके गोत्र के ऋषि का मन आज भी आपके अंदर गूंजता है।

1. अगर आपका गोत्र किसी योद्धा ऋषि का है — आपको साहस महसूस होगा।
2. अगर वह किसी वैद्य ऋषि से है — तो आयुर्वेद या चिकित्सा में रुचि हो सकती है।
3. यह संयोग नहीं — यह गहराई से जुड़ा प्रोग्राम है।

6. पहले गोत्र के आधार पर शिक्षा दी जाती थी प्राचीन गुरुकुलों में सबको एक जैसा नहीं सिखाया जाता था। गुरु का पहला प्रश्न होता था: "बेटा, तुम्हारा गोत्र क्या है?" क्यों? क्योंकि इससे गुरु समझ जाते थे कि छात्र कैसे सीखता है, कौन सी विद्या उसके लिए उपयुक्त है।

अत्रि गोत्र वाला छात्र — ध्यान और मंत्रों में प्रशिक्षित होता।

कश्यप गोत्र वाला — आयुर्वेद में गहराई से जाता।

गोत्र सिर्फ पहचान नहीं, जीवनपथ था।

7. ब्रिटिशों ने इसका मज़ाक उड़ाया, बॉलीवुड ने हंसी बनाई, और हमने इसे भुला दिया जब ब्रिटिश भारत आए, उन्होंने इसे अंधविश्वास कहा। फिर फिल्मों में मज़ाक बना — "पंडितजी फिर से गोत्र पूछ रहे हैं!" — जैसे यह कोई बेमतलब रस्म हो। धीरे-धीरे हमने अपने बुजुर्गों से पूछना छोड़ दिया। अपने बच्चों को बताना छोड़ दिया। 100 साल में 10,000 साल पुरानी व्यवस्था लुप्त हो रही है।उसे किसी ने खत्म नहीं किया। हमने ही उसे मरने दिया।

8. अगर आप अपना गोत्र नहीं जानते — तो आपने एक नक्शा खो दिया है कल्पना कीजिए कि आप किसी प्राचीन राजघराने से हों — पर अपना उपनाम तक नहीं जानते।

1. आपका गोत्र = आपकी आत्मा का GPS है।
2. सही मंत्र
3. सही साधना
4. सही विवाह
5. सही मार्गदर्शन

इसके बिना हम अपने ही धर्म में अंधे होकर चल रहे हैं।

9. गोत्र की पुकार सिर्फ रस्म नहीं होती जब पंडित पूजा में आपका गोत्र बोलते हैं, तो वे सिर्फ औपचारिकता नहीं निभा रहे। वे आपको आपकी ऋषि ऊर्जा से दोबारा जोड़ रहे होते हैं। यह एक पवित्र संवाद होता है: "मैं, भारद्वाज ऋषि की संतान, अपने आत्मिक वंशजों की उपस्थिति में यह संकल्प करता हूँ।" यह सुंदर है। पवित्र है। सच्चा है।

10. इसे फिर से जीवित करो — इसके लुप्त होने से पहले

1. अपने माता-पिता से पूछो।
2. दादी-दादा से पूछो।
3. शोध करो, पर इसे जाने मत दो।
4. इसे लिखो, अपनी संतानों को बताओ। गर्व से कहो: आप सिर्फ 1990 या 2000 में जन्मे इंसान नहीं हैं — आप एक ऐसी ज्योति के वाहक हैं जो हजारों साल पहले किसी ऋषि ने जलाई थी।

11. आपका गोत्र = आत्मा का पासवर्ड आज हम वाई-फाई पासवर्ड, नेटफ्लिक्स लॉगिन याद रखते हैं... पर अपने गोत्र को भूल जाते हैं। वो एक शब्द — आपके भीतर की

1. चेतना
2. आदतें
3. पूर्व कर्म
4. आध्यात्मिक शक्तियां
5. ...सब खोल सकता है। यह लेबल नहीं — यह चाबी है।

12. महिलाएं विवाह के बाद गोत्र "खोती" नहीं हैं लोग सोचते हैं कि विवाह के बाद स्त्री का गोत्र बदल जाता है। पर सनातन धर्म सूक्ष्म है। श्राद्ध आदि में स्त्री का गोत्र पिता से लिया जाता है। क्योंकि गोत्र पुरुष रेखा से चलता है (Y-क्रोमोज़ोम से)। स्त्री ऊर्जा को वहन करती है, लेकिन आनुवंशिक रूप से उसे आगे नहीं बढ़ाती। इसलिए स्त्री का गोत्र समाप्त नहीं होता — वह उसमें मौन रूप से जीवित रहता है।

13. भगवानों ने भी गोत्र का पालन किया रामायण में श्रीराम और सीता के विवाह में भी गोत्र जांचा गया:

रामः इक्ष्वाकु वंश, वशिष्ठ गोत्र
सीताः जनक की पुत्री, कश्यप गोत्र
यहां तक कि दिव्यता ने भी धर्म का पालन किया।

"गायत्री मंत्र, हिन्दुओं के लिए विशेष, *।।ॐ.।। भुर्भुवः स्वः

पिंकी कुंडू,
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

कहते हैं गायत्री मंत्र के जाप से दुख और दरिद्रता का नाश होता है, हमारी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मंत्रों का जाप करने से व्यक्ति के अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. मन के दुख, द्वेष, पाप, भय, शोक जैसे नकारात्मक चीजों का अंत हो जाता है. साथ ही मनुष्य मानसिक तौर पर जागृत हो जाता है,आपको बता दें कि प्रत्येक दिन गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए. आपको इसका अद्भुत लाभ देखने को मिलेगा,,!

गायत्री मंत्र :-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्,।

गायत्री मंत्र का अर्थ :-"सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा के तेज़ का ध्यान करते हैं। वह तेज़ हमारी बुद्धि को सत्मार्ग की ओर चलने के लिए प्रेरित करें।"

हे प्रभु आप हमारे जीवन दाता हो, आप हमारे दुःख दर्द का निवारण करने वाले हैं, आप हमें सुख और शांति प्रदान करने वाले हो, हे संसार के विधाता हमे शक्ति दो कि हम आपकी उज्जवल शक्ति को प्राप्त कर सकें,कृपा करके हमें सही रास्ता दिखाएं जिससे हम हमारी बुद्धि का सदुपयोग कर सकें। यानि उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस-

कलयुग में अत्यंत दुर्लभ है श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता : संतश्री प्रेमधन लालनजी महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। कालीदह क्षेत्र स्थित राधा कृपा आश्रम में लाला सद्दनलाल अग्रवाल परिवार (मुम्बई) के द्वारा ठाकुरश्री ब्रजवल्लभ लाल महाराज एवं सद्गुरुश्री सन्त मां ब्रजदेवी जी के पावन सानिध्य में चल रहे सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव के सातवें दिन सन्तश्री प्रेमधन लालनजी महाराज ने व्यास पीठ से अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को सुदामा चरित्र की कथा श्रवण कराते हुए कहा कि कलयुग में भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा जैसी मित्रता अत्यंत दुर्लभ है।ब्रह्मज्ञानी सुदामा ने दरिद्रता की सीमा पर जीवन व्यतीत करते हुए भी परब्रह्म परमात्मा से कुछ भी नहीं मांगा।परन्तु मित्रता निभाते हुए श्रीकृष्ण ने उन्हें तीनों लोक सौंप दिए।यही सच्ची मित्रता की पराकाष्ठा है। पूज्य महाराजश्री ने कहा कि जीवन में सत्संग का बड़ा ही महत्व है। भागवत रूपी नौका में बैठकर प्राणी संसार रूपी भवसागर से पार हो जाता है।इसके श्रवण मात्र से मानव के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।भगवान की भक्ति से ही जीव का कल्याण होता है।साथ ही जन्म व मृत्यु के भय का नाश हो जाता है। महोत्सव में पधारे पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने कहा कि आप सभी बहुत भाग्यशाली हैं, जो कि ब्रज रसिक संत माता ब्रज देवीजी के दर्शन करते हुए और ब्रज के लाड़ले संतश्री लालनजी महाराज के मुख से श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा सुन रहे हैं।इसका तात्पर्य है कि आप श्रीराधा-कृष्ण के ही चरणों में बैठ कर ही कथा श्रवण कर रहे हैं।व्यास पीठ पर विराजमान व्यास के मुख से जो शब्द आप सुन रहे हैं, वो साक्षात श्री ठाकुरजी के ही शब्द हैं। इससे पूर्व प्रातःकाल संतश्री लालनजी महाराज के पावन सानिध्य में श्रीयमुना महारानी का चुनरी मनोरथ किया गया।साथ ही उनका वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन कर उनकी विशेष आरती की गई। इस अवसर पर श्रीहित बड़ा रासमण्डल के श्रीमहंत लाड़िली शरण देवाचार्य महाराज, प्रख्यात सन्त बाबा सियाराम दास महाराज (गोवर्धन), राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त प्रख्यात रासाचार्य स्वामी फतेह कृष्ण शर्मा, प्रख्यात साहित्यकार "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, पण्डित रवि शर्मा, स्वामी राधाकांत शर्मा (छोटे स्वामी), कृष्णांशु शर्मा, प्रिया दासी, हरि दासी, मुख्य यजमान अशोक कुमार अग्रवाल, अरविंद अग्रवाल, अरुण अग्रवाल, दिव्याशु शर्मा, हिमांशु शर्मा, अदिति अग्रवाल आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।महोत्सव का समापन सन्त, विप्र, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें ऊनी कम्बल, छतरी, शॉल एवं दक्षिणा आदि वितरित की गई।

सनातन धर्म में पत्नी को अर्द्धांगिनी क्यों कहा जाता है

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

जानें शास्त्रों के मुताबिक एक गुणी पत्नी की परिभाषा हिन्दू मान्यताओं के अनुसार पत्नी पति के शरीर का आधा हिस्सा होती है और साथ ही लक्ष्मी स्वरूप भी होती है। कई शास्त्रों में इसको लेकर अलग-अलग वर्णन किए गये हैं।

हिन्दू शास्त्रों में पत्नी को वामांगी कहा गया है। जिसका अर्थ होता है बाएं अंग का अधिकारी। इसलिए पुरुष के शरीर का बायां हिस्सा स्त्री का माना जाता है। इसका कारण ये है कि भगवान शिव के बाएं अंग से स्त्री की उत्पत्ति हुई है, जिसका प्रतीक शिव का अर्धनारीश्वर शरीर है। यही कारण है कि हस्तरेखा विज्ञान की कुछ पुस्तकों में पुरुष के दाएं हाथ से पुरुष की और बाएं हाथ से स्त्री की स्थिति देखने की बात कही गयी है। शास्त्रों में कहा गया है कि स्त्री पुरुष की वामांगी होती है। इसलिए सोते समय और सभा में सिंदूरदान द्विरागमन आशीर्वाद ग्रहण करते समय और भोजन के समय स्त्री को पति के बायीं ओर रहना चाहिए। इससे शुभ फल की प्राप्ति होती। ऐसा शास्त्रों में वर्णित किया गया है।

कन्यादान के समय स्त्री को इस तरफ रहना चाहिए वामांगी होने के बावजूद भी कुछ कामों में स्त्री को दायीं ओर रहने की बात शास्त्र कहता है। शास्त्रों में बताया गया है कि कन्यादान विवाह यज्ञकर्म, जातकर्म नामकरण और अन्न प्राशन के समय पत्नी को पति के दायीं ओर बैठना चाहिए। पत्नी के पति के दाएं या बाएं बैठने संबंधी इस मान्यता के पीछे तर्क ये है कि जो कर्म सांसारिक होते हैं। उसमें पत्नी पति के दायीं ओर बैठती है। क्योंकि ये कर्म स्त्री प्रधान कर्म माने जाते हैं। यज्ञ कन्यादान विवाह ये सभी पारलौकिक कार्य माने जाते हैं। इन्हें पुरुष प्रधान माना गया है। इसलिए इन कर्मों में पत्नी के दायीं ओर बैठने के नियम हैं।

स्त्री को इस वजह से अर्धांगिनी कहा जाता है सनातन धर्म में पत्नी को पति की वामांगी कहा गया है। यानी कि पति के शरीर का बांया हिस्सा, इसके अलावा पत्नी को पति की अर्द्धांगिनी भी कहा जाता है। जिसका अर्थ है पत्नी पति के शरीर का आधा अंग होती है। दोनों शब्दों का सार एक ही है। जिसके अनुसार पत्नी के बिना पति अधूरा है। पत्नी ही पति के जीवन को पूरा करती है। उसे खुशहाली प्रदान करती है। उसके परिवार का ख्याल रखती है। और उसे सभी सुख प्रदान करती है जिसके वो योग्य है। पति-पत्नी का रिश्ता दुनिया भर में बेहद महत्वपूर्ण बताया गया है। चाहे सोसाइटी कैसी भी हो। लोग कितने ही मॉर्डर्न क्यों ना हो जायें, लेकिन पति पत्नी के रिश्ते का रूप वही रहता है। प्यार और आपसी समझ से बना हुआ।

महाभारत में भीष्म पितामह ने ये कही ये बात हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध ग्रंथ महाभारत में भी पति पत्नी के महत्वपूर्ण रिश्ते के बारे में काफी कुछ कहा गया है। भीष्म पितामह ने कहा था कि पत्नी को सदैव प्रसन्न रखना चाहिये, क्योंकि उसी से वंश की वृद्धि होती है। वो घर की लक्ष्मी है। यदि लक्ष्मी प्रसन्न होगी तभी घर में खुशियां आयेंगी। इसके अलावा भी अनेक धार्मिक ग्रंथों में पत्नी के गुणों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया है।

गरुण पुराण में पत्नी की ये व्याख्या की गई है आज हम आपको गरूड पुराण, जिसे लोक प्रचलित भाषा में गृहस्थों के कल्याण की पुराण भी कहा गया है। उसमें उल्लिखित पत्नी के कुछ गुणों की संक्षिप्त व्याख्या करेंगे। गरुण पुराण में पत्नी के जिन गुणों के बारे में बताया गया है उसके अनुसार जिस व्यक्ति की पत्नी में ये गुण हों। उसे स्वयं को भाग्यशाली समझना चाहिये। कहते हैं पत्नी के सुख के मामले में देवराज इंद्र अति भाग्यशाली थे, इसलिये गरुण पुराण के तथ्य यही कहते हैं।

"सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रियंवदा। सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता।"

गरुण पुराण में पत्नी के गुणों को समझने वाला एक श्लोक मिलता है। यानी जो पत्नी गृहकार्य में दक्ष है। जो प्रियवादिनी है। जिसके पति ही प्राण हैं। जो पतिपरायणा है। वास्तव में वही पत्नी है। गृह कार्य में दक्ष से तात्पर्य है। वो पत्नी जो घर के काम काज संभालने वाली हो। घर के सदस्यों का आदर सम्मान करती हो। बड़े से लेकर छोटों का भी ख्याल रखती हो। जो पत्नी घर के सभी कार्य जैसे भोजन बनाना साफ सफाई करना घर को सजाना कपड़े बर्तन आदि साफ करना जैसे कार्य करती हो। वो एक गुणी पत्नी कहलाती है। इसके अलावा बच्चों की जिम्मेदारी ठीक से निभाना। घर आये अतिथियों का मान सम्मान करना। कम संसाधनों में भी गृहस्थी को अच्छे से चलाने वाली पत्नी गरुण पुराण के अनुसार गुणी कहलाती है। ऐसी पत्नी हमेशा ही अपने पति की प्रिय होती है।

इसी वजह से प्रियवादिनी कहा गया है प्रियवादिनी से तात्पर्य है मीठा बोलने वाली पत्नी। आज के जमाने में जहां स्वतंत्र स्वभाव और तेज तर्रार बोलने वाली पत्नियां भी है। जो नहीं जानती कि किस समय किस से कैसे बात करनी चाहिये। इसलिए गरुण पुराण में दिए गए निर्देशों के अनुसार अपने पति से सदैव संयमित भाषा में बात करने वाली धीरे व प्रेमपूर्वक बोलने वाली पत्नी ही गुणी पत्नी होती है।

पत्नी द्वारा इस प्रकार से बात करने पर पति भी उसकी बात को ध्यान से सुनता है। उसके इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करता है। परंतु केवल पति ही नहीं घर के अन्य सभी सदस्यों या फिर परिवार से जुड़े सभी लोगों से भी संयम से बात करने वाली स्त्री एक गुणी पत्नी कहलाती है। ऐसी स्त्री जिस घर में हो वहां कलह और दुर्भाग्य कभी नहीं आता।

ऐसे गुण जिसकी पत्नी में हो वो देवराज इंद्र की तरह होती है पतिपरायणा यानी पति की हर बात मानने वाली पत्नी गरुण पुराण के अनुसार एक गुणी पत्नी होती है। जो पत्नी अपने पति को ही सब कुछ मानती हो। उसे देवता के समान मानती हो। कभी भी अपने पति के बारे में बुरा ना सोचती हो। वो पत्नी गुणी है। विवाह के बाद एक स्त्री ना केवल एक पुरुष की पत्नी बनकर नये घर में प्रवेश करती है। वो उस नये घर की बहु भी कहलाती है। उस घर के लोगों और संस्कारों से उसका एक गहरा रिश्ता बन जाता है। इसलिए शादी के बाद नए लोगों से जुड़े रीति रिवाज को स्वीकारना ही स्त्री की जिम्मेदारी है। इसके अलावा एक पत्नी को एक विशेष प्रकार के धर्म का भी पालन करना होता है। विवाह के पश्चात उसका सबसे पहला धर्म होता है कि वो अपने पति और परिवार के हित में सोचे। ऐसा कोई काम न करे जिससे पति या परिवार का अहित हो। गरुण पुराण के अनुसार जो पत्नी प्रतिदिन स्नान कर पति के लिए सजती संवरती है। तथा सभी मंगल चिह्नों से युक्त है। जो निरंतर अपने धर्म का पालन करती है तथा अपने पति का हित सोचती है। उसे ही सच्चे अर्थों में पत्नी मानना चाहिये। जिसकी पत्नी में ये सभी गुण हों उसे स्वयं को देवराज इंद्र ही समझना चाहिये।

१९०८ का ऐतिहासिक चित्र : हरमंदिर साहिब में हिन्दू साधु क्यों ध्यान कर रहे हैं...?

1908 का हरिमंदर साहिब का चित्र एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है जिसमें अमृतसर के हरिमंदर साहिब (जिसे स्वर्ण मंदिर भी कहते हैं) का दृश्य है, जिसमें परिक्रमा करते हुए कई हिंदू साधु भी दिखाई दे रहे हैं। यह चित्र उस समय की एक विशेषता को दर्शाता है जब गुरुद्वारे में विभिन्न धर्मों के लोग शांतिपूर्वक एकत्रित होते थे और ध्यान करते थे।

चित्र का विवरण: 1908 के इस चित्र में हरिमंदर साहिब के चारों ओर बने अमृत सरोवर और मंदिर के आसपास की परिक्रमा पथ दिखाई दे रहा है। परिक्रमा पथ पर कई हिंदू साधु शांतिपूर्वक ध्यानमग्न बैठे हैं, जिनमें से कुछ के माथे पर त्रिपुंड है और कुछ ने गले में रुद्राक्ष की माला पहन रखी है।

ऐतिहासिक संदर्भ: गुरुद्वारा साहिब में धार्मिक सहिष्णुता और विभिन्न समुदायों के लोग आ सकते हैं, इसकी एक झलक इस चित्र से मिलती है। हरिमंदर साहिब की नींव लाहौर के सूफी संत हज़रत मियां मीर ने रखी थी, जो इस सर्व-धर्म समभाव की एक और मिसाल है।

व्याख्या: चित्र में हिंदू साधुओं की उपस्थिति दर्शाती है कि उस समय गुरुद्वारा साहिब एक ऐसा पवित्र स्थल था जहाँ विभिन्न धार्मिक धाराओं के लोग एक साथ आकर भक्ति और ध्यान करते थे। यह सिख्ख धर्म की सनातन भारतीय संस्कृति के साथ गहरी जड़ों को भी उजागर करता है। यह चित्र 1908 ई. को लिया गया अमृतसर के हरमंदिर साहब का है (जिसे ब्रिटिश काल में अंग्रेजों, ईसाई मिशनरियों और बाद में वामपंथी इतिहासकारों ने "गोल्डन टेम्पल" नाम दे दिया)।

चित्र में आप स्पष्ट देख सकते हैं कि परिक्रमा में कई हिन्दू साधु शांतिपूर्वक ध्यानमग्न हैं, कुछ के माथे पर त्रिपुंड है, तो कुछ के गले में रुद्राक्ष की माला है।

प्रश्न स्वाभाविक है — "यह सिखों का सबसे पवित्र तीर्थ है, फिर हिन्दू साधु यहाँ ध्यान क्यों लगा रहे हैं ?" जवाब इतिहास के उन पन्नों में छिपा है जिन्हें जानबूझकर मिटाया या तोड़ा-मरोड़ा गया। आइए सिलसिलेवार समझते हैं।

(क) दस गुरुओं के नाम ही हिन्दू देवताओं के नाम हैं —

1. गुरु नानक देव जी
2. गुरु अंगद देव जी
3. गुरु अमर दास जी
4. गुरु राम दास जी राम
5. गुरु अर्जुन देव जी अर्जुन (महाभारत)
6. गुरु हरगोविंद जी हरि (विष्णु) + गोविंद (कृष्ण)
7. गुरु हर राय जी हरि + राय (राजा)
8. गुरु हर किशन जी हरि + कृष्ण
9. गुरु तेग बहादुर जी तेग = तलवार, बहादुर (हिन्दवी स्वराज्य के रक्षक)
10. गुरु गोबिंद सिंह जी गोबिंद = कृष्ण का नाम

गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने चार साहिबज़ादों के नाम भी हिन्दू परम्परा से ही रखे। — अजीत, जुझार, जोरावर, फतेह। यह कोई संयोग नहीं है बल्कि सनातन संस्कृति की निरंतरता है।

(ख) कश्मीरी पंडितों के लिए गुरु तेग बहादुर जी ने क्यों दी बलिदान ? सन्1675 में औरंगज़ेब ने कश्मीरी पंडितों को जबरन इस्लाम कबूल करने को कहा। भयभीत पंडित गुरु तेग बहादुर जी के पास आनंदपुर पहुंचे। गुरु जी ने कहा — "जाओ, औरंगज़ेब से कह दो कि पहले तीसरे नानक के वंशज गुरु तेग बहादुर को मुसलमान बना लो, फिर सारे कश्मीरी पंडित मुसलमान बन जाएंगे।" दिल्ली लाए गए गुरु जी को तीन दिन तक भयानक यातनाएँ दी गईं। भाई मतिदास को आरे से चीरा गया, भाई दयाला को उबलते तेल में डाला गया, भाई सति दास को ज़िंदा जलाया गया। फिर 11 नवंबर 1675 को चाँदनी चौक में गुरु तेग बहादुर जी का सार्वजनिक सिर कलम कर दिया गया।

प्रश्न फिर वही :— अगर सिख्ख अलग धर्म थे, तो हिन्दू पंडितों के लिए गुरु जी ने प्राण क्यों त्यागे ? क्या यह सिद्ध नहीं करता कि उस समय सिख्ख और हिन्दू एक ही सनातन परिवार के दो अंग थे ?

(ग) गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रिय शिष्य कौन थे ? गुरु गोविन्द सिंह का प्रिय शिष्य बंदा बहादुर (लक्ष्मण दास) भारद्वाज गोत्र का ब्राह्मण था जिसने गुरु गोविन्द सिंह जी के बाद पंजाब में मुगलों की सेना को नाकों चने चबवा दिए। कृष्णदत्त जैसे ब्राह्मण ने गुरु के सम्मान के लिए अपने सम्पूर्ण परिवार को कुर्बान कर दिया। राजा रणजीत सिंह कांगड़ा की ज्वालामुखी देवी के भक्त थे उन्होंने देवी मंदिर का पुर्ननिर्माण कराया। आज भी अनेक सिक्ख व्यापारियों की दुकानों में गणेश व देवी की मूर्तियां रखती है, आज भी सिक्ख नवरात्रि में अपने घरों में जोत जलाते हैं, नवजोत सिंह सिद्धू के घर में शिवलिंग की पूजा होती है।

(घ) अंग्रेजों की "Divide and Rule" नीति और सिखों को हिन्दुओं से अलग करना। सन्1857 की क्रांति में सबसे अधिक फाँसी पंजाब के सिखों और हिन्दुओं को हुई। अंग्रेज डर गए। पंजाब उस समय स्वराज्य और क्रांति

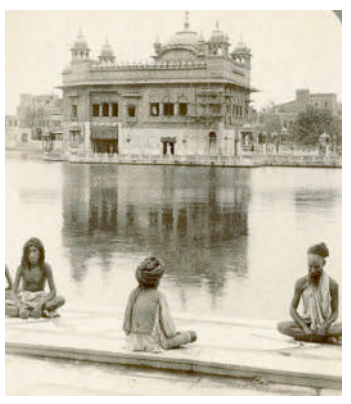

का केंद्र बन रहा था। सन्1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज का गठन किया, जिसका मुख्य केंद्र तत्कालीन पंजाब का लाहौर था। लाला लाजपत राय, भगत सिंह, अजीत सिंह, लाला हरदयाल आदि सभी आर्य समाजी थे। स्वामी दयानंद सरस्वती ने ही सबसे पहले स्वराज्य की अवधारणा दी। जब देश का नाम हिंदुस्तान तो ईसाईयों (अंग्रेज़) का राज क्यों! तत्पश्चात अंग्रेजों को लगा कि यदि सिख्ख और हिन्दू एक रहेंगे तो पंजाब कभी शांत नहीं होगा। इसलिए उन्होंने दोहरी रणनीति अपनाई : स्वामी दयानंद के इन विचारों से पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियों की बाढ़ आ गयी। लाला हरदयाल, लाला लाजपतराय, सोहन सिंह, भगतसिंह के चाचा अजीत सिंह जैसे क्रांतिकारी नेता आर्य समाजी थे। अतः ईसाई मिशनरियों (अंग्रेज़ों) ने अभियान चलाया कि सिक्ख व हिन्दू अलग हैं ताकि पंजाब में क्रांतिकारी आंदोलन को कमजोर किया जा सके। इसके लिए कुछ अंग्रेज़ समर्थक सिक्खों ने एक साज़िश के तहत अभियान चलाया कि सिक्ख हिन्दू नहीं हैं और अलग धर्म का दर्जा देने की मांग की (जैसे; हाल ही में कर्नाटक के कुछ ईसाई बने लिंगायत समुदाय के लोगों ने हिन्दू धर्म से अलग करने की मांग उठाई थी) ईसाई मिशनरियों (अंग्रेज़) ने सन् 1925 में "सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट" पारित कर सिक्खों को हिन्दुओं से अलग कर उन्हें अलग धर्म का घोषित कर दिया। और आज़ादी के बाद भी भारत के विखंडन के ज़िम्मेदार गुलाबी चचा ने इसे बनाये रखा। इसके पहले सन्1901 की जनगणना तक पंजाब में सिख्ख खुद को "सिख्ख हिन्दू" ही लिखवाते थे।

(ङ) आज़ादी के बाद भी खेल जारी रहा — सन्1950 के दशक में नेहरू सरकार ने "हिन्दू कोड बिल" पास किया, लेकिन सिखों को उससे बाहर रखा गया। सन् 1966 में पंजाब बना तो आर्टिकल 25(2)(B) में लिख दिया गया कि "सिख्ख धर्म को हिन्दू धर्म का हिस्सा माना जाएगा" परन्तु सिख्ख नेताओं ने इसका विरोध किया और बाद में इसे व्यावहारिक रूप से निष्क्रिय कर दिया गया। गुरु गोविन्द सिंह ने सन्1699 में खालसा (पवित्र) पंथ का गठन किया था और कहा था कि मैं चारों वर्ण के लोगों को सिंह बना दूँगा। "देश, धर्म व संस्कृति की रक्षा प्राण देकर ही नही, प्राण लेकर भी की जाती है।"

हिन्दू और सिख्ख का खून एक है। रक्त एक है, रीति एक है, संस्कृति एक है। सिख्ख और हिन्दू कभी अलग नहीं थे। अलग करने की साज़िश अंग्रेज़ों ने की, कुछ स्वार्थी नेताओं ने चलाई, और आज भी वही साज़िशें कुछ राजनीतिक दल और अलगाववादी ताकतें चलाती हैं। अतः हर हिन्दू को जीवन में एक बार श्री हरमंदिर साहिब अवश्य जाना चाहिए। एवं हर सिख्ख भाई को जीवन में एक बार काशी विश्वनाथ, बद्रीनाथ, जगन्नाथ पुरी अवश्य जाना चाहिए। क्योंकि हम एक ही सनातन परिवार के दो अंग हैं। अर्थात एक माँ के दो वीर पुत्र हैं — "हिन्दू और सिख्ख।"

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण के मौलिक कारणों को समझे बिना निदान बेहद मुश्किल, समझिए हुजूर!

कमलेश पाण्डेय

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ता वायु प्रदूषण अब केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के गले ही हड्डी बन चुकी है क्योंकि उनके मातहत कार्यरत प्रशासन निरंतर अदूरदर्शिता केरल का घाव निर्णय लेने का आदी बन चुका है। लिहाजा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की चिंताएं स्वाभाविक हैं, लेकिन इन्हें भी प्रदूषण की बुनियादी बातों को समझना पड़ेगा और सर्वमान्य हल देने पड़ेंगे अन्यथा बात का बतंगड़ बनते देर नहीं लगेगी।

इसलिए सबको पहले दिल्ली-एनसीआर के बढ़ते प्रदूषण के मौलिक कारणों को समझना होगा, फिर उसका माकूल वैज्ञानिक हल निकालने का माकूल प्रयास करना होगा, अन्यथा इसका निदान बेहद मुश्किल प्रतीत होता रहेगा। आखिर बीते कई दशकों से 'सांप निकल जाने के बाद लाठी पीटने' की जो प्रशासनिक कवायद जारी है, उससे किसी का भी भला होने वाला नहीं है। खासकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिकों का तो कतई नहीं क्योंकि दिल्ली का न तो मौसम अपना है, न पानी। बस 'दलाली' की जिंदगानी से गुजर बसर चल रहा है।

यही वजह है कि प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) ने दिल्ली-एनसीआर में बिगड़ती वायु गुणवत्ता पर एक उच्चस्तरीय बैठक बुलाई जिसमें प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों (जैसे BS3) के खिलाफ जांच और कड़ी कार्रवाई तेज करने तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया। वाकई ये चिंताएं वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन को प्रमुख प्रदूषण स्रोत मानती हैं।

वहीं, सर्वोच्च न्यायालय के नए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत ने 26 नवंबर 2025 को दिल्ली-एनसीआर प्रदूषण पर सुनवाई के दौरान गंभीर चिंता जताई और दो टूक शब्दों में कहा कि न्यायिक मंच के पास कोई ₹जादू की छड़ी₹ नहीं है जो समस्या तुरंत हल कर दे। उन्होंने इसे स्वास्थ्य आपातकाल बताया और तत्काल निर्देश मांगे ताकि लोगों को साफ हवा मिले। अपनी प्रमुख टिप्पणियां देते हुए सीजेआई ने कहा कि प्रदूषण के कारण एकल नहीं बल्कि बहुआयामी हैं, इसलिए सभी कारणों की पहचान कर विशेषज्ञों से क्षेत्र-विशेष समाधान निकालने होंगे।

चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने प्रदूषण की नियमित निगरानी और सुनवाई पर जोर दिया, क्योंकि दिवाली के बाद मामले गायब हो जाते हैं। इसलिए उन्होंने सरकार की समितियों की समीक्षा का आदेश दिया। साथ ही अगली सुनवाई के लिए 1 दिसंबर 2025 की तिथि मुकर्रर कर दी, जब व्यापक सुनवाई होगी। वहीं, व्यक्तिगत प्रभाव को स्पष्ट करते हुए सीजेआई ने स्वयं बताया कि प्रदूषण से सुबह की सैर बंद कर दी है क्योंकि टहलने के बाद सांस लेने में दिक्कत होती है और शाम को हवा अपेक्षाकृत बेहतर रहती है। कोर्ट वर्चुअल सुनवाई पर विचार कर रहा है। ये बयान समस्या की गंभीरता रेखांकित करते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर वायु प्रदूषण के समाधान के लिए निम्न सिफारिशें मांगी हैं: पहला, प्रदूषण के सभी कारणों की व्यापक पहचान करने और विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों को शामिल करते हुए क्षेत्र-विशेष समाधान निकालने की आवश्यकता पर जोर दिया है। दूसरा, सरकार द्वारा बनाई गई कमेटियों और उनसे मिली रिपोर्टों की समीक्षा करना ताकि उनके कामकाज और प्रभावकारिता को परखा जा सके। तीसरा, प्रदूषण की निरंतर मॉनिटरिंग और एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) की नियमित निगरानी को मजबूत करना। चतुर्थ, तत्काल और दीर्घकालिक उपायों पर ध्यान देना जिससे लोगों को तुरंत और स्थायी रूप से साफ हवा मिले। पांचवां, आगामी सुनवाई में इन उपायों की प्रगति और प्रभाव का आकलन करना। देखा जाए तो यह सिफारिशें प्रदूषण की जटिलता और उसकी बहुदूरी प्रकृति को ध्यान में रखते हुए दी गई हैं, जिनका उद्देश्य तुरंत राहत देना और दीर्घकालिक सुधार सुनिश्चित करना है।

याद दिला दें कि निवर्तमान मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अगुवाई वाली सुप्रीम कोर्ट ने भी प्रदूषण रोकने के लिए एजेंसियों से पहले से तैयारी करने को कहा था, न कि स्थिति बिगड़ने पर प्रतिक्रिया देने को। तब कोर्ट ने निर्माण कार्यों पर

पूर्ण रोक खारिज कर दीर्घकालिक समाधान, जैसे हितधारकों की संयुक्त बैठकें, पर जोर दिया ताकि पर्यावरण और विकास का संतुलन बने। वहीं, चिंताओं की वैधताये को स्पष्ट करते हुए कहा था कि कुछ चिंताएं अत्यधिक वैध हैं क्योंकि वाहन उत्सर्जन दिल्ली-एनसीआर प्रदूषण का प्रमुख कारण (लगभग 30-40%) है और पूर्व-कार्ययोजना की कमी से हर साल GRAP चरण लागू होते हैं। इसलिए कोर्ट का दीर्घकालिक फोकस व्यावहारिक है, क्योंकि अस्थायी उपाय जैसे पराली जलाना या निर्माण रोक असरदार साबित नहीं हुए, जबकि EV प्रोत्साहन और समन्वित प्रयास वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हैं।

समझिए, दिल्ली में प्रदूषण की मौलिक वजह क्या है?

उल्लेखनीय है कि दिल्ली एनसीआर में प्रदूषण की मौलिक वजह मुख्यतः औद्योगिक धुआं, वाहनों से निकलने वाला धुआं, कचरा जलाना, निर्माण कार्य और सड़कों की धूल है। इसके अलावा, उत्तर भारत के निकटवर्ती जिलों से आने वाला प्रदूषण भी दिल्ली की हवा की गुणवत्ता को बेहद प्रभावित करता है। पराली जलाना इस बार दिल्ली के प्रदूषण में अपेक्षाकृत कम योगदान देता है। मुख्य प्रदूषण स्रोत निम्नलिखित हैं-

पहला, औद्योगिक उत्सर्जन और अवैध कचरा जलाना दिल्ली में प्रदूषण का बड़ा कारण हैं। कई बार औद्योगिक और घरेलू कचरे की अवैध जलाने की घटनाएं घनी धुंध बनाने में सहायक होती हैं।

दूसरा, वाहनों से निकलने वाला धुआं प्रदूषण में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दिल्ली में भारी ट्रैफिक जाम और धीमी गति के कारण वाहन ईंधन अधिक जलाते हैं, जिससे जहरीली गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है।

तीसरा, निर्माण स्थलों से निकलने वाली धूल और टूटी सड़कों की धूल भी वायु प्रदूषण में एक बड़ा योगदान देती हैं।

चतुर्थ, आस-पास के एनसीआर इलाकों से आने वाला प्रदूषण भी दिल्ली की हवा को जहरीला बनाता है।

पंचम, पराली और अन्य स्रोतों का योगदान सम्बन्धी हाल की रिपोर्टों के अनुसार, पराली जलाने का दिल्ली के कुल प्रदूषण में केवल लगभग 2% का योगदान है, जो पहले के वर्षों के मुकाबले कम माना गया है।

छठा, दिल्ली में खुले में कचरा जलाना, बायोमास जलाना, व गर्मी के मौसम में खाना पकाने से निकलने वाले धुएं का प्रदूषण में बड़ा हिस्सा होता है।

इस प्रकार, दिल्ली में प्रदूषण का समाधान औद्योगिकीकरण, वाहनों पर नियंत्रण, कचरा प्रबंधन, निर्माण कार्यों की निगरानी, और एनसीआर क्षेत्रीय प्रदूषण नियंत्रण के संयुक्त प्रयासों से ही संभव हो सकता है।

यही वजह है कि दिल्ली में वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) को बढ़ावा देना, पुराने वाहनों पर सख्ती, रेट्रोफिटिंग डिवाइस लगाना और GRAP उपायों का कड़ाई से पालन मुख्य उपाय हैं, जो इसप्रकार हैं:-

पहला, सरकारी नीतियां और पहलः EV नीति 2.0: अगस्त 2026 से नए पेट्रोल, डीजल और CNG दोपहिया वाहनों की रजिस्ट्रेशन पर पूर्ण प्रतिबंध लगेगा। CNG ऑटो रिक्शा को EV से बदलने का लक्ष्य है, साथ ही चार्जिंग स्टेशन बढ़ाए जाएंगे।

दूसरा, पुराने वाहनों पर कार्रवाईः BS-I और BS-III वाहनों (लगभग 37% कुल वाहन) के खिलाफ PMO ने रियल-टाइम ट्रैकिंग, AI-आधारित मॉनिटरिंग और सख्त जुर्माना लगाने के निर्देश दिए हैं।

तीसरा, रेट्रोफिटिंगः DPCC द्वारा BS-III/IV वाहनों में कैटेलिटिक कन्वर्टर डिवाइस लगाने का पायलट प्रोजेक्ट शुरू, जो PM10/PM2.5 को 70% तक कम कर सकता है। IIT दिल्ली और ICAT टेस्टिंग करेंगे।

चतुर्थ, GRAP और अन्य उपायः GRAP चरण-1/2 में सख्ती बढ़ाई गई है, जिसमें पुराने डीजल/पेट्रोल वाहनों पर पाबंदी, कंस्ट्रक्शन रोक और डीजल जनरेटर सीमित करना शामिल है।

पंचम, CNG का उपयोग बढ़ाएं, क्योंकि यह डीजल से बेहतर जलता है और प्रदूषण कम करता है।

छठा, कम सल्फर ईंधन, कैटेलिटिक कन्वर्टर और सख्त उत्सर्जन मानक (जैसे BS-VI) लागू करें।

सातवां, व्यक्तिगत कदमसार्वजनिक परिवहन या कारपूलिंग अपनाएं, पुराने वाहन स्क्रैप करें।EV खरीदने पर सब्सिडी लें और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग करें।

यही वजह है कि दिल्ली में वाहनों से प्रदूषण कम करने वाली पॉलिसी में सबसे जल्दी प्रभाव पुराने वाहनों पर सख्त प्रतिबंध, GRAP के तत्काल उपाय और बॉर्डर पर BS-VI/CNG/EV-only एंट्री दिखाएंगे।

पहला, त्वरित प्रभाव वाली नीतियांः पुराने वाहनों पर तत्काल कार्रवाईः BS-III/BS-I वाहनों पर PMO के निर्देश से रियल-टाइम ट्रैकिंग, AI मॉनिटरिंग और जुर्माना लगाना। ये 37% वाहनों को लक्षित कर तुरंत उत्सर्जन घटाएगा।

दूसरा, GRAP चरण-1/2 सख्तीः पुराने डीजल वाहनों की पाबंदी, डीजल जनरेटर सीमित करना और कंस्ट्रक्शन रोक। हाल ही में GRAP-3 हटने पर भी ये उपाय जारी रहेंगे, जो AQI में तेज सुधार लाते हैं।

तीसरा, बॉर्डर एंट्री प्रतिबंधः नवंबर 2025 से केवल BS-VI, CNG या EV वाहनों को दिल्ली में प्रवेश, ANPR कैमरों से लागू। इससे बाहरी प्रदूषण स्रोत 30-40% कम हो सकते हैं।

चतुर्थ, अन्य तेज उपायः रेट्रोफिटिंग डिवाइसः BS-III/IV वाहनों में कैटेलिटिक कन्वर्टर लगाना, जो PM को 70% तक घटाए। पायलट प्रोजेक्ट तुरंत शुरू हो चुका है।

पंचम, पीयूसीसी सेंटर ऑडिट और ट्रैफिक सिस्टमः द्विमासिक जांच से अनुपालन बढ़ेगा, स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम जाम कम कर उत्सर्जन घटाएगा।

निःसन्देह, ये बदलाव 1-4 सप्ताह में AQI में 20-50 अंकों का सुधार दिखा सकते हैं, बशर्ते कड़ाई से लागू हों।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

संविधान दिवस पर वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ ख़ान का संदेश - संविधान तभी प्रभावशाली बनता है, जब नागरिक उसके अनुसार आचरण करें

तुम्हारी हर तकलीफ का मैं मुकम्मल जवाब हूँ, कभी वक्त मिले तो पढ़ना मैं भारत का संविधान हूँ।

आगरा, संजय साग़र सिंह। संविधान दिवस के अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ ख़ान ने कहा कि भारत यदि संविधान में निहित मूल्यों, सिद्धांतों और कर्तव्यों का अक्षरशः पालन करे, तो वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य न सिर्फ संभव है, बल्कि सुनिश्चित भी है। भारत को 2047 तक विकसित देश बनाना हमारा साझा संकल्प है, और यह तभी साकार होगा जब हम संविधान को पूरी निष्ठा से अपनाएँ और उसे व्यवहार में उतारें।

मुसरफ ख़ान ने कहा कि कोई भी संविधान चाहे जितना श्रेष्ठ क्यों न हो, यदि उसे लागू करने वाले लोग ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाले न हों, तो उसके परिणाम भी सकारात्मक नहीं हो सकते। उन्होंने स्पष्ट किया कि संविधान तभी प्रभावशाली बनता है, जब नागरिक उसके अनुसार आचरण करें। संविधान दिवस हमें अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों की भी याद दिलाता है। भारतीय संविधान देश को संप्रभु, एकता और लोकतांत्रिक गणराज्य की पहचान देता है और नागरिकों को व्यापक स्वतंत्रताएँ सुनिश्चित करता है।

संविधान एक जीवंत दस्तावेज़, भविष्य का मार्गदर्शक

वरिष्ठ समाजसेवी ने भारतीय संविधान की सार्वभौमिकता और उसकी जनकल्याणकारी भावना की सराहना करते हुए कहा कि संविधान मात्र कानूनी प्रावधानों का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन जीने का मार्गदर्शन है। यदि देश संविधान को पूरी ईमानदारी से लागू करे, तो भारत न्याय, समानता, विकास और मानवता का वैश्विक उदाहरण बन सकता है। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्होंने कहा कि "भारत रत्न डॉ. अंबेडकर जी का संविधान दुनिया के श्रेष्ठतम लोकतांत्रिक दस्तावेज़ों में से एक है, जो हर नागरिक को समान अधिकार और सम्मान की गारंटी देता है।

महिला अधिकारों और राजनीतिक सशक्तिकरण पर बल

श्री ख़ान ने आगे कहा कि डॉ. अंबेडकर जी ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए महिलाओं के अधिकारों और सम्मान के लिए ऐतिहासिक पहल कीं, उनका यह महत्वपूर्ण योगदान भारत के सामाजिक और राजनीतिक एकीकरण में निर्णायक सिद्ध हुआ है। आज महिला नेतृत्व बढ़ने से लोकतांत्रिक मूल्य और अधिक सशक्त हो रहे हैं।

"भारत आज विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र"

उन्होंने कहा कि संविधान निर्माता की दूरदृष्टि और समर्पण ने भारत को विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र बनाया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि चुनावों में महिलाओं और युवाओं की बढ़ती भागीदारी देश के लोकतांत्रिक ढांचे को और मजबूत कर रही है। उन्होंने संविधान की तीनों शक्तियों विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय संविधान सात दशकों से अधिक समय से हर चुनौती के बीच अपनी मजबूती और प्रासंगिकता साबित करता आया है।

संविधान की रक्षा हर नागरिक का दायित्व

वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ ख़ान ने कहा कि संविधान हर नागरिक को मौलिक अधिकार प्रदान करता है और किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध करता है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि संविधान केवल अधिकारों का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि कर्तव्यों की भी प्रेरणा देता है। संविधान किसी भी मजहब या पंथ को बढ़ावा नहीं देता, बल्कि राष्ट्र को सर्वोपरी मानता है। देश की एकता, संप्रभुता और अखंडता बनाए रखने के लिए हर नागरिक को अपने कर्तव्यों का पालन करना आवश्यक है।

भावनात्मक शब्दों में उन्होंने कहा तुम्हारी हर तकलीफ का मैं मुकम्मल जवाब हूँ, कभी वक्त मिले तो पढ़ना... मैं भारत का संविधान हूँ।

अंत में राष्ट्रवासियों को संविधान दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए मुसरफ ख़ान ने कहा कि यह दिवस डॉ. अंबेडकर जी के उस संघर्ष और संकल्प का प्रतीक है, जिसने भारत के वंचित और दबे-कुचले वर्गों को नए अधिकारों, सम्मान और अवसरों का मार्ग दिखाया। उन्होंने कहा कि संविधान कोई सामान्य दस्तावेज नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा है, जो हमें बंधुत्व, सामुदायिक सद्भाव, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है। संविधान की रक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

यूपी में बड़ा फैसला! अब आधार कार्ड से नहीं चलेगा काम!

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार ने आधार कार्ड को जन्म प्रमाण पत्र या अधिकृत जन्म तिथि के सबूत के रूप में मान्य करने पर रोक लगा दी है।

उत्तर प्रदेश प्लानिंग विभाग के विशेष सचिव अमित सिंह बंसल ने सभी विभागों को आदेश जारी कर स्पष्ट निर्देश दिए हैं की

1. आधार कार्ड के साथ कोई जन्म प्रमाण पत्र अटैच नहीं होता
2. इसलिए आधार को जन्म प्रमाण पत्र के तौर पर स्वीकार ना किया जाए

अब सरकारी कामों में जन्म तिथि के लिए केवल मान्य जन्म प्रमाणपत्र ही मान्य होगा, आधार कार्ड को डीओबी प्रूफ के तौर पर नहीं माना जाएगा, इस आदेश के जारी होने से यूपी में लाखों लोगों पर पड़ेगा इसका असर और आवेदन वेरिफिकेशन प्रोसेस में होगा बड़ा बदलाव !

पत्रांक: 392 /[illegible]/7-363/107944/[illegible]नि0प्र0/2024

प्रेषक,
विशेष सचिव,
नियोजन विभाग,
उ0प्र0 शासन।

सेवा में,
समस्त अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

[illegible] नियोजन प्रभाग (नियोजन विभाग) लखनऊ दिनांक 24 नवम्बर, 2025

विषय: आधार कार्ड की अनुमन्यता जन्म तिथि के प्रमाण के रूप में न होने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

कृपया उप निदेशक, भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यू0आई0डी0ए0आई0), क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के पत्रांक 16013/4/2020-RO-LKO/5416 दिनांक 31.10.2025 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जिसके माध्यम से अवगत कराया गया है कि आधार कार्ड जन्म तिथि का अनुमन्य प्रमाण नहीं है। तथापि राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा अभी भी आधार कार्ड को जन्म तिथि के प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। तत्क्रम में राज्य सरकार के समस्त विभागों को उक्त सम्बन्ध में अवगत कराने की अपेक्षा की गयी है।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया आधार कार्ड को जन्म तिथि के प्रमाण के रूप में स्वीकार न किये जाने हेतु संबंधित को निर्देशित करने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

Digitally signed by AMIT SINGH BANSAL
Date: 24-11-2025 16:31:17

(अमित सिंह बंसल)
विशेष सचिव।

पत्रांक एवं दिनांक यथोक्त।
प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ प्रेषित:-
1. निजी सचिव, प्रमुख सचिव, नियोजन विभाग, उ0प्र0 शासन।
2. उप महानिदेशक, यू0आई0डी0ए0आई0 क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ।

द एमिनेंट रिसर्च, नई दिल्ली के द्वारा सम्मानित हुईं "पंजाब रत्न" मनप्रीत कौर

सेवा कार्यों के लिए मिला 'टॉप आइकन अवार्ड 2025"

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ठाकुर बांके बिहारी महाराज की परम्भक्त एवं संकट मोचन सेना (महिला प्रकोष्ठ), पंजाब की यशस्वी अध्यक्ष, प्रख्यात समाजसेवी ₹पंजाब रत्न₹ श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) इन दिनों समाजसेवा के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दे रही हैं।ब्रज वृन्दावन के प्रति उनका समर्पण व सेवाभाव अति प्रशंसनीय व सराहनीय है।उनके सेवाकार्यों की धूम समूचे देश में है।उन्होंने समूचे देश में विभिन्न सेवा प्रकल्प संचालित कर संतों, निर्धनों व निराश्रितों की सेवा करने का संकल्प लिया हुआ है।उनके द्वारा ₹मां सीता रसोई₹ व ₹मां राधा रसोई₹ संचालित कर असंख्य लोगों को निःशुल्क भोजन व फलाहार उपलब्ध कराया जा रहा है।साथ ही वे देश के विभिन्न प्रांतों में अधिकाधिक अभावग्रस्तों की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने का कार्य कर रही हैं। उनके द्वारा किन्हीं निर्धन बच्चों को उनकी शिक्षा व वस्त्र आदि में, तो किन्हीं को उनकी चिकित्सा व मकान निर्माण आदि में आर्थिक सहयोग दिया जा रहा है।

प्रख्यात समाजसेवी श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) के इन्हीं सेवा कार्यों व समर्पण भाव को देखते हुए द्वारिका, नई दिल्ली के होटल रेडिसन में द एमिनेंट रिसर्च, नई दिल्ली के द्वारा उन्हें सम्मानित करके 'टॉप आइकन अवार्ड 2025' प्रदान किया है।उन्हें यह सम्मान प्रख्यात फिल्म अभिनेता चंकी पांडेय ने प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं अंग वस्त्र आदि भेंट करके दिया।

ज्ञात हो कि 'पंजाब रत्न' श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) को इससे पूर्व भीअनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। ब्रज सेवा संस्थान, वृन्दावन के अध्यक्ष एवं प्रख्यात साहित्यकार 'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने श्रीमती मनप्रीत कौर को 'टॉप आइकन अवार्ड 2025' मिलने पर हर्ष व्यक्त किया है।

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा एवं तेलंगाना एंटी-नारकोटिक्स ब्यूरो का संयुक्त अभियान

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच और तेलंगाना एंटी-नारकोटिक्स ब्यूरो (TGNAB), हैदराबाद ने संयुक्त रूप से एक व्यापक और रणनीतिक अभियान चलाकर दिल्ली-NCR में सक्रिय एक बड़े अंतरराष्ट्रीय अफ्रीकी ड्रग कार्टेल का सफलतापूर्वक भंडाफोड़ किया है। यह कार्रवाई दोनों राज्यों के बीच अब तक के सबसे प्रभावी और बड़े समन्वित अभियानों में से एक के रूप में उभरकर सामने आई है, जिसमें कई दिनों के तकनीकी व मानवीय इनपुट, निगरानी, गहन विश्लेषण और सावधानीपूर्वक योजना के साथ दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों—मेहरौली, संतगढ़, नीलोठी, प्रताप एनक्लेव, मुनीरका और ग्रेटर नोएडा—में एक साथ सर्च और रेड की गईं। इस पूरे अभियान की शुरुआत तब हुई जब तेलंगाना एंटी-नारकोटिक्स ब्यूरो ने अपने दर्ज मुकदमे FIR No. 08/25 के संदर्भ में WR-I, क्राइम ब्रांच को सूचना दी कि प्रमुख आरोपी और उनके सहयोगी दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर छिपे हुए हैं। सूचना की पुष्टि होने के बाद दिल्ली पुलिस और TGNAB ने कई दिनों तक मेहनत करते हुए ठिकानों को चिन्हित किया और फिर एक well-coordinated प्लान के तहत टीमें गठित की गईं। इस अभियान का नेतृत्व तेलंगाना पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया गया जबकि दिल्ली पुलिस की ओर से ACP/WR-I श्री सतेंद्र मोहन के पर्यवेक्षण और DCP/Crime Branch श्री हर्ष इंदोरा, IPS की समग्र देखरेख में कार्रवाई को अंजाम दिया गया। ऑपरेशन टीम में इंस्पेक्टर अनिल मलिक, इंस्पेक्टर अखिलेश वाजपेयी, इंस्पेक्टर महिपाल सिंह, इंस्पेक्टर अक्षय गहलोत, इंस्पेक्टर अरविंद, SI अमित, SI अंकित, SI गौरव, SI प्रदीप, W/SI मीनू, ASI सत्यवीर, W/ASI नरिंदर कौर सहित कई अनुभवी अधिकारी शामिल थे, जिन्होंने कई स्थानों पर एकसाथ छापेमारी कर इस अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की जड़ों को बड़ी मजबूती से उखाड़ फेंका।

रेड के दौरान सबसे प्रमुख बरामदगी मोहन गार्डन, उत्तम नगर से हुई जहां 35 वर्षीय युगांडाई महिला जैनब क्योबुतंगी @ पामेला को गिरफ्तार किया गया। उसकी तलाशी में 195 ग्राम कोकीन, 24 ग्राम MDMA और 40,500 नकद बरामद हुए। इस आधार पर FIR No. 344/25 U/s 21/22/25 NDPS Act दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया गया। इसी तरह तिलक नगर के संतगढ़ इलाके में 49 वर्षीय नाइजीरियाई महिला बेकी @ बेकी को पकड़ा गया जिसके कब्जे से 5,209 Ecstasy (MD) गोलियाँ, 35.46 ग्राम कोकीन और 78,000 नकद बरामद हुए।

यह बरामदगी दर्शाती है कि वह बड़े स्तर पर नशीले पदार्थों के वितरण में शामिल थी। जब पूछताछ में उसने बताया कि उसने हाल ही में 'Frank' नाम के नाइजीरियाई नागरिक को सामान सप्लाई किया है, तो टीम ने तुरंत चंदर विहार, निहाल विहार में छापा मारा और उसके कब्जे से 60 MD Pills जब्त कर उसे गिरफ्तार किया गया। Frank पूर्व में भी NDPS और Foreigner Act के केस FIR No. 376/22 में जेल जा चुका है, और इस बार भी उसके पास से 40.33 ग्राम कोकीन बरामद हुई। दूसरी महत्वपूर्ण कार्यवाही locked premises पर की गई जहाँ तेलंगाना में वांछित आरोपी जीन अहमद @ गॉडविन के किराये के मकान की तलाशी में 106.38 ग्राम कोकीन और 107.83 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। यह स्थान कार्टेल के लिए एक सुरक्षित 'स्टॉक प्वाइंट' के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। इस बरामदगी पर FIR No. 345/2025 U/s 21/25 NDPS Act दर्ज कर कार्रवाई की गई। ये सभी बरामदगियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि दिल्ली में विदेशी ड्रग पेडलरों का एक संगठित नेटवर्क सक्रिय था, जो अलग-अलग इलाकों में छिपे रूप में गतिविधियाँ चला रहा था।

विदेशी पेडलर्स के साथ-साथ भारतीय फसिलिटेटर्स को पकड़कर दिल्ली पुलिस ने इस कार्टेल की आर्थिक और लॉजिस्टिक रीढ़ को भी ध्वस्त कर दिया। गिरफ्तार भारतीय फसिलिटेटर्स में बदरुद्दीन, जफर, सामा उमर, तितिंग गुइटे, एस. जोशुआ गुइटे और लाल खोसेई सेलियन शामिल हैं। ये सभी तेलंगाना पुलिस की FIR No. 08/25 में वांछित थे और ड्रग मनी की हेराफेरी, अवैध फंडिंग, SIM कार्ड सप्लाई, गुमनाम कम्युनिकेशन चैनल तैयार करने और लॉजिस्टिक सहायता देकर कार्टेल को मजबूत करते थे। बदरुद्दीन और जफर कार्टेल के मुख्य फाइनेंशियल मैनेजर के रूप में काम करते थे, जो ड्रग्स की कमाई को सुरक्षित चैनलों से आगे पहुंचाते थे। वहीं सामा उमर, जो बदरुद्दीन की पत्नी है, लॉजिस्टिक और आंतरिक समन्वय में सहायता देकर पूरे नेटवर्क की बैकएंड ऑपरेशंस को चलाती थी। दूसरी ओर तितिंग गुइटे, एस. जोशुआ गुइटे और लाल खोसेई सेलियन SIM कार्ड सप्लाई चेन के प्रमुख ऑपरेटर थे, जो विदेशी नागरिकों को प्रॉक्सी और फर्जी पहचान पर सिम उपलब्ध कराते थे ताकि वे लगातार मोबाइल नंबर बदलकर पुलिस की निगरानी से बच सकें। यह पूरा गिरोह विदेशी पेडलर्स के लिए एक मजबूत 'सपोर्ट सिस्टम' तैयार करता था, जिसकी वजह से कार्टेल लंबे समय से सक्रिय रह सका। सभी गिरफ्तार आरोपियों को आगे की कानूनी कार्रवाई हेतु TGNAB को सौंप दिया गया है।

पूरी कार्रवाई के दौरान पुलिस को 30 विदेशी नागरिक (12 महिलाएँ और 18 पुरुष) अवैध रूप से दिल्ली में रहते हुए मिले। ये सभी अलग-अलग किराए के मकानों में बिना वैध दस्तावेजों के रह रहे थे और ड्रग नेटवर्क को जमीन स्तर पर सक्रिय रखने का काम कर रहे थे। इनमें से 18 पुरुषों को Deportation Facility भेज दिया गया है जबकि 12 महिलाओं के खिलाफ FRRO के साथ समन्वय में कानूनी प्रक्रिया चल रही है। इस कार्रवाई ने स्पष्ट कर दिया कि दिल्ली-NCR अवैध विदेशी नागरिकों के लिए ड्रग नेटवर्क चलाने का एक सुरक्षित ठिकाना बन रहा था, जिसे तोड़ने के लिए यह संयुक्त अभियान अत्यंत आवश्यक था।

यह संयुक्त ऑपरेशन अंतरराष्ट्रीय ड्रग तस्करी के एक बड़े नेटवर्क को जड़ से तोड़ने में मील का पत्थर साबित हुआ है। यह नेटवर्क कोकीन, MDMA, हेरोइन और एक्स्टेसी जैसी उच्च-मूल्य नशीली पदार्थों की तस्करी में शामिल था और अपने संचालन के लिए अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों को कैरियर के रूप में उपयोग करता था। यह कार्टेल किराए के घरों में छिपकर काम करता था, वहीं भारतीय फसिलिटेटर्स के जरिए SIM कार्ड सप्लाई, सुरक्षित कम्युनिकेशन, ड्रग मनी की आवाजाही और नेटवर्क के विस्तार में सहायता मिलती थी। इस संयुक्त कार्रवाई ने एक ही बार में इस नेटवर्क के सप्लाई चेन, फंडिंग चैनल और कम्युनिकेशन सिस्टम तीनों को चोट पहुंचाई है। दिल्ली पुलिस और तेलंगाना पुलिस ने पुनः स्पष्ट किया है कि ड्रग तस्करी और अवैध विदेशी नागरिकों पर कार्रवाई उनकी प्राथमिकताओं में शीर्ष पर रहेगी। जांच एजेंसियाँ अब नेटवर्क के बचे हुए सदस्यों, उनके अंतरराज्यीय संपर्कों, फंडिंग स्रोतों और विदेशी लिंक की पहचान के लिए आगे की जांच जारी रखेंगी, ताकि इस पूरे कार्टेल को पूर्ण रूप से उखाड़ फेंका जा सके।

वैदिक काल से ही होता रहा नारियों का सम्मान : मंजू पारीक

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। नगर निगम बालिका इंटर कॉलेज में इनर व्हील क्लब ऑफ़ वृंदावन, दिव्य शक्ति के तत्वावधान में भारत सरकार के नारी सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत सशक्त नारी सशक्त भारत कार्यक्रम क्लब की अध्यक्ष निशा शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ 1 जिसमें मथुरा जनपद के चार प्रमुख विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं का सम्मान एवं अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डिसट्रिक्ट 311 की आइ.एस.सो. मंजू पारीक ने कहा कि वैदिक काल से ही नारियों का सम्मान भारत की परंपरा रहा है। भारत की नारियों में आपला, सीता, गार्गी, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अहिल्याबाई, द्रौपदी आदि ऐसी महिलाएं हुई हैं,जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समाज को एक नई दिशा दी है।आज भी देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं ने अपनी योग्यता के बल पर देश को अपनी सेवा के माध्यम से दिशा दी है1 अध्यक्ष निशा शर्मा ने बताया कि सम्मान समारोह में चिकित्सा के क्षेत्र में डॉक्टर वर्तिका किशोर, न्याय के क्षेत्र में प्रतिभा शर्मा, शिक्षा के क्षेत्र में पूनम चौबे और पुलिस विभाग में कार्यरत इस्मिति पंवार को ₹मंडलीय आदर्श नारी दुर्गा शक्ति₹ सम्मान से अलंकृत किया गया। साथ ही उन्हें प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह और पटका-प्रसाद आदि भेंट किया गया। सम्मानित हुई प्रमुख शिक्षाविद् पूनम चौबे ने कहा के शिक्षा के बल पर राष्ट्र को उन्नतशील बनाया जा सकता है1 अधिवक्ता प्रतिभा शर्मा ने बताया कि बालिकाओं पर होने वाले अपराधों व परेशानियों को किस प्रकार से कानूनी सहायता मिल सकती है। पुलिस विभाग में कार्यरत स्मिता पंवार ने महिला पुलिस के कर्तव्य के बारे में जानकारी दी। डॉक्टर वर्तिका किशोर ने सर्वाइकल कैंसर चिकित्सा के बारे में सैकड़ो बालिकाओं का ज्ञानवर्धन किया 1 इस अवसर पर कार्यक्रम में संयोजिका नीरजा शर्मा, पूर्व अध्यक्ष संध्या शर्मा, कोषाध्यक्ष शशि शर्मा, ममता श्रीवास्तव, सारिका,मनीषा, पुष्प लता, रेनू,छाया, श्रीं शांडिल्य, इशिका आचार्य व संध्या शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।

आरएसएस की अमरीका में लॉबिंग

(आलेख : राम पुनियानी, अनुवाद : अमरीश हरदेनिया)

आरएसएस के शताब्दी वर्ष में इस संगठन के बारे में एक ऐसा तथ्य सामने आया है, जिसकी जानकारी बहुत लोगों को नहीं थी। कई यूट्यूब चैनलों पर चर्चा है कि आरएसएस ने अमरीका में एक लॉबिंग फर्म की सेवाएं लेना शुरू की हैं। दिलचस्प बात यह है कि यही फर्म पाकिस्तान के लिए भी लॉबिंग कर रही है। स्मरणीय है कि नरेन्द्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे, तब उन्होंने भी अपनी छवि उजली बनाने के लिए एक फर्म की सेवाएं लीं थीं. ...रवाशिंगटन स्थित फर्म एपीसीओ वर्ल्डवाईड को अगस्त 2007 में अहम्विधानसभा चुनाव के ठीक पहले दुनिया के सामने मोदी की छवि बेहतर बनाने के लिए नियुक्त किया गया था.'' संयोग की बात है कि एपीसीओ, जो एक अमरीकी कानूनी फर्म की सहायक फर्म है, ने कई तानाशाहों की छवि सुधारने का काम भी किया था। यहां तक कि इस फर्म की सेवाएं लेने वाले देशों के लिए जब-जब जंग फायदे का सौदा नज़र आई, तब उसने जंग के पक्ष में भी अभियान छेड़े थे। ऐसा लगता है कि लॉबिंग छवि को उजला बनाने के अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। लॉबिंग से रसही सामूहिक समझर निर्मित होती है और रसहमति का उत्पादनर करने में मदद मिलती है। 'सहमति के उत्पादन' का सिद्धांत प्रसिद्ध मानवाधिकार कार्यकर्ता नोएम चोमोस्की ने प्रतिपादित किया था।

"द प्रिंट" और कई अन्य स्त्रोतों ने खबर दी है कि समाचार सेवा रप्रिज्मर द्वारा की गई पड़ताल के मुताबिक इस फर्म को अमरीकी सीनेट, हाऊस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव्स और अमरीकी अधिकारियों के बीच आरएसएस की लॉबिंग करने के लिए 3.30 लाख डालर दिए गए हैं। इस अमरीकी समाचार सेवा ने जो जानकारियां जुटाई हैं, उनके मुताबिक 2025 की तीन शुरूआती तिमाहियों के दौरान इस रकम के एक बड़े हिस्से का भुगतान किया गया। प्रिंट द्वारा देखे गए कई सार्वजनिक दस्तावेजों से पता लगता है कि आरएसएस ने 3 मार्च से इस फर्म के सेवाएं लेना शुरू कियार।

इस धनराशि का स्त्रोत क्या है? आरएसएस एक अपंजीकृत संस्था है और उसका दावा है कि उसकी आय का एकमात्र स्त्रोत 'गुरू दक्षिणा' है! एक अपंजीकृत संस्था द्वारा अमरीका में बड़ी रकम खर्च करना आम घटना नहीं है। आरएसएस के श्री अंबेकर ने इस खबर का खंडन किया है, मगर यह जानकारी कंपनियों की आधिकारिक वेबसाईटों और अमरीकी सीनेट की वेबसाईट पर भी उपलब्ध है। वह इसलिए, क्योंकि अमरीका में कंपनियों के लिए विदेशी स्त्रोतों से प्राप्त राशि की घोषणा करना अनिवार्य है।

इसके पहले इस अपंजीकृत संस्था की जांच आयकर से जुड़े मामलों में की गई थी। इसके प्रकरण की जांच करने वाले न्यायाधिकरण ने कहा था, रगुरू दक्षिणा की परंपरा कृतज्ञता के जिस पवित्र भाव पर आधारित है, उसे महसूस करते हुए न्यायाधिकरणों ने आरएसएस द्वारा इस तरह एकत्रित की गई धनराशि पर कर में छूट दी थी।र किंतु गुरु दक्षिणा का मूल चरित्र उस समय पूरी तरह से बदल जाता है, जब 'गुरू' इस निधि का इस्तेमाल एक विदेशी संस्था को एक विदेशी सरकार में अपनी लॉबिंग करने के लिए करता है... तब भी जब हम 'लॉबिंग' की व्याख्या विदेशी सरकारी अधिकारियों को 'शिक्षित' करने के रूप में करें''।

आखिर लोगों को बांटने वाली यह संस्था - जो कुछ साल पहले तक साईलेंट मोड में काम करने में भरोसा रखती थी - को अमरीकी कंपनी की सेवाएं लेने और किसी मध्यस्थ के जरिए उसे अमरीकी नीति-निर्धारकों और वहां की जनता के समक्ष अपनी छवि बनाने के लिए धनराशि का भुगतान करने की जरूरत क्यों पड़ी? तथ्य यह है कि आरएसएस-भारतीय जनसंघ-भाजपा की नीतियां मोटे तौर पर सदैव और विशेषकर 1950 और 1960 के दशकों में अमरीकी नीतियों के अनुरूप रही हैं। इन्होंने अमरीका के वियतनाम पर हमले का समर्थन किया, दुनिया के विभिन्न स्थानों पर अमरीकी आक्रमणों को सही बताया और उस दौर में भारत सरकार पर अमरीका-समर्थक नीतियां अपनाने का दबाव डाला, जब भारत गुटनिरपेक्ष था और सोवियत रूस, जिसे पश्चिम अपना पक्का दुश्मन मानता था, समेत कई देशों की मदद से आधुनिक संस्थानों की स्थापना कर लाभान्वित हो रहा था।

कई भारतीय, जो देशभक्त होने का ढोंग करते हैं, लेकिन डालर के लालच में अमरीका में बसे हुए हैं, अपने मूल देश के संस्कारों को बचाए रखने और अपनी नई पीढ़ी में ये संस्कार डालने हेतु इस दक्षिणपंथी संस्था के समर्थक हैं और थे। इनमें से कई घोर आरएसएस-भाजपा समर्थक अमरीका में उच्च राजनैतिक पदों पर आसीन हैं। ऐसे में इस तरह की लॉबिंग की जरूरत ही क्या है?

बात यह है कि कुछ नए हालात पैदा हुए हैं, जिनके चलते यह संस्था ऐसा करने को बाध्य हुई है। पहला यह है कि आरएसएस स्वयं को अमरीका-समर्थक के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। यह इस तथ्य के बावजूद कि हाल में भारत कई मामलों में अमरीकी विदेश नीति का अनुसरण नहीं कर रहा है। इससे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि कई अमरीकी संस्थाएं, जो सरकार का हिस्सा नहीं हैं या सारे विश्व में मानवाधिकारों की स्थिति की निगरानी करती हैं, भारत में मानवाधिकारों के हनन पर रोशनी डाल रही हैं और आरएसएस के असमानता-समर्थक रवैये की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित करा रही हैं। आरएसएस, हिन्दू स्वयंसेवक संघ (एचएसएस) के नाम से अमरीका में सक्रिय है। भारतीय मूल के हिन्दुओं की एक अन्य संस्था है 'हिन्दूज़ फॉर ह्यूमन राईट्स' जो उदार मूल्यों की पक्षधर है।

अमरीका में कार्यरत कई अन्य संगठन भी संघ परिवार की कारगुजारियों पर विस्तृत रपटें जारी कर रहे हैं। 'द इंडियन रिलीजियस फ्रीडम रिपोर्ट-2024' में भारत में घटती हुई धार्मिक स्वतंत्रता का विवरण दिया गया है : रस- 2023 में भारत में धार्मिक स्वतंत्रता में कमी आने का क्रम जारी रहा। भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार ने भेदभावपूर्ण राष्ट्रवादी नीतियों को मजबूती दी, नफरती बातों को हवा दी और सांप्रदायिक हिंसा पर रोक नहीं लगाई। इस सांप्रदायिक हिंसा से सबसे ज्यादा प्रभावित मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, दलित, यहूदी और आदिवासी हुए। गैरकानूनी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए), विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए), नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) व धर्मान्तरण और गौवध से संबंधित कानूनों का इस्तेमाल मनमाने ढंग से लोगों को हिरासत में लेने के लिए किया गया। धार्मिक अल्पसंख्यकों और उनके हकों की बात करने वालों को निशाना बनाया गया।र (यूएस कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम – यूएससीआईआरएफ़ की रिपोर्ट से)।

प्रतिष्ठित रगर्स सेंटर फॉर सिक्यूरिटी ऑफ़ रेस एंड राइट्स ने डेनबर व कोलंबिया विश्वविद्यालयों के अध्येताओं के सहयोग से नफरत, सांप्रदायिक राष्ट्रवाद और हिंसा फैलाने में संघ परिवार की भूमिका पर एक विस्तृत रपट तैयार की है। यह संस्था 9/11 (2001) के हमले के बाद से ही मुस्लिम, अरब और दक्षिण एशियाई समुदायों के हालात पर नज़र रख रही है। ये समुदाय उस हमले के बाद से ही भेदभाव और पूर्वाग्रहों के शिकार रहे हैं। विविधताओं से भरे इन समुदायों के बारे में जानकारी के अभाव के चलते, उनकी गलत छवि प्रस्तुत की जा रही हैं, उन्हें एकसार बताया जा रहा है और उन्हें और इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ा जा रहा है। 'द सेंटर फॉर सिक्यूरिटी, रेस एंड राइट्स' धर्म और नस्ल से परे, अरब, अफ़्रीकी और दक्षिणी एशियाई मूल के लोगों के प्रति नफरत और डर के भाव और इस्लामोफोबिया के मूल में जो संरचनात्मक और प्रणालीगत कारण हैं, उनसे निपटने के लिए काम कर रही है। इसकी रिपोर्ट में अमरीका में हिंदुत्व की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है, विशेषकर इस दृष्टि से कि हिंदुत्ववादी गतिविधियाँ किस तरह समानता और बहुलतावाद के लिए नस्लीय-राष्ट्रवादी खतरा हैं। यह बताती है कि किस तरह मुसलमानों और अरबों का दानवीकरण हो रहा है और उनके बारे में किस तरह की नफरती बातें कही जा रही हैं।

अमरीका में भी हिंदुत्व चिंता का विषय है। इस रपट में हिन्दुत्ववादियों की उनके एजेंडा से जुड़ी गतिविधियों को उजागर किया गया है। रपट में बताया गया है कि किस तरह हिन्दू राष्ट्रवादी समूह अमरीका में हिन्दू धर्म के संकीर्ण और राजनीति पर आधारित संस्करण को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके अलावा, हिन्दुत्ववादी, ऊंची जातियों के वर्चस्व और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पैरोकार हैं और अन्य धर्मों के प्रति असहिष्णुता का भाव रखते हैं।

यह महत्वपूर्ण रपट, एचएचएस और व्हीएचपीए जैसी संस्थाओं की भूमिका पर प्रकाश डालती है, जो बाल विहार और बाल गोकुलम जैसे समर कैंपों और युवाओं के लिए कार्यक्रमों का इस्तेमाल बच्चों के मन में हिंदुत्व के मूल्य बिठाने के लिए करते हैं। वे उनके मन में गैर-हिन्दुओं के प्रति पूर्वाग्रह पैदा कर रहे हैं और जातिगत ऊंच-नीच को मजबूती दे रहे है।

इस तरह की रपटों और अमरीका में हिंदुत्व के बढ़ते विरोध के चलते ही शायद आरएसएस को अपनी छवि सुधारने के लिए लॉबिंग फर्म की सेवाएं लेने की ज़रुरत पड़ी है।

(लेखक आईआईटी मुंबई में पढ़ाते थे और सेंटर फॉर स्टडी ऑफ़ सोसाइटी एंड सेकुलरिज्म के अध्यक्ष हैं।)

बहुपत्नीत्व अब इतिहास असम ने बदल दी सदियों की परंपरा

27 नवंबर 2025 का दिन असम के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाएगा। इसी दिन विधानसभा ने भारी बहुमत से "असम प्रोहिबिशन ऑफ़ पॉलीगैमी बिल–2025" पारित कर वह कदम उठाया, जिसकी गूंज आने वाले दशकों तक सुनाई देगी। इस कानून के तहत अब कोई भी व्यक्ति जीवित पत्नी के रहते दूसरी शादी करेगा तो उसे सात वर्ष का कारावास भुगतना होगा, और यदि यह शादी छिपाकर की गई है तो सजा बढ़कर दस वर्ष तक पहुंच जाएगी, साथ ही अलग से भारी जुर्माना भी देना होगा। दंड केवल जेल और जुर्माने तक सीमित नहीं है—दोषी को जीवनभर किसी भी सरकारी नौकरी, चाहे वह चपरासी स्तर की हो या आईएएस जैसी उच्च सेवा से वंचित कर दिया जाएगा।

साथ ही, पंचायत से लेकर नगर निगम तक किसी भी पद का चुनाव नहीं लड़ सकेगा और राज्य की सभी कल्याणकारी योजनाएँ, पेंशन तथा राशन सुविधाएँ भी तुरंत बंद हो जाएँगी। इतना ही नहीं, यदि कोई काज़ी, मौलवी, पंडित या सरपंच ऐसी गैर-कानूनी शादी संपन्न कराता है, तो उसे दो साल की सजा और डेढ़ लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जाएगा, जबकि माता-पिता या रिश्तेदार यदि विवाह से जुड़े तथ्य छिपाते पाए जाते हैं, तो उन पर भी एक लाख रुपये तक का दंड तय है। यह कानून हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और सिख—सभी धर्मों पर समान रूप से लागू होगा; हाँ, छठी अनुसूची के कुछ जनजातीय क्षेत्रों को यह अधिकार दिया गया है कि वे अपनी स्थानीय परिषदों के माध्यम से इसी प्रकार का समान कानून लागू करने का निर्णय स्वयं ले सकते हैं।

मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने विधानसभा में कहा, "यह बिल किसी धर्म के विरुद्ध नहीं, बल्कि उन कुरीतियों के खिलाफ है जिन्होंने सदियों से औरत को बंधन में रखा है। तुर्की, ट्यूनीशिया जैसे कई मुस्लिम देशों में पॉलीगैमी पहले से प्रतिबंधित है, और पाकिस्तान में भी दूसरी शादी के लिए पहली पत्नी की लिखित अनुमति जरूरी है। असम ने केवल न्याय और सच्चे धर्म का साथ दिया है।" उन्होंने साफ कहा कि यही यूनिफॉर्म सिविल कोड की पहली सीढ़ी है, और 2026 में सरकार दोबारा बनी तो पूरा यूसीसी लागू किया जाएगा।

सच यह है कि बहुपत्नीत्व कभी किसी का "धार्मिक अधिकार" नहीं था, यह हमेशा पुरुष की सुविधा और स्त्री की मजबूरी का हथियार रहा। पहली पत्नी को भावनाओं सहित कैद कर देना, उसके बच्चों को आर्थिक-मानसिक रूप से तोड़कर दूसरी-तीसरी शादी रचाना—क्या यही मर्दानगी है? एनएफएचएस-5 बताता है कि पूर्वोत्तर के हजारों परिवार आज भी इसी जहर से धीमे-धीमे टूट रहे हैं। पहली पत्नी के पास न तलाक का अधिकार बचता, न गुजारा भत्ता, न वारिस में बराबरी; बच्चे नई शादियों की दहलीज पर ही पिस जाते हैं। असम ने निर्णायक निर्णय लिया—अब बस। अब औरत का हक, किसी भी धर्म की आड़ से ऊपर रखा जाएगा।

यह कानून केवल सजा का हथियार नहीं, समाज को नई नींव देने वाला क्रांतिकारी दस्तावेज है। पीड़ित महिला को तुरंत मुआवजा, मुफ्त कानूनी सहायता और सरकारी सुरक्षा कवच मिलेगा। पुलिस को बिना वारंट गिरफ्तारी का अधिकार होगा, जबकि दोबारा अपराध करने वाले को दोगुनी—यानी बीस वर्ष तक—की कठोर सजा भुगतनी पड़ेगी। ये प्रावधान इतने सख्त और स्पष्ट हैं कि अब कोई पुरुष दूसरी शादी का ख्याल भी मन में लाए तो उसका खून जम जाए। बहुपत्नीत्व की सदियों पुरानी जंजीरें अब हमेशा के लिए टूट चुकी हैं—असम ने सिर्फ कानून नहीं बनाया, उसने आने वाली नस्लों के लिए एकपत्नीत्व को अनिवार्य जीवन-मूल्य बना दिया।

अब बारी बाकी राज्यों की है। उत्तराखंड ने यूसीसी लागू किया, और असम उससे भी कठोर कानून लेकर आगे निकल गया। गुजरात, हिमाचल, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश—सबकी सरकारें अब जनता के तीखे सवालों का सामना करेंगी। बिहार, पश्चिम बंगाल, केरल और तेलंगाना जैसे राज्यों में, जहां एनएफएचएस डेटा आज भी 2 - 3% पॉलीगैमी दिखाता है, उन्हें जवाब देना होगा—आखिर आप कब जागेंगे? असम ने साबित कर दिया कि धार्मिक वोटबैंक के डर से मुक्त होकर भी महिलाओं के अधिकारों की निर्णायक लड़ाई लड़ी जा सकती है। यह हिंदू कोड बिल–1955 के बाद की सबसे बड़ी सामाजिक क्रांति है।

इस कानून से समाज की तस्वीर बदल जाएगी। पहली पत्नी को उसका हक और सम्मान मिलेगा, और बच्चे एक स्थिर परिवार में बड़े होंगे। लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान जाएगा, क्योंकि मां-बाप अब यह डर नहीं रखेंगे कि उनकी बेटी किसी की "दूसरी" बन जाएगी। संपत्ति विवाद घटेंगे, और सबसे बड़ी बात—समाज में औरत अब केवल "घर वाली" नहीं, बल्कि बराबर की हिस्सेदार मानी जाएगी। विरोध करने वालों के लिए बस दो सवाल हैं—पहला, अगर हिंदू या ईसाई एक से ज्यादा शादी करता है तो आप सजा की बात करते हैं, लेकिन मुस्लिम करे तो "धार्मिक अधिकार"? यह दोहरा मापदंड क्यों? दूसरा, क्या औरत का सम्मान और उसकी सुरक्षा धर्म से बड़ी चीज नहीं?

असम ने इन सवालों का जवाब कानून बनाकर दे दिया है। अब इतिहास खुद गवाह बनेगा कि 2025 में एक छोटे से राज्य ने पूरे देश को नारी-न्याय का पाठ पढ़ाया। हिमंता बिस्वा सरमा की सरकार ने यह साबित कर दिया कि अगर साहस हो तो असंभव कुछ भी नहीं। "एक पुरुष, एक पत्नी"—यह केवल कानून नहीं, बल्कि नई सदी का सामाजिक धर्म है। असम ने राह दिखाई, मानक तय किए, और अब पूरे भारत को उस राह पर चलना है। यह केवल एक निर्णय नहीं, बल्कि समाज के लिए जागृति और महिलाओं के अधिकारों की असली विजय है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

विकसित भारत:सुरक्षा आयाम- 60वां अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक सम्मेलन 29-30 नवंबर 2025

भारत वैश्विक शक्ति बनने की अपनी आकांक्षा को सुरक्षा दृष्टि से भी पूरी मज़बूती के साथ आगे बढ़ानें में सक्षम 60वें सम्मेलन में वामपंथी उग्रवाद आतंकवाद –निरोध, आपदा प्रबंधन,महिला सुरक्षा साइबर अपराध और फोरेंसिक विज्ञान एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर चर्चा मिल का पत्थर साबित होगी– एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत की आंतरिक सुरक्षा संरचना को अधिक मजबूत, अधिक तकनीक -आधारित और अधिक भविष्य- संवेदी बनाने की दिशा में 60वां अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक एवं महानिरीक्षक सम्मेलन एक ऐतिहासिक पड़ाव के रूप में उभर कर सामने आया है। यह सम्मेलन 28 से 30 नवंबर 2025 तक नया रायपुर स्थित भारतीय प्रबंधन संस्थान में आयोजित हो रहा है। इसमें देश के गृह मंत्री पहले ही शामिल हो चुके हैं, जबकि प्रधानमंत्री 29 और 30 नवंबर को अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। इतने उच्च-स्तरीय नेतृत्व की प्रत्यक्ष भागीदारी यह दर्शाती है कि भारत में सुरक्षा प्रशासन अब केवल कानून-व्यवस्था तक सीमित मुद्दा नहीं रहा,बल्कि विकसित भारत के व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण का अभिन्न और केंद्रीय घटक बन चुका है। विकसित भारतः सुरक्षा आयाम विषय-सार इस सम्मेलन की यही भावी और बहु-आयामी दिशा दर्शाता है।इसमें वामपंथी उग्रवाद आतंकवाद-निरोध,आपदाप्रबंधन महिला सुरक्षा, साइबर-अपराध और फोरेंसिक विज्ञान एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग जैसे विषयों पर गहन विचार-विमर्श हो रहा है। इन सभी क्षेत्रों में पिछले वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, और अब आवश्यकता है कि इन उपलब्धियों को एकीकृत कर एक ऐसे सुरक्षित भारत का निर्माण किया जाए, जो वैश्विक शक्ति बनने की अपनी आकांक्षा को सुरक्षा दृष्टि से भी पूरी मजबूती के साथ आगे बढ़ा सके।यह सम्मेलन मूलतःएक ऐसे संवादात्मक मंच के रूप में विकसित हुआ है जहां राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े उच्चतम स्तर के निर्णयकर्ता पुलिस प्रशासन की वास्तविक चुनौतियों पर खुलकर चर्चा करते हैं।भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और निरंतर परिवर्तनशील देश में सुरक्षा चुनौतियाँ स्थिर नहीं हैं; वे लगातार रूप बदलती हैं, क्षेत्र विशेष के हिसाब से अपना अलग रूप लेती हैं और समय-समय पर तकनीकी, सामाजिक और भू-राजनीतिक स्वरूपों में विकसित भी होती रहती हैं। ऐसे वातावरण में पुलिस बलों के बीच अनुभवों का साझा होना, विभिन्न राज्यों के मॉडल का तुलनात्मक अध्ययन, और केंद्र तथा राज्य सरकारों के स्तर पर एक एकीकृत राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण तैयार करना अत्यंत आवश्यक है। यह सम्मेलन वर्षों से इसी भूमिका को निभाता आया है,मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि 2025 का यह संस्करण अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि भारत अब 2030 तक विकसित राष्ट्र की श्रेणी में पहुँचने का लक्ष्य ले चुका है,और विकसित राष्ट्र बनने का अर्थ आर्थिक उन्नति भर नहीं, बल्कि उच्च स्तरीय घरेलू सुरक्षा संरचना भी है।

साथियों बात अगर हम इस वर्ष क़े सम्मेलन की करें तो यह वामपंथी उग्रवाद पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रहा है। पिछले एक दशक में वामपंथी हिंसा में उल्लेखनीय कमी आई है, लेकिन पूरी तरह से इसका उन्मूलन अभी शेष है। सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि वामपंथी उग्रवाद केवल पुलिस युद्ध नहीं है;यह सामाजिक विश्वास बहाली विकास की पहुंच,स्थानीय शासन के सुदृढ़ीकरण और सामुदायिक भागीदारी से भी जुड़ा हुआ मुद्दा है।यही कारण है कि इससम्मेलन में वामपंथी गतिविधियों के मूल कारणों की समीक्षा,प्रभावित क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे के विकास, सुरक्षा बलों के बेहतर संसाधन,और स्थानीय प्रशासन के समन्वय पर गहरी चर्चा हो रही है। इसके साथ ही ड्रोन, उपग्रह निगरानी और एआई- आधारित पैटर्न विश्लेषण जैसे आधुनिक उपकरणों द्वारा उग्रवाद-निरोध को अधिक प्रभावी बनाने पर भी विचार किया जा रहा है।आतंकवाद निरोध एक ऐसा क्षेत्र है, जिसे केवल जमीनी संघर्ष के रूप में नहीं देखा जा सकता।आधुनिक आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय फंडिंग नेटवर्क, साइबर रिक्रूटमेंट, एनक्रिप्टेड कम्युनिकेशन और ड्रोन-आधारित हमलों जैसे नए रूपों में उभर रहा है।भारत के सामने चुनौती यह है कि वह वैश्विक आतंकवाद के इन नए चेहरों से निपटने के लिए अपने सुरक्षा संसाधनों को तकनीकी और वैचारिक दोनों स्तरों पर आधुनिक बनाए। सम्मेलन में यह चर्चा हो रही है कि आतंकवाद विरोधी तंत्र को मजबूत करने के लिए सूचना- साझाकरण तंत्र (इंटेलिजेंस शेयरिंग) को और अधिक समन्वित,तेजी से क्रियाशील और प्रौद्योगिकी- सक्षम बनाया जाए। साथ ही,कट्टरपंथ से लड़ने के लिए सामाजिक -मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है।

साथियों बात अगर हम इसके समानांतर,आपदा प्रबंधन भी इस सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण विषय है इसको समझने की करें तो जिस प्रकार जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ा रहा है, उससे पुलिस और सुरक्षा प्रशासन की भूमिका और चुनौती दोनों ही विस्तृत हुई हैं। बाढ़, भूकंप, तूफान, भूस्खलन और शहरी आग जैसी घटनाओं में पुलिस बल न केवल राहत और बचाव कार्यों में प्रथम उत्तरदाता के रूप में कार्य करता है,बल्कि संचार समर्थन, कानून-व्यवस्था बनाए रखने, तथा भीड़-प्रबंधन में भी उसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस सम्मेलन में यह विचार किया जा रहा है कि पूरे देश में आपदा-प्रबंधन के लिए पुलिस बलों को किस प्रकार आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षण और संसाधनों से लैस किया जाए, जिससे बड़ी त्रासदियों में त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित की जा सके। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक समन्वित योजना की आवश्यकता है, जिसमें केंद्रीय पुलिस बलों और राज्य पुलिस के बीच स्पष्ट भूमिकाएँ और तकनीकी सहायता संरचनाएँ निर्धारित हों।

साथियों बात अगर हम महिला सुरक्षा को वर्तमान स्थिति में समझने की करें तो, 21वीं सदी में किसी भी आधुनिक और विकसित राष्ट्र की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है।भारत में महिला सुरक्षा के लिए अनेक योजनाएँ और तंत्र पहले से संचालित हो रहे हैं, लेकिन इस सम्मेलन का उद्देश्य इन योजनाओं का मूल्यांकन करना और एक समन्वित राष्ट्रीय दृष्टिकोण तैयार करना है ताकि महिला सुरक्षा न केवल शहरी क्षेत्रों में, बल्कि ग्रामीण और दूरस्थ इलाकों में भी समान रूप से सुनिश्चित हो। इसमें पुलिस की संवेदनशीलता प्रशिक्षण, महिला हेल्पलाइन सेवाओं का विस्तार, त्वरित जांच व्यवस्था, फोरेंसिक सहायता का बढ़ा हुआ उपयोग, और ऑनलाइन अपराधों से सुरक्षा जैसे पहलुओं को प्राथमिकता दी जा रही है। महिलाओं के खिलाफ अपराधों की जांच अक्सर देरी का शिकार होती है, क्योंकि पारंपरिक जांच पद्धतियाँ अत्यधिक समय लेने वाली होती हैं;इसीलिए फोरेंसिक विज्ञान और एआई-आधारित उपकरणों का उपयोग भविष्य की पुलिसिंग में अनिवार्य भूमिका निभाएगा।

साथियों बात अगर हम फोरेंसिक विज्ञान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग को समझने की करें तो,यह इस सम्मेलन का सबसे नवोन्मेषी और आधुनिक पहलू है। विकसित देशों में फोरेंसिक- सक्षम पुलिसिंग अब अपराध नियंत्रण की मूलधारा बन चुकी है। भारत में भी 2023 के बाद से फोरेंसिक अनिवार्यता कानून लागू होने से बड़े अपराधों में वैज्ञानिक जांच प्रणाली को अनिवार्य किया गया है।2025 के इस सम्मेलन में यह चर्चा हो रही है कि फोरेंसिक लैब्स को वैश्विक मानकों पर कैसे विकसित किया जाए, डीएनए प्रोफाइलिंग, डिजिटल फोरेंसिक, साइबर- ट्रैकिंग और एआई-आधारित फेसियल रिकॉग्निशन जैसे क्षेत्रों में नए मानक कैसे स्थापित किए जाएं। एआई न केवल अपराध की जांच में मदद करेगा बल्कि अपराध की भविष्यवाणी, ट्रैफिक प्रबंधन, भीड़ नियंत्रण और आतंकवादी गतिविधियों के डेटा पैटर्न के विश्लेषण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे पुलिस की कार्यकुशलता बढ़ेगी, जांच तेजी से पूरी होगी और न्याय व्यवस्था अधिक विश्वसनीय बनेगी।इस सम्मेलन का एक व्यापक उद्देश्य यह भी है कि पुलिस बलों के बीच परिचालन अवसंरचनात्मक और कल्याणकारी चुनौतियों पर सामूहिक चर्चा हो। पुलिस व्यवस्था आज जिस तरह के दबावों में कार्य करती है, वह किसी भी लोकतांत्रिक देश की सुरक्षा-व्यवस्था की केंद्रीय धुरी है। लंबे कार्य घंटे, संसाधनों की कमी, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव, आवास एवं परिवार कल्याण से जुड़ी समस्याएँ, और आधुनिक उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता न होना,ये सभी मुद्दे पुलिसिंग की गुणवत्ता पर प्रभाव डालते हैं। सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य एक ऐसा वातावरण बनाना है जहां पुलिस बलों को अत्याधुनिक उपकरण, बेहतर प्रशिक्षण, मानसिक स्वास्थ्य समर्थन, और पेशेवर उन्नयन के अवसर प्राप्त हों।सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर पर एक दूरदर्शी सुरक्षा रोडमैप तैयार करने पर भी विचार किया जा रहा है। विकसित भारत की अवधारणा केवल आर्थिक समृद्धि से नहीं,बल्कि एक सुरक्षित समाज,सुव्यवस्थित कानून-व्यवस्था,सुचारु प्रशासन, और नागरिकों के अधिकारों की संपूर्ण सुरक्षा से ही संभव है। एक सुरक्षित भारत ही आर्थिक निवेश आकर्षित कर सकता है, वैश्विक व्यापार के लिए अनुकूल वातावरण बना सकता है और सामाजिक सद्भाव को मजबूत कर सकता है। इस दृष्टि से यह सम्मेलन भविष्य के भारत की सुरक्षा संरचना को परिभाषित करने वाला एक निर्णायक अवसर है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि 60वां अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक सम्मेलन भारत की आंतरिक सुरक्षा यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह सम्मेलन न केवल वर्तमान चुनौतियों की समीक्षा कर रहा है, बल्कि सुरक्षा प्रशासन के लिए एक नए युग की शुरुआत का संकेत दे रहा है, एक ऐसा युग जिसमें तकनीक, वैज्ञानिक जांच,मानव-केंद्रित पुलिसिंग,सामाजिक संवेदनशीलता,राष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक सुरक्षा मानकों का सम्मिलन होगा। यह सम्मेलन एक सुरक्षित, सक्षम और विकसित भारत की दिशा में भारत की सुरक्षा नीति को एक समन्वित, वैज्ञानिक और दूरदर्शी रूप देने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

बच्चों के साहित्य विकास पत्रिकाओं की स्थायी आवश्यकता

संपादकीय
चिंतन-मनन

डॉ. विजय गर्ग

एंटी-एजिंग प्रोडक्ट्स, कॉस्मेटिक सर्जरी और तमाम ब्यूटी ट्रीटमेंट्स का बाज़ार खरबों रुपये का हो चुका है। कंपनियां लगातार यह संदेश देती हैं कि आप वैसे ही सुंदर नहीं हैं जैसा आपको होना चाहिए, और उनकी मदद से ही यह संभव है। कई समाजों में, खासकर महिलाओं के लिए, सुंदर दिखना सफलता और स्वीकार्यता का पैमाना बन गया है। स

आज की तेज गति वाली, डिजिटल दुनिया में, उच्च गुणवत्ता वाले बच्चों के साहित्य विकास पत्रिकाओं की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। ये पत्रिकाएं एक महत्वपूर्ण पुल के रूप में कार्य करती हैं, जो युवा पाठकों को साहित्य की खुशियों और विकासात्मक लाभों से जोड़ती हैं, तथा इन्हें ऐसे प्रारूप में प्रस्तुत करती हैं जो आकर्षक, सुलभ और उनकी आधुनिक संवेदनशीलता के अनुरूप हो। वे केवल पूरक पठन सामग्री नहीं हैं, बल्कि साक्षरता, आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और पढ़ने के आजीवन प्रेम को बढ़ावा देने में सक्रिय उपकरण हैं।

एक पत्रिका जो कल्पना को पोषित करती है

बच्चे स्वाभाविक रूप से सामान्य से परे दुनिया की कल्पना करते हैं। कहानियों, कविताओं, पहेलियों, लोक कथाओं और चित्रों से भरा एक अच्छी तरह से तैयार पत्रिका— जिज्ञासा के दरवाजे खोलती है। यह बच्चों को कल्पना करने, सपने देखने और नियमित शैक्षणिक सीखने की सीमाओं से परे सोचने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य उन्हें सिखाता है कि प्रत्येक शब्द अपने भीतर एक ब्रह्मांड रखता है।

2। एक मजबूत भाषा नींव का निर्माण

नियमित रूप से पढ़ना बच्चों को नई शब्दावली, वाक्य संरचनाओं और भाषाई पैटर्न के लिए उजागर करता है। विशेष रूप से युवा पाठकों के लिए डिज़ाइन की गई एक पत्रिका कर सकती है

आयु-उपयुक्त तरीकों से भाषा का परिचय दें

पढ़ने की समझ में सुधार करें
लेखन कौशल को मजबूत करें
अभिव्यंजक संचार को प्रोत्साहित करें
पढ़ने की आदत विकसित करना

जो बच्चे पढ़ते हैं वे सोचते हुए बड़े हो जाते हैं। पाठ्यपुस्तकों के विपरीत पत्रिकाएं हल्की, अधिक आकर्षक और कम डराने वाली होती हैं। उनकी आवधिक प्रकृति प्रत्याशा पैदा करती है। प्रत्येक नया अंक अन्वेषण का निमंत्रण बन जाता है:

एक ताजा कहानी
एक नया पाठ
एक नया हीरो
एक नई चुनौती

यह नियमित पढ़ने की आदत अनुशासन और बौद्धिक स्वतंत्रता का निर्माण करती है।

साक्षरता और संज्ञानात्मक विकास में भूमिका

बच्चों की पत्रिकाओं को विशेष रूप से बढ़ते पाठक से मिलने के लिए डिज़ाइन किया गया है जहां वे हैं। वे सामग्री का एक अनूठा मिश्रण प्रदान करते हैं जो सीधे कोर साक्षरता और संज्ञानात्मक विकास का समर्थन करता है

कम-थ्रेशोल्ड रीडिंग: किसी पुस्तक की कभी-कभी डराने वाली लंबाई के विपरीत, पत्रिका लेख, लघु कथाएं, कविताएँ और तथ्य स्निपेट छोटे और त्वरित होते हैं। यह प्रारूप विशेष रूप से अनिच्छुक पाठकों के लिए आकर्षक है, जो उन्हें भारी किए बिना त्वरित जीत और आत्मविश्वास का निर्माण करता है।

विविध सामग्री एक्सपोजर: एक एकल पत्रिका अंक में ऐतिहासिक कथा और कल्पना से लेकर विज्ञान, इतिहास और संस्कृति पर गैर-काल्पनिक लेखों तक विभिन्न प्रकार के शैलियों शामिल हो सकते हैं। यह एक्सपोजर बच्चों को अपने पढ़ने के क्षितिज का विस्तार करने, नई रुचियों (जैसे महासागर विज्ञान या खगोल विज्ञान) की खोज करने और विभिन्न प्रकार के ग्रंथों को पढ़ने और समझने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है।

शब्दावली और भाषा कौशल: साहित्यिक पत्रिकाएं, विशेष रूप से, अच्छी तरह से लिखे गए गद्य और कविता के साथ समृद्ध हैं, जो बच्चों को विविध शब्दावली, जटिल वाक्य संरचनाओं और लेखन की विभिन्न शैलियों से परिचित कराती हैं। उनका उपयोग स्पष्ट रूप से साक्षरता कौशल सिखाने के लिए किया जा सकता है जैसे कहानी तत्वों की पहचान करना, मुख्य विचार और अनुमान लगाना।

डिजिटल युग में फोकस को बढ़ावा देना: डिजिटल विकर्षणों से भरे वातावरण में, एक भौतिक पत्रिका केंद्रित और जानबूझकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। आवधिक पत्रिका की मूर्त प्रकृति, अक्सर आकर्षक चित्रों के साथ, बच्चे को एक ही कार्य पर केंद्रित रखती है, जिससे ध्यान और एकाग्रता कौशल का निर्माण करने में मदद मिलती है।

कल्पना और आलोचनात्मक सोच को बढ़ाना

युवा दिमाग को आकार देने के लिए साहित्य मौलिक है, और पत्रिकाएं इन आवश्यक कौशलों का अभ्यास करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं

उत्तेजक रचनात्मकता: एक साहित्यिक पत्रिका में पाए जाने वाले जीवंत चित्रण, आकर्षक पाठ और कल्पनाशील परिदृश्यों का संयोजन बच्चों को विभिन्न दुनियाओं में भागने और नए पात्रों से मिलने की अनुमति देता है। यह कल्पनाशील खेल रचनात्मकता को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है, जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में समस्या-समाधान और नवाचार के लिए हस्तांतरणीय है।

ब्रिजिंग फिक्शन और नॉन-फिक्शन: कई पत्रिकाएं कहानियों और गतिविधियों के साथ सूचनात्मक लेखों को सहजता से बुनती हैं। यह मिश्रित दृष्टिकोण STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) और अन्य शैक्षिक विषयों के बारे में सीखना मजेदार और आसानी से पचने योग्य बनाता है। जो बच्चा डायनासोर के बारे में एक लेख पढ़ता है, उसे अपनी स्वयं की प्रागैतिहासिक साहसिक कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

सहानुभूति और विश्वदृष्टि विकसित करना: पत्रिकाएं अक्सर ऐसी सामग्री प्रस्तुत करती हैं जो अन्य संस्कृतियों, परंपराओं और दृष्टिकोणों की एक खिड़की प्रदान करती है। वैश्विक मुद्दों के बारे में विविध पात्रों या लेखों वाली कहानियों को पढ़कर, बच्चे अपने तत्काल अनुभव से परे दुनिया की सहानुभूति, करुणा और व्यापक समझ विकसित कर सकते हैं।

पत्रिका प्रारूप की अनूठी अपील

सामग्री से परे, एक पत्रिका के भौतिक और व्यावहारिक पहलू इसकी शैक्षिक शक्ति में योगदान करते हैं

स्वामित्व का उत्साह: मेल में एक नया अंक प्राप्त करना एक पूर्वानुमानित और मूर्त अनुभव प्रदान करता है जो पुस्तकालय की पुस्तक को चेक करने से भिन्न होता है। यह बच्चों को उनकी पठन सामग्री पर स्वामित्व की भावना देता है, विशेष रूप से परिवार-साझा डिजिटल स्क्रीन द्वारा प्रभुत्व में दुनिया में। इंटरैक्टिव और आकर्षक: बच्चों की पत्रिकाएं आमतौर पर पहेलियों, खेलों, शिल्प और प्रतियोगिताओं जैसे इंटरैक्टिव तत्वों से भरी होती हैं। ये गतिविधियाँ सीखने को सुदृढ़ करती हैं, विषय-वस्तु को वास्तविक दुनिया के कौशल से जोड़ती हैं, और पढ़ने के अनुभव को निष्क्रिय करने के बजाय सक्रिय बनाती हैं। गेटवे टू राइटिंग: कई पत्रिकाएं पाठक को संपादक, कविताओं या कहानियों के लिए पत्र प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह प्रत्यक्ष जुड़ाव बच्चों को साहित्य में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रेरित करता है, प्रकाशित टुकड़ों का उपयोग अपने स्वयं के लेखन के लिए मॉडल के रूप में और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति में विश्वास प्राप्त करना। निष्कर्षतः, एक आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में जो आधारभूत साक्षरता और विविध मीडिया सहभागिता दोनों को बढ़ावा देता है, बाल साहित्य विकास पत्रिकाएं एक अपरिहार्य शैक्षणिक उपकरण बनी हुई हैं। वे एक कम दबाव, उच्च ब्याज संसाधन हैं जो सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण कौशल और साहित्य के लिए स्थायी प्रेम को पोषित करते हैं जिसे हर बच्चे को विकसित करने की आवश्यकता होती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक

तकनीक से जीवन और गरिमा की रक्षा

डॉ विजय गर्ग

भारत की चमकती सड़कों, ऊंची इमारतों और 'स्मार्ट' शहरों की योजनाओं के पीछे एक कड़वी सच्चाई छिपी है। देश के कई हिस्सों में आज भी हजारों लोग सीवर और नालियों में उतरकर अपने हाथों से सफाई करने को मजबूर हैं। ऐसे में कई बार जहरीली गैस की वजह से सफाई कर्मियों को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है। यह पेशा नहीं, बल्कि समाज में असमानता और भेदभाव का जीवंत प्रतीक है। देश में कभी- कभी सफाई कर्मचारियों को वर्ष में दो-चार मौकों पर किसी सरकारी समारोह में सम्मानित किया जाता है। ऐसा करके यह दिखाया जाता है कि सरकार उनकी मेहनत और योगदान के महत्त्व को मानती है, लेकिन वास्तविकता यह है कि कुछ मिनटों का यह सम्मान उनके लिए स्थायी सुरक्षा, गरिमा या बेहतर जीवन की गारंटी नहीं देता है। असली गरिमा तो तब आएगी, जब उनके काम करने के तरीके में बदलाव होगा, उन्हें खतरनाक और अमानवीय परिस्थितियों में नहीं, बल्कि सुरक्षित और सम्मानजनक तरीके से काम करने और जीने का अवसर मिलेगा। । कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' तकनीक का इस्तेमाल इसमें अहम भूमिका निभा सकता है।

हर वर्ष देश में सैकड़ों सफाई कर्मचारी सीवर के गड्डों और नालियों में दम घुटने, जहरीली गैस या करंट लगने से अपनी जान गंवा देते हैं। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के के अनुसार, वर्ष 2018 से 2023

के बीच चार सौ से अधिक लोगों की मृत्यु सीवर की सफाई के दौरान हुई। राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग का मानना है कि यह संख्या वास्तविकता से कहीं कम है, क्योंकि कई मौतें दर्ज नहीं हो पातीं। इन मृतकों में आमतौर पर दलित समुदाय लोग होते हैं. हैं, जिन्हें सदियों से इस कार्य में धकेला गया है। यह स्थिति हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम वास्तव में उस भारत में रह रह 5 रहे हैं, जिसने अपने संविधान में समानता और गरिमा का वादा किया था। भारत का संविधान हर नागरिक को समानता, स्वतंत्रता और गरिमा का अधिकार देता है अनुच्छेद 14 कहता ना है कि सभी नागरिक कानून दृष्टि में समान हैं। अनुच्छेद-17 में अस्पृश्यता को समाप्त किया और इसे से किसी भी रूप में लागू करने या मानने को अपराध बताया गया है। । वहीं अनुच्छेद-21 हर व्यक्ति को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है, जिसका अर्थ केवल जीवित रहना नहीं, बल्कि गरिमापूर्ण जीवन जीना भी है। यही संविधान का नैतिक आधार है।

गया है

वर्ष 2013 में केंद्र सरकार ने 'हाथ से मैला ढोने वाले कर्मचारियों के रोजगार प्रतिषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम' लागू किया। इस कानून का उद्देश्य हाथ से मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करना तथा इससे जुड़े लोगों को वैकल्पिक रोजगार, शिक्षा और सम्मानजनक जीवन देना था। मगर यह दुखद है कि कानून बनने के बावजूद यह अमानवीय प्रथा अब भी जारी है। इसका कारण केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि सामाजिक मानसिकता की गहरी जड़ें हैं, जो सफाई के काम को एक खास वर्ग से जोड़कर देखती है। जब भी किसी इलाके में सीवर की नाली जाम होती है, तो मशीनों की बजाय किसी सफाई कर्मी को नीचे भेजा जाता है। वह भी बिना सुरक्षा उपकरण बिना प्रशिक्षण और बिना जीवन की गारंटी के। अब समय आ गया है कि इस समस्या को केवल कानून या नैतिकता से नहीं, बल्कि विज्ञान और तकनीक की मदद से भी समाप्त करने के प्रयास किए जाएं। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग है। यह वह तकनीक है, जो मशीनों को मानव जैसी समझ, निर्णय क्षमता और सीखने की योग्यता देती है। इसका सही उपयोग हाथ से मैला साफ करने जैसी अमानवीय प्रथा की खत्म करने में क्रांतिकारी भूमिका निभा सकता है।

भारत में भी अब कृत्रिम मेथा पर आधारित रोबोट विकसित किए गए हैं, जो सीवर की नालियों में उतरकर सफाई कर सकते हैं। यह रोबोट कैमरे एवं सेंसर की मदद से गंदगी और रुकावट का पता लगाता है तथा मशीनी हाथों से सफाई करता है। इस तकनीक का प्रयोग अब तिरुवनंतपुरम, चेन्नई, लखनऊ और पटना जैसे शहरों में किया जा रहा है। इससे न केवल लोगों की जानें बची हैं, बल्कि यह भी सिद्ध हुआ है कि सफाई गरिमा के साथ की जा सकती है। दरअसल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी प्रणाली सीवर की नालियों में लगे सेंसर के माध्यम से पानी का प्रवाह, गैस का स्तर और दबाव की जानकारी एकत्र करती है। इन आंकड़ों का विश्लेषण मशीन लर्निंग प्रणाली द्वारा किया जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उ का उपयोग केवल सफाई तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से सफाई कर्मचारियों को प्रशिक्षण और पुनर्वास के अवसर भी मिल सकते हैं। उन्हें मशीन संचालन, डेटा विश्लेषण और तकनीकी प्रबंधन जैसे कार्यों में प्रशिक्षित किया जा सकता है, ताकि उनका जीवन सुरक्षित और सम्मानजनक बन सके।

दुनिया के कई देशों ने यह साबित कर दिया है कि सीवर की सफाई इंसान की जान जोखिम में डाले बिना भी संभव है। जापान में 'पाइप रोवर' और 'क्रोबोस' नामक रोबोट पाइपलाइन की गहराइयों में जाकर कैमरे और सेंसर की मदद से सफाई करते हैं। दक्षिण कोरिया में सीवर बाट' नामक तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से सीवर व्यवस्था की स्थिति की निगरानी करती है और खतरे समय चेतावनी देती है। । सिंगापुर में पूर परे सीवर तंत्र को स्मार्ट सेंसर और स्वचालित मशीनों से नियंत्रित किया जाता है, जिससे किसी इंसान को नालियों या गड्डों में उतरना नहीं पड़ता। लंदन और एम्स्टर्डम जैसे शहरों में ड्रोन एवं कैमरे पाइपलाइन का नियमित निरीक्षण करते हैं। इन देशों ने यह दिखाया। है कि अगर इच्छाशक्ति और कारगर योजना हो, तो सफाई भी तरीके से की जा सकता है।

सुरक्षित एवं मानव मानवीय तरीके से की जा सकती है।

भारत में भी यदि सरकार और नगरपालिकाएं ऐसे तकनीकी समाधान अपनाएं, तो हाथ से मैला साफ करने की प्रथा को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सकता है। प्रत्येक नगर निकाय में रोबोटिक सफाई प्रणाली अनिवार्य की जानी चाहिए। सरकार को इस दिशा में अनुसंधान करने वाले नवाचार केंद्रों और निजी संस्थाओं को सहयोग एवं आर्थिक सहायता देनी चाहिए। 'स्वच्छ भारत मिशन' का अगला चरण केवल साफ-सफाई तक सीमित न रहकर र 'गरिमा मिशन' 'होना चाहिए, जहां उद्देश्य सफाई करने वाले की गरिमा की रक्षा रक्षा करना भी हो।

हाथ से मैला साफ करना केवल श्रम का नहीं, बल्कि मानवाधिकार और

सामाजिक न्याय का भी प्रश्न है। । समाप्त करना हमारी नैतिक और

संवैधानिक जिम्मेदारी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें यह अवसर देती है कि हम एक ऐसे भारत की कल्पना करें, जहां कोई व्यक्ति केवल अपने विशेष वर्ग या जाति के कारण हाथ से मैला साफ करने को मजबूर न हो। जब मशीनें सफाई करेंगी, इंसान उस अपमान, भय और असमानता से मुक्ति मिलेगी, जो पीढ़ियों से उसका पीछा कर रही है। मानवता को अपमान मुक्त करना, गरिमा को पुनर्स्थापित करना और संविधान के उस वादे को साकार करना जरूरी है, जो कहता है कि हर व्यक्ति समान है और। हर किसी को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार है जब कोई भी नागरिक अपने विशेष वर्ग या जाति के कारण नहीं, बल्कि अपनी योग्यता और गरिमा के आधार पर पहचाना जाएगा, तभी यह भी कहा जा सकेगा कि भारत सचमुच में स्वच्छता और सम्मान के मामले में एक संवेदनशील राष्ट्र है।

भविष्य का भय

डॉ विजय गर्ग

भारत की वरिष्ठ नागरिकों की जनसंख्या साल 2036 तक बढ़कर लगभग 23 करोड़ हो जाएगी

डॉ विजय गर्ग

अनुमान है कि भारत की वरिष्ठ नागरिकों की जनसंख्या साल 2036 तक बढ़कर लगभग 23 करोड़ हो जाएगी, जो कुल जनसंख्या का लगभग 15 फीसद होगी। हिमाचल प्रदेश और पंजाब सहित दक्षिणी राज्यों में वृद्धों की आबादी अधिक है, तथा 2036 तक क्षेत्रीय असमानताएं बढ़ने की संभावना है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय वरिष्ठ नागरिकों के लिए नोडल मंत्रालय है। यह वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण हेतु अधिनियम, नीतियां विकसित एवं कार्यान्वित करता है।

माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007 और बाद में संशोधित माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण (संशोधन) अधिनियम, 2019 कानूनी रूप से बच्चों और उत्तराधिकारियों को माता-पिता को भरण-पोषण प्रदान करने के लिए बाध्य करता है।

भारत तेजी से जनसांख्यिकीय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, और अनुमान है कि वृद्ध जनसंख्या (60 वर्ष और उससे अधिक) साल 2011 के 10 करोड़ से बढ़कर 2036 तक दोगुने से भी ज्यादा यानी 23 करोड़ हो जाएगी। यह परिवर्तन दर्शाता है कि साल 2036 तक, लगभग हर सात में से एक भारतीय 60 वर्ष या उससे अधिक आयु का होगा, जो देश की जनसंख्या संरचना में एक बुनियादी बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। इस परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए, भारत ने घटती प्रजनन दर और बढ़ती जीवन प्रत्याशा दरों से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए कई नीतियां, कार्यक्रम और कानूनी प्रावधान अपनाए हैं।

बुजुर्गों की जरूरतों को पूरा करने का महत्त्व बेहतर पोषण और स्वास्थ्य सेवा ने भारत में लोगों को लंबी उम्र जीने में मदद की है, लेकिन इससे बढ़ती उम्र के साथ नई चुनौतियां और अवसर भी सामने आते हैं। सरकार को पेंशन, । पर्याप्त आवास और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को प्राथमिकता देनी चाहिए, खासकर आर्थिक रूप से कमजोर बुजुर्गों के लिए। जनसांख्यिकीय रुझान

भारत और राज्यों के लिए जनसंख्या प्रक्षेपण रपट जुलाई 2020 में जनसंख्या अनुमानों पर तकनीकी समूह (टीजीपीपी) द्वारा बनाई गई थी । इसमें वृद्ध लोगों की आबादी का अनुपात कैसे बदल रहा है और भविष्य के लिए क्या अनुमान है, इसका जिक्र है । रपट के अनुसार, भारत की बुजुर्ग आबादी 2036 तक 23 करोड़ तक पहुंच जाएगी, जो व्यापक प्रभावों के साथ एक गहन सामाजिक

परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। देश जनसंख्या की उम्र बढ़ने में महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय असमानताओं को प्रदर्शित करता है और यह जनसांख्यिकीय बदलाव पूरे देश में एक समान नहीं है।

केरल, तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में पहले से ही विकसित देशों की तरह बुजुर्गों की संख्या काफी ज्यादा है। केरल की बुजुर्ग आबादी 2011 के 13 फीसद से बढ़कर 20

डब्ल्यूपीएल ऑक्शन: जहाँ पैसा नहीं, सपने अनुबंध हुए

हॉल अचानक एक अनकहे, जलते हुए आगोश में बदल गया। हर कोना, हर चेहरा, हर निगाह जैसे उस क्षण के लिए सजग हो गया था। जब दिल्ली के उस हॉल में हथौड़ा तीसरी बार गिरा ह्यूग एडम्स की आवाज़ गूंज उठी— “सोल्ड ! थ्री क्रोर ट्वेंटी लख्स टू यूपी वॉरियर्स !”, तो ऐसा लगा जैसे पूरे हिंदुस्तान की साँस एक ही क्षण में थम गई हो। 3.20 करोड़। सिर्फ़ एक आंकड़ा नहीं; यह एक सपना, एक संघर्ष, और एक गाँव की बेटी की असंभवता की जीत थी। वही लड़की, जिसकी बचपन की रातें उजाले से वंचित, संघर्ष और साधारण सपनों के बीच बीतीं, आज तीन करोड़ बीस लाख रुपए की अनुबंध राशि लेकर मैदान पर खड़ी थी। तालियाँ नहीं बजीं; दिलों की धड़कनें बजीं। यह कोई विमेन्स प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) ऑक्शन का क्षण नहीं था; यह सपनों की जीत की चीख़ थी, यह एक नए युग की शुरुआत थी, यह भारत की महिला क्रिकेट में क्रांति का गर्जन था।

दीप्ति शर्मा ने सिर्फ़ रिकॉर्ड नहीं बनाया, उसने एक पुरानी, गहरी और जड़ जम चुकी मानसिकता को हमेशा के लिए दफ़न कर दिया। वही मानसिकता जो सालों से चुपचाप कानों में फुसफुसाती रही थी – “लड़कियाँ खेलेंगी तो क्या होगा ? शादी-ब्याह में क्या काम आएगा ?” – उसकी हर फुसफुसाहट को दीप्ति ने 3.20 करोड़ के शक्तिशाली, गरजते हथौड़े की गूँज से हमेशा के लिए दबा दिया। स्मृति मंधाना का 3.40 करोड़ का रिकॉर्ड तीन सालों तक अडिग और अटल था। दीप्ति ने उसे केवल इतना करीब पहुँचाया कि अब हर लड़की के मन में एक नया, बुलंद और निर्भीक विश्वास जाग उठा – “मेरा भी नंबर आ सकता है, और मैं भी इतिहास रच सकती हूँ।”

लेकिन सच्चाई यही है कि यह चमक अभी केवल सतही परत तक ही सीमित है। टॉप की दस खिलाड़ी कुल मिलाकर पंद्रह-बीस करोड़ कमा चुकी हैं, जबकि नब्बे में से शेष खिलाड़ी दस, बीस या तीस लाख की सीमित राशि में ही सिमट गए हैं। पैसा आया, यह सच है, लेकिन अभी यह केवल कुछ चमकते सितारों तक ही सीमित रहा। नीचे की पायदान पर खड़ी वह लड़की, जो आज दीप्ति की उपलब्धियों को देखकर अपने सपनों को पंख दे रही है, उसके लिए अवसर का दरवाज़ा अभी भी आधा खुला है। और सवाल वही पुराना, वही चुनौतीपूर्ण है – क्या यह क्रिकेट का बूम पूरे खेल के कोने-कोने तक फैल पाएगा, या केवल ऊपरी मलाई में ही फँसकर रह जाएगा?

फिर भी, एक सत्य निर्विवाद है – दीप्ति ने वह काँच की छत तोड़ दी जो दशकों से भारतीय महिला क्रिकेट पर भारी पड़ी थी। अब जिम्मेदारी और दबाव दुगुना हो गया है। हर गेंद पर निगाहें टिकी हैं, हर रन पर सवाल उठ रहे हैं। लेकिन दीप्ति दबाव को महसूस नहीं करतीं – वह उसे कुचल देती हैं, उसे अपने अंदाज़ में झुका देती हैं। विश्व कप 2025 में, जब दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हालात पूरी तरह चुनौतीपूर्ण हो चुके थे, तब प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट रही दीप्ति ने अकेले पांच विकेट झटक दिए और अर्द्धशतक जड़कर मैच को मोड़ दिया। मैदान पर वह लड़की आग बनकर उतरती है, हर कदम, हर शॉट में जोश की लपटें उभरती हैं। 3.20 करोड़ ने उस आग को सिर्फ और ईंधन दिया है, और अब वह आग हर बाधा को जलाकर रास्ता बना रही है।

डब्ल्यूपीएल अब सिर्फ़ एक लीग नहीं रही; यह एक आंदोलन बन चुकी है, एक आवाज़ जो हर भारतीय लड़की के सपनों को बुलंद कर रही है। हर बार जब कोई भारतीय बेटी करोड़ों में छा जाती है, कहीं न कहीं कोई माँ अपनी बेटी से कहती है – “पढ़ाई भी कर, क्रिकेट भी खेल। शायद एक दिन तू भी इतिहास रच दे।” यही असली जीत है। पैसा आया, चमक आई, दबाव भी आया, लेकिन सबसे बड़ी और गहरी चीज़ जो आई, वह है – उम्मीद। लाखों लड़कियों के भीतर अब एक नई आग जगी है, एक अटूट विश्वास कि अब उनके सपने सिर्फ़ सपने नहीं रहेंगे; अब वे अपनी मेहनत और जुनून से उन्हें वास्तविकता में बदल सकती हैं।

बदलती विश्व-व्यवस्था और जी-20 की चुनौती : बहुध्रुवीयता के बीच भारत की उभरती वैश्विक भूमिका

भू-राजनीतिक तनावों, आर्थिक अस्थिरता और नेतृत्व संकट से जूझते जी-20 में भारत का वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में उदय जी-20 वैश्विक आर्थिक समन्वय का सबसे प्रभावी मंच है, परन्तु आज यह गहरे भू-राजनीतिक विभाजनों, महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा, आर्थिक असमानताओं और नेतृत्व संकट जैसी कई चुनौतियों से घिरा है। इससे समूह की प्रासंगिकता एवं क्षमता दोनों पर प्रश्नचिह्न लग गए हैं। ऐसे जटिल समय में भारत ने स्वयं को वैश्विक दक्षिण की सशक्त आवाज़ के रूप में स्थापित किया है—अफ्रीकी संघ की सदस्यता सुनिश्चित करने से लेकर समावेशी विकास, शांति-आधारित कूटनीति और दक्षिण-दक्षिण सहयोग के नए मॉडल प्रस्तुत करने तक। फिर भी वैश्विक शक्ति-संघर्ष भारत की प्रभाव क्षमता को सीमित करते हैं और जी-20 की कार्यकुशलता को प्रभावित करते हैं।

- डॉ प्रियंका सौरभ

विश्व-राजनीति वर्तमान समय में गहरे परिवर्तनों से गुजर रही है। महाशक्तियों के बीच अविश्वास, क्षेत्रीय युद्ध, आर्थिक संकट, तकनीकी वर्चस्व की होड़, जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरे और वैश्विक संस्थाओं में घटती प्रभावशीलता ने विश्व-व्यवस्था को अस्थिर बना दिया है। ऐसे दौर में जी-20, जो विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करने का सबसे महत्त्वपूर्ण मंच है, स्वयं को अभूतपूर्व चुनौतियों के बीच पाता है। समूह की प्रभावशीलता पर बढ़ते संदेह मात्र इसके कार्य-तंत्र से उत्पन्न नहीं हुए, बल्कि यह बदलती विश्व-स्थिति और बहुध्रुवीयता के असंतुलन का प्रत्यक्ष परिणाम है।

जी-20 की सबसे गंभीर चुनौती गहराता हुआ भू-राजनीतिक विभाजन है। यूक्रेन क्षेत्र में चल रहा युद्ध, पश्चिम एशिया की अस्थिरता, प्रशांत क्षेत्र में टकराव, बड़े देशों के बीच तकनीकी एवं आर्थिक प्रतिस्पर्धा, तथा बढ़ते प्रतिबंधों ने समूह की सहमति-निर्माण क्षमता को कमजोर बनाया है। कई बार ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं कि साझा घोषणा-पत्र निकालना भी कठिन हो जाता है। उदाहरणस्वरूप, जोहान्सबर्ग बैठक में केवल अत्यंत सामान्य रूप से ‘स्थायी एवं न्यायपूर्ण शांति’ की अपील की गई, क्योंकि सदस्य देशों के दृष्टिकोण आपस में टकराते रहे। यह स्थिति दिखाती है कि वैश्विक मुद्दों पर सामूहिक स्वर तैयार करना कितना कठिन हो चुका है।

महाशक्तियों के व्यक्तिगत हित कई बार समूह के सामूहिक हितों पर भारी पड़ जाते हैं। इससे ₹उबंटू₹—अर्थात “मैं हूँ क्योंकि हम हैं”—जैसी साझी जिम्मेदारी की मूल भावना क्षीण होती जा रही है। कुछ प्रमुख देशों द्वारा सम्मेलन से दूरी बनाना, या महत्वपूर्ण विमर्शों में भागीदारी में अनिच्छा दिखाना, समूह की विश्वसनीयता को कमजोर करता है। इससे जी-20 उस भूमिका को नहीं निभा पाता जिसके लिए यह बनाया गया था—यानी वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु सामूहिक एवं समन्वित प्रयास।

इसके साथ ही आर्थिक असमानता जी-20 के सामने एक और महत्वपूर्ण चुनौती है। विकसित और विकासशील देशों के बीच आय, तकनीक, स्वास्थ्य-सुविधाएँ, कौशल, ऊर्जा स्त्रोतों और जलवायु वित्त में बढ़ती खाई ने समूह के भीतर संतुलन को प्रभावित किया है। वैश्विक ऋण संकट, विकासशील देशों पर बढ़ता आर्थिक दबाव, मंदी का खतरा, और असमान व्यापार-संरचना मिलकर ऐसे परिदृश्य का निर्माण करते हैं जिसमें साझा नीति बनाना कठिन हो जाता है। ऐसे समय में समूह को जिस सशक्त नेतृत्व और सहयोग की आवश्यकता है, वह कई बार अनुपस्थित दिखाई देता है।

इन जटिल परिस्थितियों के बीच भारत ने जी-20 में अत्यंत सकारात्मक, समावेशी और संतुलनकारी भूमिका निभाई है। भारत ने न केवल वैश्विक दक्षिण की चिंता और अपेक्षाओं को केंद्र में रखा, बल्कि ऐसे ठोस कदम भी उठाए जिनका दीर्घकालिक प्रभाव दिखाई देता है। भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि अफ्रीकी संघ को जी-20 की स्थायी सदस्यता दिलाना रही। यह निर्णय न केवल ऐतिहासिक था, बल्कि उन विकासशील देशों की पुरानी मांग को भी पूरा करता था जिन्हें वैश्विक निर्णय-प्रक्रिया में बराबरी का स्थान नहीं मिलता रहा। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत वैश्विक व्यवस्था को अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत ने विकासशील देशों की वास्तविक आवश्यकताओं पर आधारित कई व्यावहारिक एवं मापनीय पहलों को आगे बढ़ाया। डिजिटल सार्वजनिक संरचना का मॉडल, स्वास्थ्य-सुरक्षा व्यवस्था, कौशल विकास, ग्रामीण एवं कृषि नवाचार, मत्स्य प्रबंधन, पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण, आपदा प्रबंधन में सहयोग, और उपग्रह आँकड़ों का साझा उपयोग—ये सभी पहलें विकासशील देशों की आवश्यकताओं से सीधे जुड़ी हैं। विशेषकर ₹अफ्रीका कौशल वृद्धि योजना₹ जैसी पहलें लाखों युवाओं के लिए अवसरों का मार्ग खोलती हैं।

भारत ने वैश्विक सुरक्षा से जुड़े महत्त्वपूर्ण मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया, विशेषकर आतंकवाद और नशीली दवाओं के गठजोड़ को। यह विषय लंबे समय से वैश्विक विमर्श में अपेक्षित महत्व नहीं पाता रहा था। भारत ने इसके विरुद्ध कठोर और समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया। इसके साथ ही न्यायपूर्ण ऊर्जा परिवर्तन, जलवायु वित्त, सतत विकास, तकनीक की समान उपलब्धता और खाद्य-सुरक्षा जैसे विषयों पर भी भारत ने विकासशील देशों की सामूहिक आवाज़ को मजबूत किया।

हालाँकि भारत की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली रही है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ स्पष्ट रूप से सामने आती हैं। महाशक्तियों के बीच चल रहे तीव्र संघर्षों के बीच भारत सभी पक्षों को एकजुट नहीं कर सका। प्रमुख देशों की अनुपस्थिति को भारत रोक नहीं पाया, न ही यह सुनिश्चित कर सका कि सभी देश साझा घोषणा-पत्र में कठोर रुख अपनाएँ। आतंकवाद पर अपेक्षित कठोर निंदा का शामिल न हो पाना भारत के लिए निराशाजनक था। इसी प्रकार भारत की कई विकास सम्बन्धी पहलें सभी देशों की समान रुचि और समर्थन प्राप्त नहीं कर पाईं, क्योंकि प्रत्येक देश की प्राथमिकताएँ भिन्न होती हैं।

वैश्विक दक्षिण के भीतर भी कई बार मतभेद देखने को मिलते हैं, जिससे समग्र एजेंडा कमजोर पड़ता है। भारत की कूटनीति संतुलनकारी अवश्य है, परन्तु महाशक्तियों के कठोर और प्रतिस्पर्धी रुख के बीच इसकी प्रभाव सीमा सीमित हो जाती है।

फिर भी यह निर्विवाद है कि आज वैश्विक दक्षिण का ऐसा कोई और देश नहीं है जो भारत जैसी व्यापक, संतुलित, विश्वासयोग्य और दूरदर्शी भूमिका निभा सके। भारत ने जी-20 के मंच को नई ऊर्जा दी है, वैश्विक दक्षिण के हितों को उचित सम्मान दिलाया है, और वैश्विक शासन में समावेशिता की नई परिभाषा प्रस्तुत की है।

अंततः, जी-20 की भविष्य की सफलता उसके सदस्यों की सामूहिकता की भावना, परस्पर विश्वास, और साझा उत्तरदायित्व को पुनर्जीवित करने पर निर्भर करेगी। यदि समूह ₹उबंटू₹—यानी साझा मानवता और साझा दायित्व—के सिद्धांत को पुनः अपनाता है, तो यह वैश्विक चुनौतियों से प्रभावी रूप से निपट सकता है। भारत ने इस दिशा में मजबूत नींव रखी है, और आने वाले समय में उसकी भूमिका और अधिक निर्णायक रूप से उभर सकती है।

स्लाइट में संविधान दिवस पर मूल अधिकारों और मौलिक कर्तव्यों पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन

लोंगोवाल,28 नवंबर (जगसीर सिंह) -

स्लाइट लोंगोवाल में संविधान दिवस पर मूल अधिकारों और मौलिक कर्तव्यों पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, स्लाइट के निदेशक प्रो.मणिकांत पासवान, डीन प्रो.कमलेश प्रसाद एवं डॉ. मीणा ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए छात्रों को भारतीय संविधान की मूल भावना से अवगत कराया। वक्ताओं ने संविधान दिवस जैसे अवसरों को लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। संविधान, अधिकार और कर्तव्य कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने छात्रों को संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों तथा नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहें और जागरूक नागरिक की भूमिका निभाएं। स्लाइट परिसर के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया और संविधान संबंधी प्रश्नोत्तरी एवं विचार-विमर्श सत्र

में सक्रियता से अपनी भागीदारी दर्ज कराई। आयोजकों ने ऐसी गतिविधियों को छात्रों में संवैधानिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने के लिए आवश्यक बताया। इस समय स्लाइट के डीन प्रो. सुरिंदर सिंह, डीन प्रो. कमलेश कुमारी, अधिकारी और कर्मचारी मौजूद थे।

शिक्षा में मंत्र और माउस जरूरी

डॉ. नीरज भारद्वाज

शिक्षा समाज में मार्गदर्शक का काम करती है। शिक्षा को लेकर समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। जैसे-जैसे तकनीक बदल रही है, वैसे ही शिक्षा का तकनीक के साथ जुड़ना और उसमें परिवर्तन होना स्वाभाविक है। विचार करें तो जो भी आक्रमणकारी भारत आया, उसने इस पवित्र भूमि पर अपना स्वामित्व स्थापित करने का प्रयास भी किया। किसी काल खंड में अपना स्वामित्व स्थापित करने में वह सफल भी हुए। सभी आक्रमणकारियों ने हमारे सामाजिक ढांचे को ध्वस्त किया, मार-काट के अलावा इन्होंने समाज को कुछ नहीं दिया। हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था को खंडित कर दिया। हमारी गुरुकुल परंपरा, हमारी ज्ञान परंपरा, हमारे वेद आदि पढ़ने की परंपरा सभी को तरोड़-मरोड़ दिया। ज्ञान के भंडार देवतुल्य आचार्यों को मारा, उन्हें कठोर कारावास में डालकर यातनाएं दीं या फिर उनके गुरुकुल-आश्रम आदि को खंडित कर दिया। जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक शोपनहॉर ने लिखा है कि विश्व के सम्पूर्ण साहित्यिक भंडार में किसी ग्रन्थ का अध्ययन मानव के विकास के लिए इतना हितकर तथा ऊँचा उठानेवाला नहीं है, जितना उपनिषदों का अध्ययन। हमारी ज्ञान परंपरा, हमारी शिक्षा व्यवस्था को मिटाने का प्रयास सभी आक्रमणकारी करते रहे। हमारे नालंदा पुस्तकालय को जला दिया, हमारे ग्रंथो को उठाकर अपने देश ले गए, वहां अपनी भाषा में अनुवाद करके अपने नाम से छपवा लिया।

हम अपनी ही ज्ञान परंपरा और शिक्षा व्यवस्था को भूलकर अपने बच्चों को उन विदेशी लोगों के नाम रटवा रहे हैं, जिनमें से अधिकतर हमारे ज्ञान के बल पर कार्य कर अपनी भाषा में छपवा रहे हैं। बड़े-बड़े मंचों पर तथाकथित बुद्धिजीवी उनका नाम लेकर उन्हें स्थापित करने में लगे रहते हैं। हमारी शिक्षा और ज्ञान परंपरा में वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद आदि की बातें कम होती है बल्कि विदेशी लोगों के ज्ञान की चर्चा अधिक होती है। कमाल कि बात यह है कि विदेशी हमारे देश में ज्ञान की खोज में आते हैं शोध करते हैं, हमारे संत-महात्माओं आदि के पास बैठकर ज्ञान लेते हैं। मैक्स मूलर 'India: What Can it Teach Us' पुस्तक में लिखते हैं कि अगर मैं विश्व भर में से उस देश को ढूँढने के लिए चारों दिशाओं में आँखें उठाकर देखुँ जिस पर प्रकृति-देवी ने अपना सम्पूर्ण वैभव, पराक्रम तथा सौन्दर्य खुले हाथों लुटाकर उसे पृथ्वी का स्वर्ग बना दिया है, तो मेरी अंगुली भारत की तरफ़ उठेगी। अपने ही देश में ज्ञान के स्रोत वेद, शास्त्र, रामायण, गीता आदि को तथाकथित बुद्धिजीवियों ने धार्मिक ग्रंथ कहकर शिक्षा संस्थानों में पढ़ने-पढ़ाने ही नहीं दिया। संस्कृत विद्यालयों और विश्वविद्यालय में ही यह शिक्षा सिमट कर रह गई। जबकि हम सभी को गीता के श्लोक, वेद-उपनिषद के मंत्र, श्लोक, ऋचाएं, पंक्तियां आदि जरूर याद होने चाहिए। डॉ. एफ. डब्ल्यू. थामस ने अपनी पुस्तक The History and Prospects of British Education in India में लिखा है कि भारत में शिक्षा कोई नई बात नहीं है। संसार का कोई भी देश ऐसा नहीं है जहां ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन काल से आरम्भ हुआ हो अथवा जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। विचार करें तो भारतवर्ष विश्व को ज्ञान-विज्ञान देने वालों में प्रथम देश है लेकिन हम अपने ही देश में, अपनी ही परंपराओं से अनभिज्ञ नजर आते हैं।

स्वतंत्रता के बाद पूरी शिक्षा व्यवस्था में ऐसा लगता है मानों एक योजना सी चलाई गई कि हम अपने ही देश में अपनी भाषाओं और ज्ञान परंपरा से दूर हो जाएं। देखा-समझा जाए तो हुआ भी कुछ ऐसा ही है। विकास के नाम पर अंग्रेजी को पढ़ाया जाने लगा। विचार करें तो किसी भी देश का व्यक्ति अपनी भाषा में ही सोचता समझता है। लेकिन विदेशीपन का प्रभाव हमारे ऊपर बहुत बना हुआ है। लोग धीरे-धीरे अपनी भाषाओं से पिछड़ने लगे। देव भाषा संस्कृत को तथाकथित बुद्धिजीवियों ने पूजा पाठ की भाषा कहकर उसे शिक्षा क्षेत्र से हटा दिया। जबकि संस्कृत दुनिया की सबसे सरल, सरस और सुमधुर भाषा है। इसमें एकल और समूह में जब उच्चारण होता है तो देवता भी मंत्रमुग्ध होकर इनमें बंध जाते हैं। श्लोक उच्चारण से हमारे मन-मस्तिष्क की इंद्रियों को परम शांति और सुख मिलता है। हम तनाव से दूर होकर, अपने को स्वस्थ पाते हैं। कितनी ही प्रकार की पूजा-पाठ, हवन, मंत्र उच्चारण से अस्वस्थ, तनावग्रस्त आदि लोगों को ठीक किया जाता है। इससे ज्यादा वैज्ञानिक प्रमाण किसी को ओर क्या चाहिए।

अंग्रेजी दासता से स्वतंत्रत होने के बाद देश में ही पैदा हुए काले अंग्रेजों ने देश की पूरी शिक्षा व्यवस्था को विदेशी ढर्रे पर चलाया। लोग उसी के अनुसार चलते रहे, देश के यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी और शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक जी के अथक प्रयासों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा और शिक्षा व्यवस्था को नए आयाम दिए। हाल ही में छठे रामनाथ गोयनका व्याख्यान को संबोधित करते हुए मोदी जी ने कहा कि 1835 में ब्रिटिश सांसद मैकाले ने एलान किया था कि मैं एसे भारतीय बनाऊंगा, जो दिखने में तो भारतीय होंगे लेकिन मन से अंग्रेज होंगे। इसके लिए मैकाले ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था का समूल नाश कर दिया। विचार करें तो किसी हद तक हुआ भी कुछ ऐसा ही। मोदी जी ने देश को नई दिशा दी है। इसी व्याख्यान में मोदी जी कहा कि हमने नेशनल एजुकेशन पालिसी में स्थानीय भाषा में पढ़ाई पर जोर दिया है। विचार करें तो जब भाषा का विकास होगा तभी देश का विकास होगा। मोदी सरकार ने शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था में सुधार का नये-नये अध्याय लिखे हैं। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने नई सोच और विचार को जन्म दिया है। अब हमारी शिक्षा व्यवस्था में वेद मंत्र और कंप्यूटर के माउस को एक साथ जोड़ दिया गया है। हमें अपनी ज्ञान परंपरा और शिक्षा व्यवस्था को सही से जानने और समझने की जरूरत है।

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित केमिस्ट

सुनाम ऊधम सिंह वाला,28 नवंबर (जगसीर लोगोंवाल) -

केमिस्ट एसोसिएशन सुनाम ने पर्यावरण संरक्षण और पक्षियों की देखभाल की दिशा में एक सराहनीय कदम उठाया है। एसोसिएशन के अध्यक्ष नरेश जिंदल के नेतृत्व में, सुनाम की शमशान भूमि परिसर में 105 बाँस के पौधे रोपे गए।इस अवसर पर, अध्यक्ष नरेश जिंदल ने बाँस के पौधों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बाँस के पेड़ पक्षियों के लिए बेहद सुरक्षित और उपयुक्त आश्रय प्रदान करते हैं।यह पहल विशेष रूप से पक्षियों की देखभाल और उनके प्राकृतिक आवास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई है।यह वृक्षारोपण अभियान न केवल हरियाली को बढ़ाएगा, बल्कि स्थानीय

वन्यजीवों, विशेषकर पक्षियों को एक सुरक्षित ठिकाना भी देगा। इस समय नरेश जिंदल, योगेश चोपड़ा अजायब सैनी, राकेश गर्ग, हनीश, दीपक कंसल, दीपू सैनी आदि मौजूद रहे ।

राजीव गांधी थर्मल पावर प्लांट खेदड़ु में रक्तदान शिविर सफलतापूर्वक आयोजित।

परिवहन विशेष न्यूज

खेदड़ः राजीव गांधी थर्मल प्लांट में डेमोक्रेटिक मेडिकल एसोसिएशन (DMA), इंडिया, महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज और रेड क्रॉस सोसायटी के सहयोग से रक्तदान शिविर आयोजित किया गया।

मुख्य आकर्षणः

अध्यक्ष चीफ इंजीनियर श्री अशोक माहेश्वरी जी ने कर्मचारियों एवं अधिकारियों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया।

शिविर का संचालन कार्यकारी अभियंता श्री संदीप वर्मा ने किया।

प्लांट के कर्मचारियों, अधिकारियों और सीआईएसएफ जवानों ने मिलकर 70 यूनिट रक्तदान किया।

उपस्थित प्रमुख अधिकारी और कर्मचारीः

सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर श्री प्रवीन गिरिधर, श्रीमती गीता, श्री जे.पी. पुरोहित, श्री सुनील दुरेजा, श्री दीपक श्रीवास्तव, श्री संतोष कुमार गुप्ता, श्री सुनील वर्मा एफ ए।

सहायक कार्यकारी अभियंता श्री कुलदीप ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रम कर्मचारियों और जवानों में समाजसेवा की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किए जाते हैं।

चीफ इंजीनियर श्री अशोक माहेश्वरी ने शिविर की सफलता पर पूरी टीम को बधाई दी।

गंगा में जारी कानपुर से लापता एक्सईएन की तलाश सुराग अबतक नहीं, पत्नी से विवाद की चर्चा

रांची में 8792 नव नियुक्त अभ्यर्थियों को सौंपा गया नियुक्ति पत्र

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, युवा राज्य में युवा शक्ति के साथ सरकार हर कदम पर खड़ी है। आज आपके भविष्य के साथ एक नया अध्याय जुड़ रहा है । आप सरकार के अभिन्न अंग के रूप में अब अपनी सेवा देंगे। मुझे पूरा विश्वास कि आप राज्य को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में अपना अहम योगदान देंगे। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन सरकार के एक वर्ष पूरा होने के अवसर पर मोरहाबादी मैदान, रांची में आयोजित भव्य राज्य स्तरीय समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने 8792 नव नियुक्त अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। उन्होंने कहा कि आज जिन्हें नियुक्ति पत्र मिला है, उससे कम से कम 50 हज़ार लोगों का भरोसा मजबूत हुआ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज राज्य सरकार अपने दूसरे कार्यकाल की पहली वर्षगांठ बना रही है। यह दिन हम सभी के लिए काफी उत्साह वाला है , लेकिन मन थोड़ा उदास भी है। क्योंकि, दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी इस ऐतिहासिक समारोह में हमारे बीच नहीं है। वे अगर आज होते तो इतनी बड़ी संख्या में युवाओं को नियुक्ति पत्र मिलता देख काफी खुश नजर आते। इस क्रम में मुख्यमंत्री ने महान सुधारक ज्योतिबा फुले को उनकी पुण्यतिथि पर याद करते हुए नमन किया ।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार के दूसरे कार्यकाल का आज पहले वर्ष पूरा हो रहा है । यह दिन कई काफी ऐतिहासिक है। क्योंकि, एक साथ इतनी बड़ी संख्या में युवाओं को नियुक्ति पत्र देने का अवसर हमें मिला है। हमारी सरकार युवाओं का भविष्य संवारने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। सिर्फ इसी वर्ष 16 हज़ार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी और 8 हज़ार लोगों को गैर सरकारी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के हर वर्ग और तबके के लिए हमारी सरकार पूरी संवेदनशीलता के साथ काम कर रही है। आदिवासी, दलित, पिछड़ा, महिला नौजवान, दिव्यांग... हर किसी को सरकार सौगात दे रही है। उन्होंने यह भी कहा कि चाहे पढ़ा -लिखा व्यक्ति हो या कम पढ़ा- लिखा अथवा अनपढ़, सबको आगे ले जाने का काम सरकार कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सहायक आचार्य में 40 प्रतिशत और जेपीएससी सिविल सेवा में 30 प्रतिशत महिलाएं चुनकर आईं हैं, जो महिला सशक्तिकरण का एक बेहतरीन उदाहरण है।

इस समारोह में कुल 8792 नव नियुक्त अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया। इसमें झारखंड लोक सेवा आयोग की 11वीं से 13 वीं संयुक्त सिविल सेवा परीक्षा से अनुसंशित 197 उप समाहर्ता, 35 पुलिस उपाधीक्षक, 55 राज्य कर पदाधिकारी, 2 काराधीक्षक, 08 झारखंड शिक्षा सेवा श्रेणी -2, 01 जिला समादेष्टा, 8 सहायक निबंधक, 14 श्रम अधीक्षक, 6 प्रोबेशन पदाधिकारी और 3 उत्पाद निरीक्षक हैं। इसके साथ दंत चिकित्सक के 22, कीटपालक के 150 और सहायक आचार्य के 8291 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र मिला। वहीं, कर्तव्य के दौरान 84 शहीद पुलिस कर्मियों के पारिवारिक सदस्य को अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया।

इस अवसर पर मंत्री राधा कृष्ण किशोर, मंत्री दीपक बिरुवा, मंत्री चमरा लिंडा, मंत्री संजय प्रसाद यादव, मंत्री हफीजुल हसन, मंत्री इरफान अंसारी, मंत्री दीपिका पांडेय, मंत्री योगेंद्र प्रसाद, मंत्री सुदिव्य कुमार, मंत्री नेहा तिर्की, राज्य सभा सांसद महुआ माजी, विधायक ममता देवी, मुख्य सचिव अविनाश कुमार, विकास आयुक्त अजय कुमार सिंह एवं विभिन्न विभागों के प्रधान सचिव/ सचिव तथा अन्य वरीय अधिकारी मौजूद थे

रिश्तों में दूर करते व्यवधान...!

ये एक परिवार या एक कोठी की नहीं कहानी,
रिश्तों, दौलत व मानसिक तनाव हुआ बयानी।
देश के नामी नाम राजश्री-कमला आती पसंद,
इंडस्ट्री व आम लोगों को हिलाया रह गए दंग।

घर के एक कमरे में फांसी पे लटकी हुई मिलीं,
वो आत्महत्या का कदम ही क्यों उठाके चलीं।
रिश्तों में प्यार एवं विश्वास; कमी का गहरा दर्द,
किसी रिश्ते में प्यार या भरोसे का न रहा अर्थ।

जिंदगी खत्म कर लेना नहीं यह कोई समाधान,
रिश्ते में रहते जीने के लिए दूर करते व्यवधान।
यूं लंबे समय तक भावनात्मक तनाव में ना रहें,
आओं करें दुआ सकारात्मक सभी रहें प्रेम बहें।
(संदर्भ-दीप्ति का सुसाइड केस)

संजय एम तराणेकर

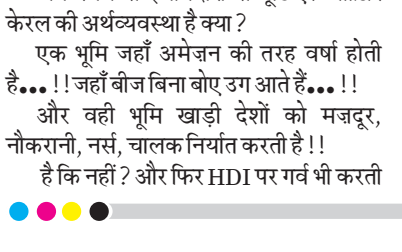

गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन 2026 में डॉ. शंभू पंवार का चयन

नई दिल्ली / झुंझुनूं, 28 नवम्बर।

वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर ,अंतरराष्ट्रीय लेखक ,पत्रकार एवं साहित्यकार डॉ. शंभू पंवार ने भारत सरकार के उपक्रम प्रसार भारती (आकाशवाणी) द्वारा प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस अवसर पर आयोजित किए जाने वाले 70 वे विश्व के सबसे बड़े सर्वभाषा कवि सम्मेलन २०२६ में सिंधी भाषा के अनुवादक कवि के रूप में प्रतिभाग कर पिड़ावा, झुंझुनूं एवं सम्पूर्ण शेखावाटी क्षेत्र का नाम राष्ट्रीय पटल पर गौरवान्वित किया है।

डॉ. पंवार संभवत: झुंझुनूं जिले ही नहीं, बल्कि शेखावाटी क्षेत्र से पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिनका चयन इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय स्तर के सर्वभाषा कवि सम्मेलन के 70वें संस्करण में हुआ है। आकाशवाणी दिल्ली के रंगभवन ऑडिटोरियम में आयोजित इस ऐतिहासिक सर्व भाषा कवि सम्मेलन में डॉ.शंभू पंवार ने ११ भाषाओं के देश के प्रतिष्ठित कवियों की उपस्थिति में डॉ. पंवार ने नर्मदापुरम के वरिष्ठ सिंधी भाषा के कवि श्री अशोक जमनानी की सुप्रसिद्ध रचना "वारिस" का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत कर उपस्थित साहित्यप्रेमियों की भरपूर सराहना अर्जित की। यह क्षण उनके साहित्यिक जीवन का महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुआ। इस सम्मेलन का उद्देश्य भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल ११ भाषाओं के श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित एवं प्रख्यात कवियों को एक ही मंच पर लाने एवं राष्ट्रीय एकता, भाषाई सद्भाव और भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक विरासत को सशक्त बनाना है। उल्लेखनीय है कि इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में पूर्व में हरिवंश राय बच्चन, महादेवी वर्मा , सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ,सुमित्रानंदन पंत,अज्ञेय, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे महान साहित्यकार भी शामिल रहे हैं।

इस अवसर पर साहित्य अकादमी दिल्ली के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक, आकाशवाणी दिल्ली की कार्यक्रम अधिकारी मनीषा जैन ने डॉ. पंवार को शॉल, गोल्डन माइक एवं फिलिप्स रेडियो भेंट कर सम्मानित किया।इस कवि सम्मेलन का डी डी दूरदर्शन,एवं आकाशवाणी के सभी केंद्रों पर गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर प्रसारित किया किया जाएगा।

डॉ. शंभू पंवार ने कहा कि—

"यह आयोजन मेरे साहित्यिक जीवन की गौरवशाली धरोहर है। यह स्मृति सदैव मेरे हृदय में अंकित रहेगी और निरंतर प्रेरणा देती रहेगी।"

केरल का घाव : शिवानन्द मिश्रा

केरल के बारे मे अनेक गलतफहमियां हैं.....

केरल यूरोप नहीं है और इस भ्रम का आवरण अब उतार देना चाहिए। हम सब केरल को ऐसे रूमानी रूप में देखते हैं मानो वह कोई यूरोपीय देश हो। "शत-प्रतिशत साक्षरता।" "उत्कृष्ट HDI।" "आदर्श राज्य।"इत्यादि इत्यादि....परंतु वह सत्य, जिसे कहने का साहस कोई नहीं करता, यह है: यूरोप, यूरोप इसलिए नहीं है कि उसका HDI ऊँचा है। यूरोप इसलिए यूरोप है कि उसने ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण किया।

जर्मनी :- सूक्ष्म अभियांत्रिकी, विश्व-स्तरीय वाहन, स्वच्छ प्रौद्योगिकी।

फ्रांस :-विलासिता, कला, फैशन; वे संस्कृति का निर्यात करते हैं।

इटली :- फेरारी, लैम्बॉर्गिनी, वर्साचे; मूल्य आधारित सृजन, मात्रा नहीं।

ब्रिटेन :- वित्त, विधि, शिक्षा; वह श्रमिक नहीं भेजता, वह नियम गढ़ता है।

अब स्वयं से ईमानदारी से पूछिए! आख़िर केरल की अर्थव्यवस्था है क्या?

एक भूमि जहाँ अमेज़न की तरह वर्षा होती है... !! जहाँ बीज बिना बोए उग आते हैं... !!

और वही भूमि खाड़ी देशों को मज़दूर, नौकरानी, नर्स, चालक निर्यात करती है!!

है कि नहीं? और फिर HDI पर गर्व भी करती है? कटु सत्यः केरल के पास कोई ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था नहीं है। न कोई IIM, न AIIMS, न कोई वैश्विक विश्वविद्यालय,

न कोई वैश्विक कम्पनी, न पेटेंट, न तकनीकी निर्यात, न नोबेल विजेता, न मौलिक ब्रांड, न कोई विनिर्माण मूल्य-श्रृंखला।

यदि साक्षरता सृजनशीलता, नवोन्मेष और उद्योग में न बदले तो वह केवल पुस्तिका की चमक है, परिवर्तन नहीं!! यमन विजय नहीं, एक चेतावनी है। निमिषा प्रिया केरल की एक नर्स आज यमन में मृत्यु-दंड का सामना कर रही हैं। सोचिए... !! यमन। एक युद्धग्रस्त, ध्वस्त देश! हमारी बेटियाँ वहाँ जाती हैं केवल जीवन बचाने के लिए!! क्या जापान या जर्मनी की कोई महिला यमन जाएगी?

काम करना तो दूर, जाना भी नहीं चाहेगी!!!

और नहीं, उन युद्ध क्षेत्रों में आपको किसी कन्नड़, आंध्र या गुजराती महिला का नाम मिलेगा?? नहीं मिलेगा क्योंकि वे राज्य कम वर्षा और कम प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद वास्तविक अर्थव्यवस्थाएँ बना चुके हैं।

इसी बीच, केरल का GST योगदान झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे जनजातीय राज्यों से भी कम है। तो फिर यह हुआ क्या ?प्रकृति ने वरदान दिए, व्यवस्था ने अवसर खो दिए। केरल के पास था!! वर्षा, नदियाँ, रबर, मसाले, बंदरगाह, स्त्री-शिक्षा का सौ वर्ष पुराना अग्रस्थान। फिर भी उसकी सबसे शिक्षित महिलाएँ सोमालिया, इराक, कुवैत, यमन जाती हैं, किसी और के बच्चों की परवरिश करने जबकि उनके अपने बच्चे दूर, दशकों तक प्रतीक्षा करते रहते हैं!! क्या ये जाने लायक देश है?

यह केवल आर्थिक घाव नहीं, यह मानवीय पीड़ा है. माताएँ रेगिस्तानी परदेस में अकेली

बच्चे को आलिंगन नहीं, केवल वॉइस नोट्स पाते हुए, टूटते हुए घर, एक घर बनाने की क़ीमत पर. खाली जन्मदिन, छूटे हुए संस्कार, वीडियो-कॉल वाला परिवार!!

भारत के किसी भी अन्य राज्य को एक घर पाने के लिए इतनी मानवीय कीमत नहीं चुकानी पड़ती। उपजाऊ स्वर्ग का क्या लाभ यदि वहाँ जीने के लिए उसे छोड़ना पड़े? गलत मानकों की पूजा बंद करें.

खाड़ी देश तेल के कारण समृद्ध हुए संयोग से. वे संयोग से धनी बने और हम उनके चालक और घरेलू सहायक, बस ? यह कोई आदर्श नहीं यह चेतावनी है!!

केरल क्या बन सकता था?? अपनी प्रतिभा और संसाधनों के साथ केरल आयुर्वेदिक जैव-प्रौद्योगिकी में विश्व-अग्रणी बन सकता था. हरित तकनीक और सतत वास्तुकला का निर्यात कर सकता था.

उच्च-स्तरीय चिकित्सकीय अनुसंधान-केंद्र बना सकता था. वृद्ध समाजों के लिए मलयालम आधारित AI प्लेटफ़ॉर्म विकसित कर सकता था, तटीय पारिस्थितिकी, वनौषधि, और जलवायु-अनुकूलन पर नए उद्योग खड़े कर सकता था परंतु इनमें से कुछ भी नहीं हुआ क्योंकि केरल वालों ने जीवित रहना ही सफलता मान लिया. रेमिटेंस को पुनर्जागरण समझ लिया। और अब वही शिक्षा हम अगली पीढ़ी को दे रहे हैं!!

आकांक्षा का समय है, पलायन का नहीं.

यह केरल के लोगों पर आक्षेप नहीं, उनकी पीड़ा को रोमांटिक बनाना बंद करने का आह्वान है. आइए बंद करें, गल्फ़ की मजबूरी को गौरव कहना, टूटे परिवारों को आर्थिक शक्ति कहना, महिलाओं के पलायन को "सशक्तिकरण" कहना और रोकें उस व्यवस्था की प्रशंसा जो महिलाओं को युद्ध क्षेत्रों में भेजती है. सफलता की माप पासपोर्ट की मुहरों से करती है. घर तोड़कर मकान बनवाती है. हमें चाहिए केरल में रोज़गार, बाहर जाने के टिकट नहीं, नवोन्मेष का नेतृत्व करती महिलाएँ, मरुस्थल की जेलों में दम तोड़ती नहीं. ज्ञान-सृजन, उधार की उपलब्धि नहीं.

ऐसा भविष्य जहाँ केरल प्रतिभा निर्यात करे, शरीर नहीं. सुंदर भूमि, साहसी लोग पर टूटा हुआ मॉडल। हाँ, केरल सुंदर है। हाँ, उसके लोग साहसी हैं पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम उस पीड़ा का उत्सव मनाएँ, !!जिसे वे सामान्य मानने को विवश हुए हैं।

केरल का घाव

अब समय है "केरल मॉडल" कहना बंद करने का, उसे उसके वास्तविक नाम से पुकारने का, केरल का घाव। आइए, हम यूरोप बनने की आकांक्षा रखें, उसका भ्रम नहीं।

और चुनो कम्युनिस्ट सरकार, वो भी 1957 से. केरल एक ऐसी जगह है जहां विश्व में सबसे पहले लोकतांत्रिक तरीके से कम्युनिस्ट सरकार चुनी गयीं और अभी तक वही जारी है और लोगों को भ्रम है कि वो बड़े मजे से जी रहे है.

संस्कार संस्कृति और सभ्यता से हटकर केरल का अपसंस्कृतिकरण ही उसके इस विकासहीन भ्रमात्मक विडम्बना का कारण है। चाहे वास्को डी गामा यहां हो या इस्लाम के पैरोकार, उनके गंदे षड्यंत्रकारी पहले कदम केरल में ही पड़े और उस अभिशाप को केरल आज भी झेल रहा है।

फ्लाइ एस की अवैध परिवहन तुरंत बंद हो, प्रशासनिक कार्रवाई स्वागतोग्य - प्रदेश अध्यक्ष रा.कॉ. पा

जनता से भी भरपूर सहयोग की अपील, एकजुटता ही समस्या का समाधान- डॉ राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

सुंदरगढ़ / राउरकेला - सुंदरगढ़ जिले में पावर प्लांटों से निकल रही फ्लाई ऐश का अवैध परिवहन और अनियंत्रित ढंग से इधर-उधर डंपिंग, जिले के पर्यावरण, कृषि भूमि और जनस्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा बन चुका है। बीती रात सड़क किनारे फ्लाई ऐश फेंकने की सूचना पर सुंदरगढ़ एसपी अमृत पाल कौर द्वारा की गई त्वरित कार्रवाई में 6 ट्रकों को जब्त किया गया, जो इस समस्या की भयावहता को स्पष्ट करता है।

इसी बीच, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने फ्लाई ऐश के अवैध परिवहन व अनियंत्रित निष्पादन पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि—

₹फ्लाई ऐश माफिया प्रशासनिक नियमों को धता बताते हुए रात के अंधेरे में जिले को प्रदूषण के खतरनाक दलदल में धकेल रहे हैं। कृषि भूमि, नदी क्षेत्रों और आबादी वाले इलाकों में इस तरह की अवैध डंपिंग न सिर्फ पर्यावरण पर हमला है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से भी खिलवाड़ है। सरकार और प्रशासन को ऐसे माफियाओं के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करनी होगी।₹

डॉ. यादव ने जिला प्रशासन द्वारा की जा रही कार्रवाई का स्वागत करते हुए कहा कि यह मुहिम और सख़्त होनी चाहिए। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि—

"यदि फ्लाई ऐश का अवैध परिवहन और डंपिंग नहीं रुकी, तो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी जनआंदोलन खड़ा करने के लिए बाध्य होगी। जनता के जीवन और स्वास्थ्य से खिलवाड़ किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।"

उन्होंने जिला प्रशासन, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पुलिस और संबंधित विभागों से समन्वित अभियान चलाकर फ्लाई ऐश माफियाओं को चिन्हित कर उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करने की मांग की।

सुंदरगढ़ जिला लंबे समय से प्रदूषण की मार झेल रहा है—ऐसे में फ्लाई ऐश का अनियंत्रित फैलाव एक और बड़ी चुनौती बन गया है। प्रशासन द्वारा 6 ट्रकों की जब्ती यह संकेत है कि अवैध कारोबार किस स्तर पर फल-फूल रहा था।

झारखंड में पत्ता चुनने गयी 18 वर्षिया फूलो आईडी विस्फोट में मृत , दो घायल

ब्लास्ट में १० फीट ऊपर उछली फूलो धनवार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

चाईबासा , झारखंड के सारंडा जंगल में एक बार फिर आईईडी ब्लास्ट हुआ है. इसमें एक युवती की मौत हो गयी है और १ अन्य महिलाएं घायल हुईं है. 18 साल की फूलो धनवार की मौत हो गयी. प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि विस्फोट के बाद फूलो का शरीर १० फुट ऊपर तक उड़ गया. इसके बाद वहां मौजूद लोगों में अफरा-तफरी मच गयी.

शुक्रवार दोपहर करीब १ बजे मनोहरपुर प्रखंड के जराइकेला थाना क्षेत्र के सारंडा जंगल में कोलबोंगा गांव के पास के लेबरागढ़ा जंगल में नक्सलियों द्वारा बिछाये गये आईईडी में ब्लास्ट हो गया. इस विस्फोट में कोलबोंगा गांव की फूलो धनवार की मौत हो गयी. ब्लास्ट में १ महिला घायल हुईं है. उन्हें देर शाम इलाज के लिए मनोहरपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया

घायल महिलाओं में कोलबोंगा गांव की बिरसी धनवार (३५) और सालमी कांडुलना (३१) शामिल हैं. सालमी लाइलोर पंचायत की मुखिया बिरसा कंडुलना की बहन है. उसे कई जगह गंभीर चोटें लगीं हैं. उसे प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया ठ घायलों और अन्य लोगों ने बताया कि गांव के दर्जन भर लोग रोज की तरह शुक्रवार सुबह 7 बजे जंगल से पत्ता चुनने गये थे. करीब १ बजे वे लोग घर लौट रहे थे.

विधायक डॉ अजय गुप्ता ने नया आम आदमी क्लीनिक बनाने का किया उद्घाटन: कहा, क्लिनिको की संख्या लगातार बढ़ाई जा रही

अमृतसर, 28 नवंबर (साहिल बेरी)

केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ अजय गुप्ता ने आज कटरा मोती राम आर्य समाज स्कूल के सामने नया आम आदमी क्लिनिक बनवाने का उद्घाटन किए। विधायक डॉ अजय गुप्ता ने कहा कि पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा लगातार आम आदमी क्लिनिको की संख्या बढ़ाई जा रही है। उन्होंने कहा कि पंजाब में 900 के करीब आम आदमी क्लिनिक की संख्या पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि अमृतसर जिले के कुल 74 से अधिक आम आदमी क्लीनिक चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लगातार लोगों तक पहुंचा रही है। उन्होंने कहा कि आम आदमी क्लीनिक में गर्भवती माताओं की जाँच, उपचार, दवाइयाँ, एंटी-रेबीज वैक्सीन, नियमित प्रबंधन और अन्य सभी बीमारियों का मुफ्त इलाज करवाया जाता है। इसके साथ-साथ क्लीनिक में टेस्ट भी मुफ्त किए जाते हैं।उन्होंने कहा कि प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोग इसका लाभ ले रहे हैं। इस अवसर पर मनदीप सिंह मोंगा, विशाल भट्टी, ऋषि कपूर, चरणजीत सिंह, अजय न्यूल, गुरदास सिंह और भारी संख्या में क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

वाटर ट्रीटमेंट प्लांट वल्ला में लगाया हैल्थ चैकअप और खूनदान कैंप

अमृतसर 28 नवंबर (साहिल बेरी)

निगम कमीश्नर बिक्रमजीत सिहं शेरगिल के दिशा-निर्देश अनुसार नगर निगम और लार्सन एंड टूब्रो कंपनी द्वारा श्री गुरू रामदास इंसटीटयूट ऑफ डेंटल साईंस एंड रिसर्च तथा अमृतसर मैडिकल कॉलेज के सहयोग से नगर निगम और लार्सन एंड टूब्रो कंपनी द्वारा अमृतसर बल्क वाटर स्पलाई स्कीम के तहत वल्ला में बनाए जा रहे वाटर ट्रीटमेंट प्लांट में कर्मचारियों और श्रमिकों के लिए डेंटल चैकअप, जर्नल हैल्थ चैकअप कैंप के साथ-साथ रक्तदान कैंप लगाया गया। जिसमें डा. लाविया कौर और डा. कंवलजीत कौर और उनकी टीम द्वारा कैंप में मौजूद लोगों के दातों की जांच और स्वास्थय की जांच के साथ-साथ बल्डप्रैशर और शूगर की भी जांच की गई। कैंप के दौरान सरकारी मैडीकल कॉलेज की टीम द्वार रक्तदान कैंप का भी आयोजन किया गया। इस मौके पर एक्सईन सुनील महाजन ने कहा की किसी भी प्रोजेक्ट को समय पर पूरा करने के लिए जरूरी है कि प्रोजेक्ट में काम करने वाले कर्मचारी स्वास्थ्य रहें। इसीलिए इस कैंप का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 100 लोगों के सवास्थय की जांच की गई और जरूरत के अनुसार दवाईयां भी दी गई और साथ ही लगभग 13 यूनिट रक्त इकट्ठा किया गया। उनके द्वारा कैंप में आए हुए डाक्टरों और मैडीकल टीम को धन्यवाद किया गया। इस मौके पर डा. सुमित अरोड़ा, कंनवर महाजन, सिमरनजीत सिहं, रणजीत सिहं, हरप्रीत सिहं, भरत चक्रवर्ती, हिमाशुं वालिया, बनाप्रिया, आदि भी उपस्थित थे।

आदर्श ग्रुप चिटफंड धोखाधड़ी मामला: ईडी ने दो लोगों के घरों पर छापेमारी की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कटक जिले के निश्चिंतकोइली इलाके के नटेकाई और रामकृष्णपुर में ED ने दो लोगों के घरों पर छापा मारा। एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट ने आज सुबह-सुबह नटेकाई ग्राम पंचायत के विजय राउत और रामकृष्णपुर पंचायत के जितेंद्र ओझा के घरों पर छापा मारा है। उनके घरों पर कई कागजों की जांच की गई है और पूछताछ की गई है।इसके बाद एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट जितेंद्र ओझा को अपने साथ ले गई। खबर है कि इस कंपनी के कई कर्मचारियों के घरों में कई जगहों पर जांच शुरू की गई है। इस तलाशी में दो टीमों के आठ अधिकारी शामिल रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ED आज भी CBI की 2014 की जांच के आधार पर जांच प्रक्रिया जारी रखे हुए है। आदर्श ग्रुप के हेड बताए जाने वाले विजय राउत को उस समय चिटफंड के पैसे में गड़बड़ी के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।

नरसिम्हा मिश्रा ने कांग्रेस पर अपना गुस्सा निकाला और आरोप लगाया कि वह उन्हें नज़रअंदाज़ कर रही है!

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कांग्रेस के सीनियर नेता नरसिंह मिश्रा का विस्फोटक बयान। नरसिंह मिश्रा ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस पार्टी उन्हें नज़रअंदाज़ कर रही है। पिछले आम चुनावों के बाद से उन्हें नज़रअंदाज़ किया जा रहा है और पार्टी के किसी भी कार्यक्रम में नहीं बुलाया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया है कि उन्हें फ़ोन कॉल भी नहीं आ रहे हैं।पहले कानून मंत्री, विपक्ष के नेता, कांग्रेस MLA और लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य होते थे। उस समय पार्टी उनसे ज़रूरी फ़ैसले लेती थी। लेकिन भक्त दास के PCC प्रेसिडेंट बनने के बाद पार्टी ने उनसे नहीं पूछा, नरसिम्हा ने कहा। पिछले नुआपाड़ा उपचुनाव में उन्हें नहीं बुलाया गया था। उन्होंने साफ़ किया कि वे पार्टी नहीं छोड़ेंगे।

बीजेपी को नकारात्मक नहीं विकास की राजनीति सिखनी चाहिए , डा0 इरफान अंसारी की नसीहत

झारखंड का भविष्य सुरक्षित हाथों मे है : मंत्री इरफान

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

राची,, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने प्रेस बयान जारी कर कहा है कि महागठबंधन सरकार और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने झारखंड में अब तक की सबसे बड़ी नियुक्ति प्रक्रिया पूरी कर राज्य के इतिहास में नया अध्याय लिखा है। सरकार के एक वर्ष पूरे होने पर मोरहाबादी मैदान, रांची में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री ने 8,792 नव-नियुक्त अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे। इसके साथ ही इस वर्ष 16,000 से अधिक युवाओं को सरकारी, जबकि 8,000 युवाओं को गैर-सरकारी क्षेत्र में रोजगार मिला है। मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने इसे ऐतिहासिक दिन बताते हुए कहा कि सरकार ने साबित कर दिया है कि झारखंड का भविष्य सुरक्षित हाथों में है। उन्होंने विपक्ष पर हमला करते हुए कहा कि बीजेपी को नकारात्मक राजनीति छोड़कर काम और विकास की राजनीति से सीख लेनी चाहिए। सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का भी सकारात्मक असर दिखा है। कई गरीब बेटियों ने बताया कि मंईयां सम्मान योजना की मदद से वे पढ़-लिखकर आज जेपीएससी पास कर सकीं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूती देने के लिए 22 डेंटल डॉक्टरों को भी नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर होंगी। स्थापना दिवस पर जनता का उत्साह रिकॉर्ड रहा और राज्य सरकार को व्यापक समर्थन मिला। यह अवसर झारखंड की प्रगति और युवा सशक्तिकरण का प्रतीक साबित हुआ।

करमजीत सिंह रिंटू ने मजीठा - वेरका बाईपास से सनसिटी तक प्रीमिक्स से सड़के बनवाने का किया उद्घाटन

अमृतसर, 28 नवंबर (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं उत्तरी विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू ने मजीठा - वेरका बाईपास से सनसिटी तक प्रीमिक्स से सड़के बनवाने का उद्घाटन किया। रिंटू ने कहा कि इस सड़क के निर्माण से गुरुद्वारा बाबा श्रीचंद, माता महाकाली मंदिर और 10 से अधिक कॉलोनियों के निवासियों को सुविधाए मिलेगी। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ने उनको उत्तरी विधानसभा क्षेत्र की सेवा करने का मौका दिया हुआ है। जिस पर वह क्षेत्र के लोगों की सेवा करने में जुटे हुए हैं। उन्होंने कहा कि उत्तरी विधानसभा के प्रत्येक क्षेत्र के विकास करवाने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही। उन्होंने कहा कि पिछले तीन महीनो में सड़के और गलियां बनवाने के कार्य लगातार जारी है।

रिंटू ने कहा कि उत्तरी विधानसभा क्षेत्र के निवासियों से किए गए हर वादे को समय पर पूरा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सड़कों का निर्माण आधुनिक तकनीक से सभी प्रकार के सर्वेक्षणों के बाद पूरा किया जा रहा है और सड़कें अत्यंत उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री से बनाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी सड़क अधूरी नहीं छोड़ी जाएगी। उन्होंने कहा कि उत्तरी क्षेत्र में विकास की रफ़्तार को रुकने नहीं दिया जाएगा और हर गली-मोहल्ले तक विकास पहुँचया जा रहा है।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर द्वारा शहर के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्य करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अपनी प्रत्येक स्कीम पर कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट द्वारा आने वाले दिनों में लगभग 54 करोड़ रुपयो के विकास कार्य शुरू करवाने जा रही है। जिससे मुख्य तौर पर रंजीत एवेन्यू का क्षेत्र उच्च स्तरीय नजर आने लगेगा। उन्होंने कहा कि लोगों के बीच जाकर उसकी समस्याओं को सुनकर उनका पहल के आधार पर हल भी करवाया जाता है। इस अवसर पर सीनियर डिप्टी मेयर प्रियंका शर्मा, आम आदमी पार्टी के वॉलिंटियर्स और भारी संख्या में क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद थे।

सरकार का कहना है कि महिलाओं पर अत्याचार कोई ज़रूरी मुद्दा नहीं है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य में रेप, गैंग रेप, सेक्सुअल हैरेसमेंट, हॉस्टल में नाबालिगों का प्रेग्नेंट होना और घर में हुए अत्याचार जैसे कई अत्याचार खतरनाक दर से फैल रहे हैं। स्थिति बहुत गंभीर हो गई है। यह बात जगजाहिर है कि सरकार, पुलिस और एडमिनिस्ट्रेशन को इस मुद्दे की बिल्कुल भी चिंता नहीं है, इसलिए कांग्रेस पार्टी की तरफ से कांग्रेस भवन में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को लेकर सरकार से कई मांगों को लेकर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की गई। इस कॉन्फ्रेंस में कांग्रेस की प्रवक्ता डॉ. मनीषा दास पटनायक और जयश्री पात्रा ने हिस्सा लिया और महिलाओं की इज्जत के प्रति सरकार के रवैये की कड़ी भाषा में आलोचना करते हुए कई मांगें रखीं।

प्रवक्ता डॉ. दास पटनायक ने कहा कि, ओडिशा में BJP सरकार के 17वें महीने में महिलाओं और नाबालिगों के खिलाफ अत्याचार, रेप, गैंग रेप और हिंसा में बहुत ज़्यादा बढ़ोतरी के बावजूद, ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी सरकार और एडमिनिस्ट्रेशन के पूरी तरह चुप और इनएक्टिव रहने की कड़ी निंदा करती है। सरकार ने महिला सुरक्षा के मुद्दे पर आंखें मूंद ली हैं। खोरधा बाघमारी में एक नाबालिग लड़की के साथ बेरहमी से गैंगरेप के बावजूद, अपराधी को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है, मलकानगिरी में 45 साल के आदमी द्वारा 5-7 साल की तीन नाबालिग लड़कियों के साथ अमानवीय बलात्कार की धीमी जांच, और कटक SCB मेडिकल कॉलेज के ICU में एक महिला के साथ दिल दहला देने वाला दुर्व्यवहार - ये सभी घटनाएं राज्य के कानून के शासन की अक्षमता, लापरवाही और टूटने को साफ तौर पर दिखाती हैं। पुरी, क्योंझर, मयूरभंज, संबलपुर, गोपालपुर और रायगडा में लगभग हर हफ्ते महिलाओं के खिलाफ हिंसा की नई घटनाएं होने के बावजूद, सरकार कोई सख्त कार्रवाई नहीं कर रही है। ऐसे में, ओडिशा प्रदेश महिला कांग्रेस तुरंत फास्ट-ट्रैक ट्रायल, एक विशेष महिला जांच टीम बनाने, जिम्मेदार पुलिस अधिकारी के खिलाफ सख्त कार्रवाई और पीड़ितों को सुरक्षा-परामर्श-कानूनी मदद देने की मांग कर रही है। इस गंभीर स्थिति में, डॉ. दास पटनायक ने फिर कहा कि महिलाओं की सुरक्षा राजनीति का विषय नहीं है, यह सरकार का मूल कर्तव्य है; अगर ऐसी ही निष्क्रियता जारी रही, तो ओडिशा की महिलाएं कभी चुप नहीं रहेंगी और सड़कों पर लड़ाई जारी रहेगी, उन्होंने कहा। सम्मेलन की प्रवक्ताओं में से एक, श्रीमती पात्रा ने कहा, खोरदा जिले के बाघमारी इलाके में एक दलित नाबालिग लड़की के साथ गैंगरेप हुआ, मलकानगिरी में 3 बच्चों के साथ रेप हुआ, नीमापारा में एक नाबालिग लड़की लापता हो गई, राज्य में क्या चल रहा है, श्रीमती जयश्री पात्रा ने पूछा। डबल इंजन सरकार में, महिलाएं दोगुनी असुरक्षित हैं। 17 महीने की सरकार में, 10,000 महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार हुआ, 3,377 महिलाओं को दहेज के लिए प्रताड़ित किया गया, 2,465 महिलाओं ने आत्महत्या की, 3,178 महिलाओं को किडनैप किया गया, और 10 महीनों में 2,44 की हत्या कर दी गई। उन्होंने पूछा कि अच्छे शासन का ₹दिंडिम₹ कैसे पीटा जा रहा है। ₹बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ₹ एक सफ़ेद झूठ है, पर्दे के पीछे सच छिपाने की कोशिश है। राज्य में महिला डिप्टी चीफ़ मिनिस्टर और महिला स्पीकर होने के बावजूद, महिलाओं की सुरक्षा के लिए कोई तैयारी नहीं है, न ही लोगों की सरकार में कोई एक्शन या ईमानदारी है। खोरधा इलाके के MLA ने भुवनेश्वर के MPs की ऐसी घटनाओं में शामिल न होने और खाकी वर्दी नेताओं की असंवेदनशीलता की आलोचना की है। आम लोगों को कौन पूछ रहा है, स्पोक्सपर्सन, श्रीमती जयश्री पात्रा ने पूछा। खाकी वर्दी की तैयारी और एक्शन की कमी के कारण महिलाएं ज़्यादा परेशान और असुरक्षित हैं। पीड़िता की मां ने कहा कि यह बहुत निंदनीय है कि पुलिस मुख्य आरोपी को केस से बरी करने के लिए दबाव डाल रही है।

हाईवे से लेकर असेंबली तक, महिलाएं अपनी सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों के लिए लड़ेंगी और मज़बूत होंगी, सरकार को चेतावनी दी, श्रीमती पात्रा।

FICCI FLO अमृतसर का "डिकोड योर डेस्टिनी" कार्यक्रम, जीवन संतुलन और सेवा का मिला संदेश

अमृतसर, 28 नवंबर (साहिल बेरी)

FICCI FLO अमृतसर की ओर से ताज स्वरना में शुक्रवार को "डिकोड योर डेस्टिनी" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता चेयरपर्सन मोना सिंह ने की। इसमें मशहूर ज्योतिष, वास्तु और वेलनेस विशेषज्ञ डॉ. जय मदान ने विशेष सत्र लिया। करीब 200 सदस्यों की उपस्थिति के साथ यह कार्यक्रम आत्म-विकास और सकारात्मक सोच को समझने का एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हुआ।

कार्यक्रम के दौरान एक पैनल चर्चा भी हुई, जिसमें मोना सिंह, डॉ. जय मदान और डर्मेटोलॉजिस्ट एवं एस्थेटिक विशेषज्ञ डॉ. जसलीन ने भाग लिया। चर्चा में भावनात्मक संतुलन, अंतर-ज्ञान की भूमिका और रोज़मर्रा के जीवन पर प्रभाव डालने वाली सूक्ष्म ऊर्जा पर विस्तार से बात की गई। विशेषज्ञों ने बताया कि ऊर्जाओं का सही संतुलन व्यक्ति के व्यवहार और निर्णयों को कैसे दिशा देता है।

शाम का मुख्य आकर्षण डॉ. जय मदान का स्वतंत्र सत्र रहा। उन्होंने सदस्यों को समझाया कि मन और वातावरण की हल्की ऊर्जा गड़बड़ी के कारण कई बार बेचैनी क्यों महसूस होती है। उन्होंने छोटे-छोटे सुधारात्मक कदमों के माध्यम से जीवन में संतुलन लाने के सरल उपाय भी साझा किए। प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक जीवनशैली से जोड़ते हुए उनके विचारों ने उपस्थित दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

इस अवसर पर FICCI FLO अमृतसर ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए वंचित परिवारों की स्कूली बालिकाओं को 15 साइकिलें भेंट कीं। यह पहल मुकुल माधव फाउंडेशन और फिनोलेक्स के सहयोग से संभव हुई। संगठन ने राष्ट्रीय पहल प्रमुख श्रीमती रितु छाबड़िया का निरंतर सहयोग के लिए धन्यवाद भी किया। कार्यक्रम ने व्यक्तिगत प्रगति और सामाजिक सरोकार दोनों को मजबूत करने का संदेश दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023